हिन्दी साहित्य की अंतर्कथाएँ

●

भोलानाथ तिवारी

कि ता ब म ह ल इ ला हा बा द

प्रथम संस्करण, १९५३

यह पुस्तक

अन्य साहित्यों की भाँति हिन्दी में भी अंतर्कथाओं का प्रयोग प्रचुर मात्रा में मिलता है। विशेषतः प्राचीन साहित्य तो अंतर्कथाओं से भरा पड़ा है। उसके अध्ययन में स्थल-स्थल पर अंतर्कथाओं की आवश्यकता पड़ती है। हिन्दी नीति-साहित्य का अध्ययन तो अंतर्कथाओं की जानकारी के विना यदि असम्भव कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। इस प्रकार अंतर्कथाओं का साहित्य के विद्यार्थियों के लिए कितना अधिक महत्त्व है, कहने की आवश्यकता नहीं।

अंतर्कथाओं की ओर मेरा ध्यान रिसर्च के सम्बन्ध में नीति साहित्य का अध्ययन करते समय गया। मैंने अनुभव किया कि अंतर्कथाओं का कोई संग्रह न होने से साहित्य के प्रेमियों और विद्यार्थियों को वहुत कठिनाई होती होगी। यह तो सम्भव है नहीं कि प्रत्येक व्यक्ति अपने साथ 'नाना पुराण और निगमागम' रक्खे और आवश्यकता पड़ने पर उनके पन्ने उलटता फिरे। इस अनुभव के वाद से ही मैंने अंतर्कथाओं के संग्रह का कार्य शुरू कर दिया और आज भी यह कार्य चल रहा है। यदि संभव हो सका तो दो-एक वर्ष में अंतर्कथाओं का एक वृहद् संग्रह हिंदी-संसार के समक्ष रखने का प्रयास करूँगा।

अव तक के कार्य के आधार पर मेरा अनुमान है कि हिन्दी की छोटी-वड़ी सभी अंतर्कथाओं को संगृहीत किया जाय तो उनकी संख्या एक हज़ार से कम न होगी और यदि न्यास करना हो तो उनके लिए प्रायः ७०० पृष्ठ अपेक्षित होंगे। प्रस्तुत पुस्तिका में मैंने अपने अव तक के संग्रह से हिन्दी साहित्य, विशेषतः काव्य में अधिक प्रयुक्त और आवश्यक प्रायः साढ़े चार सौ से कुछ अधिक अंतर्कथाओं को संक्षेप में रक्खा है। पुस्तक

अंतर्कथा

साहित्य विशेषतः काव्य में कभी-कभी उदाहरण के लिये, या यों भी प्रसंगतः किसी पुरानी प्रसिद्धि या कथा की ओर संकेत कर दिया जाता है। इस प्रकार के संकेतों को 'अंतर्कथा' कहते हैं। ये कथायें प्रसंगतः या संदर्भतः प्रयुक्त होने के कारण संदर्भ कथा या प्रसंग कथा भी कहलाती हैं। रहीम ने लिखा है—

रहिमन याचकता गहे बड़े छोट ह्वै जात।
नारायण हूँ को भयो बावन आँगुर गात।

इसमें बलि-बावन की अंतर्कथा है। या तुलसी ने मानस में लिखा है—

गौतम तिय गति सुरति करि नहिं परसत पग पानि।

यहाँ गौतम पत्नी 'अहल्या' की अंतर्कथा है। इस प्रकार की अंतर्कथाएँ हिंदी में भरी पड़ी हैं।

हिंदी में प्रचलित अंतर्कथाओं को प्रमुखतः दो भागों में रक्खा जा सकता है। पहला वर्ग तो उन अंतर्कथाओं का है जो पूर्णतः पौराणिक हैं जैसे बावन, अहिल्या, हिरण्यकश्यप, शैतान या आदम आदि। दूसरे वर्ग की अंतर्कथाएँ वे हैं जो पौराणिक न होकर ऐतिहासिक हैं पर जन-कल्पना ने उनके चारों ओर पौराणिकता के ताने-बाने से चमत्कारपूर्ण घटनाएँ बुन दी हैं और इस प्रकार ऐतिहासिक होते हुए भी उनके जीवन के कुछ भाग पौराणिक हो गये हैं। उदाहरणतः तुलसी तथा मुहम्मद आदि। अंतर्कथाएँ इन दोनों के अतिरिक्त शुद्ध ऐतिहासिक भी हो सकती हैं पर ऐसी अंतर्कथाओं का प्रयोग प्रायः नहीं मिलता। इसी कारण इस पुस्तक में कुछ अपवादों को छोड़कर केवल उपर्युक्त दो प्रकार की अंतर्कथाओं को ही स्थान दिया गया है।

अंतर्कथाओं के इन दो वर्गों को भी आगे दो-दो उपवर्गों में रक्खा जा सकता है। किसी अन्य अधिक वैज्ञानिक नाम के अभाव में इन उपवर्गों को हिंदू उपवर्ग तथा अहिंदू या मुसलमान उपवर्ग की संज्ञा दी जा सकती है। ऊपर दिये गये उदाहरणों में प्रथम वर्ग के यदि प्रथम तीन नाम

अंतर्कथाओं की वर्णानुक्रमिक सूची

हिन्दी साहित्य की अंतर्कथाएँ

अंगद—राम की वानरी सेना का एक प्रधान वीर। यह वालि का पुत्र था। इसकी माता देव कन्या तारा थीं। वालि को मारने के पश्चात् राम ने अंगद को ही युवराज बनाया। अंगद ने अपनी वीरता का परिचय लंका में एक दिन इन्द्रजीत को हरा कर दिया था। एक समय राम ने अंगद की रक्षा भी की थी।

अंगिरा—पुराणों के अनुसार ब्रह्मा के मानस पुत्र। ये एक प्रतापी ब्रह्मर्षि थे। एक बार अग्नि का भी तेज इनके तेज के समक्ष धूमिल पड़ गया था और उस समय अग्नि ने जल में स्थान लिया था, पर बाद में अंगिरा के ही अनुरोध पर अग्नि ने पुनः अपना पूर्व तेज प्राप्त किया। अंगिरा की स्मृति, श्रद्धा, स्वधा तथा सती आदि कई स्त्रियाँ थीं जिनसे उतथ्य, बृहस्पति तथा मारकंडेय—ये तीन पुत्र तथा रिचा नाम की पुत्री उत्पन्न हुई थी।

अंजना—केशरी नाम के बंदर की स्त्री और हनुमान की माता। यह एकमत से कुंजर नाम के बंदर की पुत्री थी और दूसरे मत से गौतम की। हनुमान के जन्म के लिए इसे 'पवन' या 'वायु' को पति रूप में स्वीकार करना पड़ा था। इस प्रकार अंजनापुत्र हनुमान पवन के औरस और केशरी के क्षेत्रज पुत्र थे। अंजना को अंजनी भी कहते हैं।

अंध—एक अंधे वैश्य संन्यासी जो अपनी पत्नी तथा पुत्र के साथ जंगल में रहते थे। इनके इकलौते पुत्र श्रमणकुमार को महा-

राजा दशरथ ने शिकार के भ्रम में मार दिया था और उसी शोक में अंध ऋषि ने अग्नि में जलकर (कुछ मतों से यों ही) अपना प्राण दे दिया। साथ ही इन्होंने दशरथ को एक शाप भी दिया कि 'तुम्हें भी पुत्र शोक में ही मरना पड़ेगा।' दे॰ 'श्रमण कुमार' तथा 'दशरथ'।

अंधक—एक दैत्य। यह दिति के गर्भ से कश्यप का औरस पुत्र था। जब देवताओं ने दिति के सभी पुत्रों को मार डाला तो दिति ने देवों और कश्यप से प्रार्थना कर अंधक नाम के अवध्य पुत्र की प्राप्ति की। इसके दो हजार हाथ और पैर, दो हज़ार आँखें और एक हज़ार सिर थे। अंधा न होने पर भी झूम-झूमकर अंधों की तरह चलने के कारण इसका नाम अंधक था। इसके मरने के विषय में कई प्रकार की गाथाएँ प्रसिद्ध हैं। हरिवंश के अनुसार मंदर पर्वत पर इसे शिव ने मारा था। एक अन्य मत से स्वर्ग से पारिजात लाते समय शिव द्वारा इसका वध किया गया था। इसी को मारने के कारण शिव का नाम 'अंधकारी' आदि है।

अंबरीष—अयोध्या का एक सूर्यवंशी राजा जो इक्ष्वाकु से २८वीं पीढ़ी में हुआ था। रामायण में इसे प्रशुश्रक का पुत्र कहा गया है पर हरिवंश, भागवत और महाभारत में नाभाग का। अंबरीष की अगाध भक्ति से प्रसन्न होकर विष्णु ने इसकी और इसके राज्य की रक्षा के लिए अपने चक्र को आज्ञा दे रक्खी थी।

एक बार अंबरीष एकादशी व्रत रहने के पश्चात् द्वादशी को पारण करने जा रहे थे पर बीच में ही दुर्वासा ऋषि ८८ हज़ार ऋषियों के साथ वहाँ आ पहुँचे। अंबरीष ने भोजन के लिए प्रार्थना की पर दुर्वासा अपने साथियों के साथ यह कहकर चले गए कि हम लोग स्नान करने जा रहे हैं और वहाँ से लौटकर भोजन करेंगे। संयोग से उस दिन द्वादशी की तिथि बहुत थोड़ी देर के लिए थी। दुर्वासा की प्रतीक्षा करते-करते समय समाप्त हो चला और

केवल एक क्षण द्वादशी शेष रह गई। अंबरीष बहुत घबराया क्योंकि द्वादशी तिथि में पारण न करने पर दोष लगता है। उधर ब्राह्मण को खिलाने का वादा कर चुका था अतः खाने की हिम्मत भी न पड़ती थी। अन्त में ब्राह्मणों की राय से उसने थोड़ा सा चरणामृत पान किया। ज्यों ही द्वादशी तिथि समाप्त हुई दुर्वासा ऋषि आ पहुँचे। आते ही उन्होंने पूछा कि तिथि तो बीत गई और आपने पारण नहीं किया, अतः पाप के भागी हुए। अंबरीष ने चरणामृत पी लेने की बात बतलाई। सुनते ही दुर्वासा बहुत क्रोधित हुए और उन्होंने भोजन करने से इनकार कर दिया। इतना ही नहीं, उन्होंने अपनी जटा का एक बाल तोड़कर पृथ्वी पर पटका जो कृत्या बनी और कृत्या राजा को मारने दौड़ी। राजा की रक्षा के लिए तो विष्णु का चक्र था ही उसने कृत्या को नष्ट कर दिया और दुर्वासा को मारने चला। इस पर दुर्वासा बहुत भयभीत हुए। वे अपनी रक्षा के लिए क्रम से ब्रह्मा, महेश और विष्णु के यहाँ गए, पर कोई उनकी सहायता न कर सका। अन्त में विष्णु के कहने से अंबरीष के यहाँ आए और अंबरीष ही ने चक्र से उनका पीछा छुड़ाया। दुर्वासा ने प्रसन्न होकर भोजन किया और अंबरीष की प्रशंसा करते अपने आश्रम पर चले गए।

अंबरीष बड़ा पराक्रमी था और इसने १० लाख राजाओं को हराया था।

दुर्वासा के अतिरिक्त नारद के साथ भी इसकी एक कथा बड़ी मनोरंजक है। अंबरीष की एक सुन्दरी नाम की अत्यन्त सुन्दरी पुत्री थी। एक बार नारद और पर्वत ऋषि अंबरीष के घर पधारे और सुंदरी के सौन्दर्य पर मोहित हो गए। सुंदरी के स्वयंवर के समय दोनों ऋषि बारी-बारी से विष्णु के यहाँ गए और एक दूसरे को बंदर के मुँह का कर देने के लिए प्रार्थना की। विष्णु ने दोनों की प्रार्थनाएँ

मान लीं और स्वयंवर के समय स्वयं भी गए। सुंदरी ने दोनों ऋषियों की ओर बंदर सा मुँह होने के कारण देखा भी नहीं और विष्णु के गले में माला डाल दी। इस पर दोनों ऋषि अंबरीष पर बहुत क्रुद्ध हुए और उन लोगों ने उसे अंधकार से ढक जाने का शाप दिया। यहाँ भी विष्णु के चक्र ने अंबरीष की रक्षा की तथा दुर्वासा की भाँति ही नारद तथा पर्वत मुनि को ब्रह्मा, महेश और विष्णु के यहाँ से होते हुए अंबरीष के पास आना पड़ा। अंबरीष ने दयाकर चक्र से उन दोनों का पीछा छुड़ाया।

अम्बा—काशिराज इंद्रद्युम्न की सबसे बड़ी पुत्री, जिसे भीष्म हर लाए थे। यह भीष्म से ब्याह करना चाहती थी परन्तु उन्होंने स्वीकार नहीं किया इस पर उसे क्रोध आया और वह जंगल में चली गई। वहां उसने शिव को भक्ति द्वारा प्रसन्न किया और शिव की कृपा से ही दूसरे जन्म में शिखंडी का रूप धारण करके उसने भीष्म का वध किया था। एक अन्य मत से अंबा को भीष्म अपने भाई विचित्रवीर्य के लिए लाये थे पर इसने शाल्व से विवाह करना चाहा। यह जान भीष्म ने इसे शाल्व के पास भेज दिया पर शाल्व ने यह कहकर कि तुम्हारा हरण हो चुका है विवाह नहीं किया। इस पर अंबा भीष्म पर रुष्ट हुई और शिव को प्रसन्न कर बदला लिया। दे० 'भीष्म' 'शिखंडी'।

अम्बालिका—काशिराज इंद्रद्युम्न की कनिष्ठ पुत्री और विचित्रवीर्य की पत्नी। पाण्डु का जन्म इसी के गर्भ से विचित्रवीर्य के मरने पर व्यास के नियोग द्वारा हुआ था। नियोग के समय में भय से यह पीली हो गई थी, इसी कारण पाण्डु पीले पैदा हुए। वन में कठोर तपस्या से इसने अपना प्राण त्यागा। दे० 'विचित्रवीर्य' 'पाण्डु' 'व्यास'।

अम्बिका—काशिराज इंद्रद्युम्न की मझली कन्या और विचित्र-

वीर्य की पत्नी। पति के मरने के बाद व्यास के नियोग द्वारा इनके गर्भ से धृतराष्ट्र पैदा हुए। कहते हैं, लज्जा के कारण नियोग के समय इसकी आँखें बन्द हो गई थीं। इसी कारण धृतराष्ट्र जन्मांध पैदा हुए। दे० 'धृतराष्ट्र' 'व्यास' 'विचित्रवीर्य'।

अंशुमान—राजा सगर के पौत्र और असमंजस के पुत्र। महाराज सगर के अश्वमेध के घोड़े को पाताल से अंशुमान ही पृथ्वी पर लाए थे। साथ ही कपिल द्वारा भस्मीभूत सगर के साठ सहस्र पुत्रों के अवशेष का भी पता इन्होंने ही लगाया और गरुड़ से उन्हें मुक्त करने की युक्ति भी ज्ञात की थी। महाराज दिलीप इनके पुत्र थे। दे० 'सगर' 'गंगा'।

अकंपन—रावण का एक वीर सेनानायक और संबंध में मामा। इसके माता-पिता सुमाली और केतुमाली थे। यह राम-रावण युद्ध में हनुमान द्वारा मारा गया। इसकी दो बहनें तथा दो भाई क्रमशः केकसी (रावण की माता) और कुंभीनसी एवं प्रहस्त और धूम्राक्ष थे।

अक्रूर—श्वफल्क और गाँदिनी के पुत्र तथा कृष्ण के चचा। इन्हीं की राय से सत्राजित को मारकर शतधन्वा ने स्यमंतक मणि ले ली थी। यह मणि इनके भी हाथ में आई थी, इसी कारण अक्रूर का रहना प्रत्येक स्थान पर शुभप्रद सिद्ध होता था। कंस ने इन्हें कृष्ण तथा बलराम को लाने के लिये भेजा था। लाते समय इन्होंने कृष्ण से इन लोगों को बुलाने का रहस्य खोल दिया था।

अक्षय कुमार—रावण का एक पुत्र। सीता की खोज में जाने पर हनुमान ने अशोक वाटिका का संहार करते समय इसका वध किया था।

अगस्त्य—मित्रा वरुण के पुत्र एक प्रसिद्ध ऋषि। इन्होंने विन्ध्याचल के मद का नाश किया था। इनका जन्म उर्वशी को

देखने पर मित्रावरुण के वीर्यस्खलन स्वरूप एक घड़े से हुआ था। इसी कारण इनका नाम 'कुंभज' आदि भी है। पितृपक्ष से वशिष्ठ इनके भाई थे। असुरों के संहार के लिए इन्होंने देवों की प्रार्थना पर समुद्र का पान किया था, जहाँ असुर युद्ध में हार कर छिपे हुए थे। एक बार इनके पिता बड़े कष्ट में थे और उन्होंने इन्हें आज्ञा दी कि विवाह करो जिससे पुत्र उत्पन्न होकर हमारे कष्टों का निवारण करे। पितरों की आज्ञा मान अगस्त्य ने विवाह के लिए उचित कन्या न पाकर स्वयं एक कन्या की सृष्टि की जिसे विदर्भ-राज ने पाला पोसा और उसका नाम लोप-मुद्रा रक्खा। वयस्क होने पर उससे अगस्त्य ने विवाह किया और प्रह्लाद के वंशज इल्वल से धन प्राप्त कर उसके लिए आभूषण आदि बनवाए। वनवास के समय रामचंद्र इनके आश्रम में गए थे। महर्षि नहुष ने इन्द्रत्व पाकर अगस्त्य को अपनी पालकी ढोने के लिए लगाया था और इन्हें एक लात भी मारी, जिससे क्रोधित होकर अगस्त्य ने उन्हें शाप दिया। दे० 'नहुष' 'लोपामुद्रा' 'विंध्याचल'।

अग्नि—एक प्रधान वैदिक देवता। इनकी उत्पत्ति कहीं तो परमात्मा के मुख से, कहीं धर्म के औरस पुत्र रूप में और कहीं वसुभार्या के गर्भ से होनी लिखी है। दस दिग्पालों में ये भी एक हैं और इनका स्थान दक्षिण-पूर्व का कोण है। अग्नि की शादी कश्यप की कन्या स्वाहा से हुई थी। इनके तीन पुत्र और ४५ पौत्र हैं। इन सबको मिलाकर ४९ अग्नि कहे गए हैं। इनका वाहन छाग या भेड़ा है और अस्त्र शक्ति एवं अक्ष सूत्र। दे० 'शिवि' 'शिव'।

अघासुर—प्रसिद्ध असुर बकासुर का अनुज और कंस का सेनापति। इसी की ज्येष्ठ बहन पूतना थी जिसने कृष्ण को मारने का प्रयत्न किया था। श्रीकृष्ण तथा ग्वाले जब गायों के चराने में थे तब यह अपना मुँह फैलाए बैठा रहता था। एक दिन सभी

इसके मुँह में चले गए, साथ-साथ कृष्ण भी। परन्तु कृष्ण ने अपना विराट रूप धारण किया और इस प्रकार पेट फट जाने से इसकी मृत्यु हो गई।

अज—एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा जो रामचंद्र के पितामह तथा दशरथ के पिता थे। रघुवंश आदि में अज को रघु का पुत्र माना गया है, पर कुछ अन्य स्थलों पर रघु के पुत्र दिलीप का इन्हें पुत्र कहा गया है। वाल्मीकि रामायण में ये नाभाग के पुत्र माने गए हैं। इनकी स्त्री इंदुमती विदर्भराज की कन्या थीं जिसने इन्हें स्वयंवर में चुना था।

रघुवंश के अनुसार जब अज इंदुमती के स्वयंवर में जा रहे थे रास्ते में एक पागल हाथी मिला। उससे परेशान होकर अज ने उसे मार डालने की आज्ञा दी। जब हाथी मारा गया तो उसके शरीर से एक सुन्दर गंधर्व निकला। गंधर्व ने बतलाया कि किसी मुनि के श्राप से वह पागल हाथी हो गया था। बाद में गंधर्व ने अज को कुछ बाण दिए जिनसे अज स्वयंवर में विजयी हुए।

अजगव—भगवान शिव का धनुष, जो महाराज पृथु के जन्म के समय आकाश से गिरा था। इसके साथ एक राजछत्र तथा दैवी बाण भी थे। इसके अन्य नाम पिनाक या आजगव भी हैं।

अजामिल—यह जाति का ब्राह्मण था परन्तु स्वभाव का बड़ा बुरा था। इसने अपनी स्त्री का परित्याग कर परस्त्री से संबंध स्थापित किया था। यह मद्यप भी था। एक बार किसी ने परिहास के लिए इसके यहाँ कुछ साधु भेज दिए जिनके कहने से इसने अपनी रखेली से उत्पन्न पुत्र का नाम 'नारायण' रक्खा। जब वह मृत्यु-शैया पर पड़ा तथा यमदूतों का भय उसे सताने लगा तो उसने अपने पुत्र 'नारायण' को पुकारा पर इस पुकारने को सुन स्वयं नारायण भगवान प्रसन्न होकर वहाँ आ गए और यमदूतों को

उनके दूतों ने मार भगाया। इस प्रकार अजामिल नरक जाने से बच गया। भागवत के अनुसार मरते समय विष्णु के दूतों और यम के दूतों की बातें सुनकर इसे ज्ञान हो गया था।

अजीगर्त—ऐतरेय ब्राह्मण में इसका नाम एक लोभी ब्राह्मण के रूप में मिलता है। इसके शुन:पुच्छ, शुन:शेप और शुनो-लांगूल नाम के तीन पुत्र थे। इसने रुपये के लोभ से न केवल शुन:शेप को बलिदान के लिए बेंचा था अपितु १०० गायों के लोभ से बलिदानकर्त्ता के भाग जाने पर उसे अपने हाथ से मारने को भी तैयार हो गया था। दे० 'हरिश्चंद' 'शुन:शेप'।

अतिकाय—रावण का एक दीर्घकाय और वीर पुत्र। ब्रह्मा ने प्रसन्न होकर इसे एक कवच दी थी जिसके प्रभाव से यह किसी को कुछ न समझता था। अतिकाय लंका के युद्ध में लक्ष्मण के साथ लड़ता हुआ मारा गया।

अत्रि—एक ऋषि जो बहुत सी वैदिक ऋचाओं के द्रष्टा हैं। अग्नि, इंद्र, तथा विश्वेदेव की प्रार्थनाओं में विशेषतः इनका नाम मिलता है। महाकाव्यों के काल में अत्रि दस प्रजापतियों में माने जाते रहे हैं, जिन्होंने सृष्टि-रचना की। बाद में ये ब्रह्मा के मानस-पुत्र के रूप में भी प्रसिद्ध रहे।

अत्रि के जन्म के विषय में कहा जाता है कि ये ब्रह्मा की आँख से उत्पन्न हुए थे। शंकर ने एक बार क्रुद्ध होकर इन्हें भस्म कर दिया तो ब्रह्मा ने फिर इनको अग्निभाग उत्पन्न किया। दूसरे मत से सृष्टिकर्त्ता के शरीर के दो खंड हुए जिससे मनु का जन्म हुआ और मनु से दस प्रजापति हुए जिनमें अत्रि भी थे। तीसरे मत के अनुसार ब्रह्मा ने आरंभ में सप्तर्षियों को उत्पन्न किया जिनमें अत्रि भी थे। चौथे मत से अत्रि ब्रह्मा के मानसपुत्र थे और ठीक

उन्हीं की तरह थे। ब्रह्मांड पुराण के अनुसार ये ब्रह्मा के तीसरे पुत्र थे, इसी कारण इनका नाम अत्रि था।

अत्रि ने ब्रह्मा की आज्ञा से अनेक ऋषिओं की सृष्टि की। एक बार राहु के आक्रमण से सूर्य पृथ्वी पर गिर रहे थे तो अत्रि ने अपनी तपस्या के प्रभाव से पतनोन्मुख सूर्य को आकाश में रोका। तभी से ही इनका एक नाम प्रभाकर पड़ा।

इनका विवाह अनसूया से हुआ था। इनकी शतवर्षी तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा, विष्णु और महेश इनके यहाँ पुत्ररूप में पैदा हुए थे, जिनके क्रम से नाम चन्द्रमा (सोम), दत्तात्रेय तथा दुर्वासा थे। इनके दो और पुत्र बतलाए जाते हैं। ब्रह्मांड पुराण के अनुसार अत्रि की भद्रा, शुद्रा, मद्रा, शलदा, मलदा, वेला आदि १० स्त्रियाँ थीं जिनसे अवला नाम की कन्या तथा अकल्मप नामक पुत्र का उल्लेख मिलता है। इनके शांखायन आदि और पुत्रों के (प्रयाग में भी) भी नाम मिलते हैं।

अत्रि का आश्रम चित्रकूट के समीप बतलाया जाता है। राम, वनवास के समय, इनके आश्रम में गए थे जहाँ अनसूया ने सीता को उपदेश दिया था। दे० 'अनसूया'।

अदिति—ऋग्वेद की प्रसिद्ध देवी और देवताओं की माता। ये दक्ष की पुत्री दिति (दैत्यों की माता) की छोटी बहन तथा कश्यप की पत्नी थीं। विष्णु का वामनावतार इन्हीं के गर्भ से हुआ था। कुछ ब्राह्मणों के अनुसार अदिति विष्णु की पत्नी थीं। कृष्ण की माता देवकी को अदिति का अवतार कहा जाता है। सात आदित्य (जिनकी संख्या बाद में १२ हो गई) अदिति के ही पुत्र हैं और इन्हीं के नाम पर उन्हें 'आदित्य' कहा जाता है।

अधिरथ—जन्म से क्षत्रिय परन्तु वृत्ति से सूत। इसकी पत्नी

राधा थी जिसने कर्ण को पाला था। अधिरथ धृतराष्ट्र का सारथी था। इसके नाम के आधार पर कर्ण को अधिरथ-सुत कहते हैं। दे० 'कर्ण'।

अनसूया—महर्षि अत्रि की पत्नी। ये अत्यन्त विदुषी तथा भक्त नारी थीं। राम तथा सीता अत्रि-अनसूया के पास वनवास के समय गए थे। अत्रि-अनसूया का आश्रम प्रयाग में कहा जाता है जिसमें इनके नाम पर एक मुहल्ला 'अतरसुइया' है। दुर्वासा ऋषि अनसूया के पुत्र थे।

अनिरुद्ध—प्रद्युम्न के पुत्र तथा श्रीकृष्ण के पौत्र। पुराणों में दैत्यराज बाण की कन्या ऊषा से इनका ब्याह होना लिखा है, जो गंधर्व विवाह था। ऊषा के पिता बाणासुर तथा अनिरुद्ध में खूब युद्ध हुआ और अंत में कृष्ण बलराम तथा प्रद्युम्न की सहायता से अनिरुद्ध विजयी हुआ। ये इतने वीर थे कि कोई इन्हें रुद्ध नहीं कर सकता था, इसी कारण इनका नाम 'अनिरुद्ध' था। दे० 'ऊषा' 'बाणासुर'।

अप्सरा—स्वर्ग की प्रसिद्ध सुन्दरी वेश्याएँ जो एक मत से कश्यप मुनि की कन्याएँ हैं। इनके दो भेद हैं। १—लौकिक तथा २—दैविक, जो क्रमशः तीन तथा दस हैं। एक मत से इनका उद्भव समुद्र-मंथन में जल से हुआ था, अतः अप्सरा कही जाती हैं। जब इनको सुर या असुर कोई वर्ग भी अपनी पत्नी न बना सका तो ये सभी के लिए प्रयोगनीय हो गईं।

इनका स्थान इन्द्रलोक कहा गया है। प्रसिद्ध अप्सराएँ उर्वशी, रंभा, मेनका तथा तिलोत्तमा आदि हैं। दे० 'समुद्र मंथन'।

अबुलफ़ज़ल—शेख मुबारक के बेटा। ये इस्लाम धर्म के [illegible] में और मुहम्मद साहब से अक्सर लड़ा करते थे।

इन्हीं के साथियों के विरोध के कारण मुहम्मद साहब को मक्का छोड़ना पड़ा था।

अबूबक्र—इसलाम धर्म के प्रथम ख़लीफ़ा। ये अबकोहाफा के पुत्र थे। इन्होंने मुहम्मद साहब की पैगंबरियत सर्वप्रथम स्वीकार की। ये मुहम्मद साहब के साथ एक गढ़े में रहे थे जहाँ इन्हें साँप ने काट लिया था पर मुहम्मद साहब के थूक लगाने पर ठीक हो गए। गढ़े में साथ देने से इन्हें 'यारग़ार' भी कहते हैं। अबूबक्र की लड़की आयशा मुहम्मद साहब की स्त्री थीं। मुहम्मद साहब का इन्हें प्रथम मित्र (यार) भी कहा जाता है।

अभिमन्यु—(सं०) अर्जुन तथा सुभद्रा के पुत्र तथा कृष्ण के भांजे। अभिमन्यु जब गर्भ में थे तो एक दिन अर्जुन सुभद्रा को चक्रव्यूह की रचना तथा प्रवेश आदि के विषय में बतला रहे थे। वे चक्रव्यूह से निकलना बतलाना ही चाहते थे कि किसी काम से कहीं चला जाना पड़ा और इसी बीच में अभिमन्यु पैदा हो गए। इस प्रकार ग़र्भ से ही अभिमन्यु ने चक्रव्यूह में प्रवेश करना सीख लिया था।

महाभारत के युद्ध के समय अभिमन्यु की अवस्था केवल १६ वर्ष की थी। एक दिन नारायणी सेना के साथ लड़ते अर्जुन दूर चले गए थे और इधर द्रोणाचार्य ने व्यूह-रचना कर दी। अपने पक्ष की अप्रतिष्ठा होते देख भीम के साथ अभिमन्यु चले। प्रवेश करना तो ये जानते थे अतः भीतर चले गए पर भीम न जा सके। भीतर पहुँच कर अभिमन्यु ने दुर्योधन के भ्राता वृन्दारक, कोशल के राजा बृहद्बल, दुःशासन-पुत्र उलूक तथा मगध-राजकुमार श्वेतकेतु आदि को मारा। निकलना न जानने पर भी इन्होंने व्यूह तोड़ डाला पर अन्याय से सात-सात महारथी एक साथ

इनसे युद्ध करने लगे और अंत में ये जयद्रथ के हाथ से वीरगति को प्राप्त हुए।

अभिमन्यु का विवाह विराट-कन्या उत्तरा से हुआ था। इनकी मृत्यु के समय उत्तरा गर्भवती थी। उसी गर्भ से बाद में महाराज परीक्षित उत्पन्न हुए जो राज्य के अधिकारी हुए।

कहा जाता है कि किसी शापके कारण अभिमन्यु पैदा हुए थे और मरने के बाद शाप मुक्त होकर चंद्रलोक में चले गए।

अमरावती—इन्द्र के स्वर्ग की राजधानी जिसका निर्माण विश्वकर्मा ने किया था। यह अपनी भव्यता तथा महानता के लिए प्रसिद्ध है। इसका स्थान सुमेरु पर्वत पर है। इसके चारों ओर आकर्षक उपवन तथा जल प्रपात आदि हैं। देवता यहीं निवास करते हैं।

अमृत—एक पेय जिसके पीने से पीने वाला अमर हो जाता है। जब पृथु के भय से पृथ्वी गौ बनी थी तो देवों ने इंद्र को बछड़ा बनाकर पृथ्वी को दूहकर अमृत निकाला था पर फिर दुर्वासा के शाप से यह अमृत समुद्र में जा गिरा। बाद में देवों और दैत्यों ने समुद्र को मथ कर (दे० 'समुद्र मंथन') इसे फिर निकाला और देवताओं ने इसका पान किया। दैत्यों में केवल राहु इसे पा सका।

अरिष्ट—एक राक्षस, जिसके पिता का नाम बलि था। कंस के कहने से इसने बैल (वृषभ) का भयंकर वेष धारण कर कृष्ण पर आक्रमण किया था और उन्हें मार डालना चाहता था, पर कृष्ण ने इसके सींग से इसका काम तमाम कर दिया। वृषभ का वेष धारण करने के कारण इसका नाम वृषभासुर भी है।

अरुंधती—वशिष्ठ मुनि की पत्नी। दे० 'वशिष्ठ'।

अरुण—कश्यप के औरस पुत्र। विनता के गर्भ से इनका जन्म हुआ था। ये गरुड़ के अग्रज तथा सूर्य के सारथी हैं। इनकी पत्नी का नाम श्येनी था। इनके दो पुत्र सम्पाती तथा जटायु थे। दे० 'जटायु' 'संपाती'।

अर्जुन—इंद्र तथा कुन्ती के संयोग से इनका जन्म हुआ था और ये पाण्डु के तीसरे क्षेत्रजपुत्र थे। अर्जुन द्रोणाचार्य के प्रिय शिष्यों में से थे और धनुर्विद्या के महान् पंडित थे। स्वयम्वर में घूमते चक्र के बीच मछली की आँख में वाण मार कर इन्होंने द्रौपदी को जीता था। इनका विवाह कृष्ण की वहन सुभद्रा से भी हुआ था जिसके गर्भ से अभिमन्यु का जन्म हुआ। महाभारत युद्ध में स्वयं कृष्ण इनके सारथी थे। इनके धनुष का नाम गांडीव था, जिसे इन्होंने अग्नि से पाया था। जयद्रथ को मार कर अर्जुन ने अभिमन्यु के ख़ून का वदला लिया था। कर्ण भी इन्हीं के हाथ से मारा गया। कहते हैं कि अंतिम दिनों में एक वार जव ये कुछ यादव स्त्रियों को साथ लेकर जा रहे थे भीलों ने इनको युद्ध में हराया और स्त्रियों को छीन लिया। उस समय ये गांडीव की डोरी भी नहीं चढ़ा सके। अन्त में अर्जुन अन्य भाइयों के साथ हिमालय पर्वत पर गलने चले गए। द्रौपदी और सुभद्रा के अतिरिक्त उलूपी तथा चित्रांगदा आदि और भी इनकी स्त्रियाँ थीं। अर्जुन से एक वार शिव से भी युद्ध हुआ था। दे० 'उत्तरा' 'उलूपी' 'द्रौपदी'.

अलर्क—(सं०) १. एक असुर। एक वार यह भृगु की पत्नी को वलात उठा ले गया। इस पर क्रुद्ध होकर भृगु ने इसे मूत्र-श्लेष्मभोजी कीट होकर भूतल में जन्म धारण करने का शाप दिया। साथ ही यह भी कहा कि परशुराम के दर्शन से तुम शाप-मुक्त होगे।

महाभारत शांतिपर्व के अनुसार महाभारत काल में यह कीट-

रूप में पैदा हुआ। एक दिन कर्ण की जाँघ पर परशुराम सर रख कर सो रहे थे उसी समय इस कीट ने कर्ण की जाँघ में काटा, पर गुरु की निद्रा टूट जाने के भय से कर्ण शांत रहे और ख़ून बहने लगा। ख़ून लगने से परशुराम की नींद खुली और उन्हें देखते ही अलर्क शापमुक्त हो गया।

२. मार्कण्डेय पुराण के अनुसार सती मदालसा का चौथा पुत्र जो बहुत धर्मात्मा था। इसकी परीक्षा लेने के लिए एक बार विष्णु और शिव राक्षस बन कर इसके पास एक शव के लिए लड़ने लगे। दोनों बल में बराबर निकले। अतः कोई विजयी न हुआ और झगड़ा ज्यों का त्यों चलता रहा। अलर्क ने एक को अपना शरीर दे दिया और इस प्रकार झगड़ा तै हो गया। इस पर विष्णु और शिव इस पर बहुत प्रसन्न हुए और इसे साक्षात दर्शन दिया। कहा जाता है कि इसके पास जो जिस इच्छा से जाता था, वह पूरी हो जाती थी।

३. एक प्राचीन राजा का नाम जिसने किसी ब्राह्मण के माँगने पर अपनी दोनों आँखें निकाल कर दे दी थीं।

अली—इन्हें हज़रत अली भी कहते हैं। ये इसलाम धर्म के चौथे खलीफा, मुहम्मद साहब के मित्र और उनके दामाद थे। इनकी स्त्री का नाम फ़ातमा था जो मुहम्मद साहब की पुत्री थीं। दे० 'हसन' 'हुसेन'।

अवतार—विष्णु समय-समय पर विभिन्न रूपों में संसार में अवतरित होते रहे हैं। उनके पृथ्वी पर अवतरित विभिन्न रूपों को अवतार की संज्ञा दी गई है। प्रधान अवतार १० हैं—

१. *मत्स्यावतार*—प्रथम अवतार मछली के रूप में हुआ था। दे० 'मत्स्य' 'मनु'। यह अवतार सतयुग में हुआ था।

२. *कच्छपावतार*—दूसरा अवतार कछुवे के रूप में हुआ था। दे० 'कच्छप' यह अवतार सतयुग में हुआ था।

३. *वाराहावतार*—तीसरा अवतार वाराह या शूकर का था। दे० 'वाराह' इस अवतार का समय सतयुग है।

४. *नृसिंहावतार*—चौथे अवतार में भगवान आधे मनुष्य और आधे सिंह थे। दे० 'नृसिंह' इस अवतार का भी समय सतयुग है।

५. *वामन*—पाँचवाँ अवतार वलि को पृथ्वी से हटा कर पाताल में भेजने के लिए त्रेता में हुआ। इसमें भगवान ५२ अंगुल के बौने थे। दे० 'वामन'।

६. *परशुराम*—छठा अवतार क्षत्रियों का अत्याचार कम करने के लिए त्रेता में हुआ। दे० 'परशुराम'।

७. *राम*—सातवाँ अवतार रावण को मारने के लिए त्रेता में हुआ। दे० 'राम'।

८. *कृष्ण*—८ वाँ अवतार कंस को मारने के लिए द्वापर में हुआ। दे० 'कृष्ण'।

९. *बुद्ध*—९ वाँ अवतार बुद्ध भगवान का था। कुछ लोगों के अनुसार गौतम बुद्ध से बुद्धावतार भिन्न था पर अधिक लोग उन्हीं बुद्ध को बुद्धावतार मानते हैं। दे० 'बुद्ध'।

१०. *कल्कि*—१० वाँ अवतार कलयुग में भविष्य में होगा। दे० 'कल्कि'।

इन दस प्रधान अवतारों के अतिरिक्त कुछ अवतार और हैं। सामान्यतः इनकी संख्या २४ कही जाती है और इनमें उपर्युक्त दस के अतिरिक्त ब्रह्मा, नारद, नरनारायण, कपिल, दत्तात्रेय, यज्ञ, ऋषभ, पृथु, धन्वंतरि, मोहनी, वलराम, वेदव्यास, हंस और हयग्रीव ये १४ और हैं। भागवत के अनुसार अवतार २१ हुए हैं। इनमें प्रधान दस के अतिरिक्त पुरुष, नारद, नरनारायण, कपिल, दत्तात्रेय, यज्ञ, ऋषभ, पृथु, धन्वंतरि, व्यास तथा वलराम ये ११ और हैं।

अश्वत्थामा १. पांडव पक्ष के मालवराज इंद्रवर्मा के हाथी का

नाम। इसी हाथी के मरने का समाचार द्रोणाचार्य को इस तरह सुनाया गया था कि उन्होंने अपने पुत्र अश्वत्थामा को मरा जाना और अपना शरीर त्याग दिया। दे० 'द्रोणाचार्य'।

२. द्रोणाचार्य तथा कृपा के पुत्र। भूमिष्ठ होते ही उच्चैः-श्रवा अश्व की तरह इन्होंने शब्द किया जिससे इनका नाम अश्वत्थामा पड़ा। महाभारत युद्ध में अश्वत्थामा कौरवों की ओर थे। दुर्योधन के घायल होने के बाद, कृप, कृतवर्मा तथा अश्वत्थामा ये तीन ही आदमी उस पक्ष में शेष थे। तीनों ही रात को पांडवों के शिविर में घुस गए। भीतर जाकर अश्वत्थामा ने अपने पिता का प्रतिशोध लेने के लिए उनके हत्यारे दृष्टद्युम्न को सोते हुए देख कर मार डाला। उसके बाद शिखंडी मिला और वह भी मार डाला गया। चलते-चलाते अश्वत्थामा ने द्रौपदी के पाँच पुत्रों को जो सो रहे थे मारा और दुर्योधन को दिखाने के लिए उन पाँचों का सर काट कर ले लिया। साथ ही उन्होंने गर्भस्थ राजा परीक्षित को भी मारा पर कृष्ण ने बचा लिया। दूसरे दिन द्रौपदी के रोने पर अर्जुन उसे मारने चले पर ब्रह्महत्या के भय से सभी लोगों ने प्राण लेना अनुचित कहा। अंत में भीम, कृष्ण और अर्जुन ने उसका पीछा कर उसकी सिर की मणि छीन ली और यह मणि द्रौपदी को दी गई। इससे द्रौपदी को कुछ सान्त्वना मिली। द्रौपदी ने बाद में मणि युधिष्ठिर को दी जिन्होंने अश्वत्थामा की तरह उसे शीश पर धारण किया।

अश्वत्थामा अमर कहे जाते हैं। दे० 'द्रोणाचार्य' 'दुर्योधन' 'परीक्षित'।

अश्विनीकुमार—ये संख्या में दो हैं और सूर्य तथा प्रभा या त्वष्टा के पुत्र हैं। इनके विषय में कहा जाता है कि ये सर्वदा रूपवान, युवक तथा तेजवान बने रहते हैं। इनको रूप-छद्म की कला

भी ज्ञात है और सर्वदा अन्यान्य रूपों में विचरते हैं। इनकी चाल बड़ी तेज़ है। ये स्वर्गीय वैद्य भी हैं। दोनों सदा एक साथ रहते हैं। नकुल और सहदेव इन्हीं के औरस पुत्र थे। कहते हैं कि एक वार संज्ञा वन में भाग गई थी और वहाँ अश्विनी वन कर तप करने लगी थी। इस वात का सूर्य को पता चला तो वे भी अश्व वन कर वहाँ गए और तभी अश्विनीकुमारों की उत्पत्ति हुई। दे० 'छाया'।

असमंजस—सूर्यवंशी राजा सगर तथा रानी केशी का ज्येष्ठपुत्र। यह अत्यंत अत्याचारी था जिससे इसके पिता ने इसे देश से निकाल दिया था। इसके पुत्र का नाम अंशुमान था। यह सगर के ६० हज़ार लड़कों को वहुत परेशान करता था।

अहल्या—महर्षि गौतम की परमसुन्दरी पत्नी तथा वृद्धाश्व की पुत्री। एक वार गौतम की अनुपस्थिति में इन्द्र ने गौतम का रूप धारण कर अहल्या के साथ संभोग किया। परन्तु संयोगवश वाहर निकलते समय गौतम तथा इन्द्र की भेंट हो गई। गौतम ब्रह्मज्ञान से सभी वात जान गए और क्रोध में उन्होंने इन्द्र को 'सहस्र भग-वाला' तथा अहल्या को पत्थर हो जाने का शाप दिया। वाद में वहुत प्रार्थना करने पर इन्होंने अहल्या को राम के चरण के स्पर्श से मुक्त होने का वरदान दिया। त्रेता में जनक पुर जाते समय इसी वर के अनुसार राम ने इन्हें अपने स्पर्श से पत्थर से फिर स्त्री वनाया था।

आत्मदेव—एक ब्राह्मण। ये तुंगभद्रा के क़िनारे रहते थे। इनको कोई संतान न थी। इसी चिंता में एक दिन वैठे थे कि किसी सिद्ध ने इनकी पत्नी को एक फूल खाने को दिया। स्त्री ने प्रेमवश उसे स्वयं न खाया और अपनी वहिन को दे दिया। वहिन ने उसे एक गाय को खिला दिया। आत्मदेव की पत्नी तथा गाय दोनों ही गर्भवती हुईं। आत्मदेव को धुंधकारी नाम का वड़ा

उत्पाती पुत्र हुआ तथा गाय को गोकर्ण नामक शांत और ज्ञानी पुत्र। गोकर्ण के कान, गाय की तरह थे अतः उनका यह नाम था तथा धुँधकारी को उसके स्वभाव के कारण यह नाम मिला था। गोकर्ण को धुंधकारी बहुत सताया करता था।

आदम—पहले आदमी। हिंदुओं में जो स्थान मनु का है वही स्थान मुसलमान तथा ईसाइयों आदि में आदम का है। शैतान के बहकाने से इन्होंने मना किए गए पेड़ (ज्ञान वृक्ष, एक मत से गेहूँ) का फल खा लिया था, अतः स्वर्ग से पृथ्वी पर गिरा दिये गए। इनकी स्त्री हौवा का जन्म इनकी पसली से हुआ था। इन दोनों से हर घड़ी एक मर्द और एक औरत का जन्म होता था जो तुरत बड़े हो जाते थे और उनका विवाह हो जाता था। इस प्रकार सृष्टि का विकास इन्हीं दोनों से हुआ। इन लोगों के प्रसिद्ध पुत्र हाबील और क़ाबील थे। क़ाबील ने हाबील को क़त्ल कर डाला था। खुदा ने शैतान से आदम को सिजदा करने को कहा था पर उसने नहीं किया जिस पर उसे स्वर्ग से निकाल कर नरक में कर दिया गया।

आदित्य—कश्यप तथा अदिति के पुत्र। ये हिन्दुओं के प्राचीनतम देवताओं में हैं। प्रारंभ में इनकी संख्या ६ थी फिर ७ हुई तथा और बाद में संस्कृत साहित्य में १२ हो गई। इनमें सबसे बड़े वरुण हैं। आज आदित्य का सीधा अर्थ सूर्य लिया जाता है।

आस्तीक—एक ऋषि और सर्प। इनके पिता का नाम जरत्कारु और माता का नाम मनसा था। ये वासुकी नाग के भांजे थे। जनमेजय ने अपने पिता परीक्षित का बदला लेने के लिए एक ऐसा नागयज्ञ प्रारम्भ किया जिसमें सभी सर्पों के भस्म हो जाने की सम्भावना थी। आस्तीक ने ही जनमेजय से प्रार्थना कर यह यज्ञ बन्द कराया। दे० 'जनमेजय'।

इंदुमती—विदर्भ के महाराज भोज की बहिन जिसने स्वयंवर में महाराज अज को अपना वर चुना था।

इंदुमती पूर्व जन्म में हरिणी नाम की इंद्र के दरबार की अप्सरा थी। इंद्र ने अपनी प्रकृति के अनुसार महर्षि तृणविंदु की तपस्या में विघ्न पहुँचाने के लिए हरिणी को भेजा। ऋषि ने रुष्ट होकर उसे मनुष्य योनि में जाने का शाप दिया। हरिणी दुःखी होकर उनसे प्रार्थना करने लगी तो फिर उन्होंने वर दिया कि स्वर्गीय पुष्प के दर्शन से पुनः तुम अप्सरा होकर इंद्रलोक में आ जाओगी। इसी शाप के कारण इंदुमती नाम से इसका जन्म हुआ और अज से विवाह हुआ।

एक दिन अपने पति अज के साथ वाटिका में विहार कर रही थी। उसी समय इसे नींद आ गई। इसी बीच नारद आकाशमार्ग से आ रहे थे। उनकी वीणा से स्वर्गीय पुष्प की माला इसके शरीर पर गिरी। स्वर्गीय पुष्प देखते ही शापमुक्त होकर इंदुमती पुनः इंद्रलोक चली गई।

इंद्र—प्रसिद्ध वैदिक देवता। ये सभी देवताओं के स्वामी हैं। इनकी पत्नी का नाम शची तथा पुत्र का नाम जयंत है। अर्जुन इन्हीं का औरस पुत्र था। इनके राजप्रासाद का नाम वैजयन्त तथा राजधानी का नाम अमरावती है। अहल्या का सतीत्व गौतम की अनुपस्थिति में इन्द्र ने ही नष्ट किया था, जिसके लिए गौतम के शाप से इन्हें सहस्रभगवाला होना पड़ा था। स्वयंवर के अवसर पर राम का दर्शन कर ये इस शाप से मुक्त हुए। इनके माता पिता क्रमशः अदिति तथा कश्यप थे। इनका हाथी ऐरावत और घोड़ा उच्चैःश्रवा है जो श्वेत वर्ण के हैं। इन्होंने बहुत से असुरों को मारा था, जिनमें वृत्रासुर प्रमुख है। रावण-पुत्र मेघनाद ने इंद्र को हराया था। दे० 'शिवि'।

इंद्रद्युम्न—१. यह एक द्रविड़ देश का राजा था। एक बार यह पूजा कर रहा था और इसी बीच इसके गुरु अगस्त्य ऋषि आ गए। पूजा में भंग न होने देने के लिए इसने उठकर उनका अभिवादन नहीं किया। इस पर ऋषि ने रुष्ट होकर शाप दिया—तुम मेरे आने पर भी हाथी की तरह मस्त बैठे रहे। अतः हाथी हो जाओ। इसी शाप से यह हाथी हो गया। प्रसिद्ध 'गज-ग्राह' कथा का गज यही है। दे० 'गज' तथा 'ग्राह'।

२. स्कंद पुराण के उत्कल खंड के अनुसार मालव देश के एक राजा। इन्होंने ही वह विष्णु मंदिर बनवाया था जिसमें आजकल जगन्नाथ की मूर्ति है। इसके विषय में कहा जाता है इंद्रद्युम्न एक मंदिर बनवा कर ब्रह्मा के पास मूर्ति स्थापन के लिए पहुँचे। ब्रह्मा ने कहा कि एक बार अपने राज्य में जाकर फिर वापस आओ तब मूर्ति मिलेगी। इंद्रद्युम्न अपने राज्य में आए तो उनका राज्य कहीं मिला ही नहीं। फिर दूसरे जन्म में इन्होंने वहीं मंदिर बनवाया। उसी समय किसी ने बतलाया कि समुद्र में एक काठ तैर रहा है। इंद्रद्युम्न ने ब्रह्मा से सुन रक्खा था कि कृष्ण एक नीम के वृक्ष पर प्राण छोड़ेंगे और वह वृक्ष बहकर यहाँ आयेगा। ध्यान आते ही इंद्रद्युम्न ने वह काठ मँगवाया और जगन्नाथ की मूर्ति बनवाई। पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ मंदिर यही है।

इक्ष्वाकु—सूर्यवंश के प्रथम राजा। ये मनु वैवस्वत के पुत्र थे। मनु के छींकते समय उनकी नाक से इनका जन्म हुआ था, इसी कारण इनका नाम इक्ष्वाकु था। इनके पिता विवस्वत् (सूर्य) के पुत्र थे अतः इन्होंने सूर्यवंश की स्थापना की। इनके सौ पुत्र थे जिनमें विकुक्षि सबसे बड़ा था। निमि भी इन्हीं के पुत्र थे जिन्होंने मिथिलावंश की नींव डाली। ऋग्वेद में मैक्समूलर के अनुसार यह

नाम केवल एक बार आया है। मैक्समूलर इस नाम को किसी एक व्यक्ति का नाम न मानकर एक समूह का नाम मानते हैं।

इड़ा—सायण के अनुसार इड़ा विश्व की शासिका देवी हैं। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार मनु ने संतानोत्पत्ति के लिए एक यज्ञ किया और उसी से इड़ा का जन्म हुआ। 'कामायनी' में प्रसाद जी ने मनु को इनकी ओर आकर्षित दिखाया है पर बाद में मनु को अपनी भूल मालूम होती है और इड़ा उनकी पुत्रवधू (मानव की स्त्री) बनती है। पुराणों के अनुसार इड़ा मनु की पुत्री और बुध की पत्नी हैं, साथ ही ऋग्वेद में उन्हें चेतना प्रदान करने वाली माना गया है। संभवतः इन्हीं आधारों पर प्रसाद जी ने कामायनी में जहाँ श्रद्धा को हृदय की देवी माना है, इड़ा को बुद्धि या तर्क की।

इबलीस—शैतानों का प्रधान। यह फरिश्तों का गुरु और अफसर था तथा ख़ुदा का पारिषद था। ख़ुदा ने इससे एक बार आदम को सिजदा करने को कहा पर इसने यह कहकर इनकार किया कि आदम मिट्टी का बना है अतः मैं आग का बना उसे सर नहीं झुका सकता। इस पर यह स्वर्ग से निकाल दिया गया। इसी के बहकाने में आकर आदम ने गेहूँ खा लिया था। जिससे वे स्वर्ग से निकाल दिए गए। इबलीस अब आदमियों को बहकाकर बुरे रास्ते पर ले जाता है। यह नरक या दोज़ख का राजा भी कहा गया है। यह ईसाई, यहूदी और इसलाम तीनों धर्मों में माना गया है।

इब्राहिम—एक प्रसिद्ध पैगंबर। ये एक बुत बनाने वाले आज़र नाम के संगतराश के लड़के थे। इन्हें 'परमात्मा के मित्र' के नाम से पुकारा जाता है। इब्राहिम एकेश्वरवाद पर बहुत ज़ोर देते थे।

इरावत—नागराज ऐरावत की एक कन्या उलूपी थी, जिसका विवाह किसी नाग से हुआ था। गरुड़ ने नाग को खा डाला और उलूपी विधवा हो गई। विधवा होने पर इससे अर्जुन को इरावत

नामक पुत्र हुआ। इसका लालन-पालन नागलोक में ही हुआ। महाभारत के युद्ध में आर्यशृंग नामक राक्षस द्वारा यह मारा गया। दे० 'उलूपी'।

इसराफ़ील—एक स्वर्ग दूत जो प्रलय (क़यामत) के समय तुरही बजाकर मरे लोगों को जगाएँगे। इन्हीं का बाजा सुनकर लोग कब्र से उठ कर फ़रियाद के लिए ख़ुदा के पास जाएँगे।

ईसा—ईसाइयों के पैग़म्बर। इन पर बाइबिल नाज़िल हुई थी। ईसा के बहुत से चमत्कार प्रसिद्ध हैं। इन्होंने कई बार मुर्दों को जिला दिया तथा बीमारों को अच्छा कर दिया। जीवन के अंत में इन्हें क्रास पर लटकना पड़ा।

उग्रसेन—व्रज के अत्याचारी राजा कंस का पिता। इसके पिता का नाम आहुक और माता का नाम काश्या था। इसका एक भाई भी था जिसका नाम देवक था। कंस इसे राजगद्दी से उतार बन्दी बना स्वयं राजा बन बैठा था।

उच्चैःश्रवा—इन्द्र के घोड़े का नाम। यह समुद्र से निकला था। इसका वर्ण श्वेत था और सात मुँह थे।

उत्तम—उत्तानपाद की दूसरी पत्नी सुरुचि से उत्पन्न उनका पुत्र। उत्तम बाल्यावस्था में ही एक दिन अहेर खेलने गए जहाँ एक यक्ष ने इन्हें मार डाला। ये ध्रुव के वैमानेय थे।

उत्तर—राजा विराट का पुत्र और अभिमन्यु की स्त्री उत्तरा का भाई। पांडवों के अज्ञात वनवास की समाप्ति के समय कौरवों ने आक्रमण कर विराट की गायों को चुरा लिया तथा विराट को बन्दी बना लिया। उस समय उत्तर अर्जुन को अपना सारथी बना कर लड़ने गया। अर्जुन की सहायता से इसने कौरवों को मार भगाया। महाभारत युद्ध में यह पांडवों की ओर था और शल्य के हाथ से वीरगति को प्राप्त हुआ।

उत्तरा—विराट की कन्या तथा उत्तर की बहन। अज्ञात वन-वास में अर्जुन वृहन्नला के रूप में इसे नृत्य आदि की शिक्षा देते थे। गायों क लिए कौरवों से युद्ध में इनकी वीरता देख कर उत्तरा ने अर्जुन से विवाह का प्रस्ताव किया पर अर्जुन ने शिष्या होने के कारण बेटी कहकर पुकारा और अपने पुत्र अभिमन्यु से इसका विवाह कर दिया। महाभारत युद्ध में अभिमन्यु की मृत्यु के समय उत्तरा गर्भवती थी। उसी के गर्भ से महाराज परीक्षित का जन्म हुआ।

उत्तानपाद—इनकी कथा हरिवंश, भागवत तथा विष्णु पुराण आदि में मिलती है। ये मनु और शतरूपा के पुत्र थे। सुनीति और सुरुचि इनकी दो रानियाँ थीं, जिनसे क्रम से ध्रुव और उत्तम का जन्म हुआ था। उत्तानपाद का सुरुचि और उत्तम पर अतुलित स्नेह था पर सुनीति और ध्रुव पर नहीं। एक दिन अपनी गोद से उन्होंने ध्रुव को उतार कर उत्तम को बिठला लिया, इसी की ठेस से ध्रुव ने जंगल में तपस्या आरम्भ की और अंत में भगवान का साक्षातकार किया। बाद में उत्तानपाद को भी ज्ञान हुआ और पश्चात्ताप करते हुए उन्होंने ध्रुव को फिर से अपनाया।

उद्धव—कृष्ण के एक यादव सखा और भक्त। ये ब्रह्मज्ञानी थे। इन्हीं को कृष्ण ने गोपियों को समझाने के लिए मथुरा भेजा था; परंतु वहाँ जाने पर उनकी प्रेमपूर्ण बातें सुन ये प्रेम के रंग में रँग गए। गोपियों ने इनका ख़ूब मज़ाक उड़ाया था। इनका और गोपियों का संवाद साहित्य में भ्रमरगीत नाम से प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि उद्धव को अपने ज्ञान तथा निर्गुण भक्ति का गर्व था जिसे दूर करने के लिए कृष्ण ने इन्हें गोपियों के पास भेजा था।

उपसुंद—निकुंभ या निसुंद नामक राक्षस के दो पुत्र थे। बड़े का नाम सुंद और छोटे का उपसुंद था। दोनों ने विंध्याचल पर घोर तप किया जिससे प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने वर दिया कि तुम

लोग आपस में लड़ कर मर सकते हो पर तुम्हें कोई मार नहीं सकता। बाद में जब वे बहुत अत्याचार करने लगे तो देवों के कहने से ब्रह्मा ने तिलोत्तमा नामक एक अतीव सुंदरी अप्सरा उत्पन्न की। सुंद और उपसुंद दोनों उस पर मोहित हुए और आपस में लड़ कर मर गए। दे० 'तिलोत्तमा'।

उभय बाई—भक्तमाल के अनुसार ये दो राजकुमारियाँ थीं जो बहुत साधु प्रकृति की थीं तथा संतों के दर्शन के लिए लालायित रहती थीं। एक बार इन्होंने अपने लड़कों को जहर देकर इसलिए मार डाला कि रोना सुन कर संत लोग नहीं आएँगे। जब संत आए तो उन्होंने प्रसन्न होकर पुत्रों को पुनः जीवित कर दिया। उभय बाई इन लोगों का यथार्थ नाम न होकर भक्तों द्वारा दिया हुआ नाम (दो होने के कारण) है।

उमर फ़ारूक़—इसलाम धर्म के दूसरे खलीफ़ा और मुहम्मद साहब के मित्र। ये खत्ताब के लड़के थे। इनकी लड़की हफ़सा का विवाह मुहम्मद साहब से हुआ था।

उर्वशी—स्वर्ग की प्रसिद्ध अप्सरा। एक बार यह इन्द्र की सभा में नाचते समय पुरूरवा पर मोहित हो गई जिससे रुष्ट होकर इन्द्र ने इसे शाप देकर मर्त्यलोक में भेज दिया, जहाँ इसने पुरूरवा का पत्नीत्व स्वीकार किया। पुरूरवा से इसे नौ पुत्र हुए। जब स्वर्ग में गंधर्वों को इसके बिना कष्ट होने लगा तो विश्वावसु के द्वारा ये लोग इसे पुनः स्वर्ग में बुलाने में सफल हुए। दे० 'पुरूरवा' 'अगस्त्य'।

उलूपी—ऐरावत की या ऐरावत-कुल के कौरव्य नामक नाग की पुत्री। इसका विवाह एक नाग से हुआ था पर उसे गरुड़ ने खा डाला, अतः यह विधवा हो गई। इधर अर्जुन ने प्रतिज्ञा भंग की और युधिष्ठिर की आज्ञा से १२ वर्ष के लिए वन में गए। यहाँ उलूपी

ने इन्हें देखा और मोहित हो गई। वह उन्हें पाताल में ले गई और विवाह का प्रस्ताव किया। पहले तो अर्जुन ने स्वीकार नहीं किया, पर फिर तैयार हो गए। उलूपी ने अपनी मनोकामना पूर्ण होने पर अर्जुन को समस्त जलचरों पर विजयी होने का वर दिया। चित्रांगदा से उत्पन्न अर्जुन का पुत्र बभ्रुवाहन उन दिनों अपने नाना मणिपूर के महाराज के उत्तराधिकारी के रूप में था। वह अर्जुन का स्वागत करने आया। अर्जुन ने उसे विना हथियार के आते देख कुछ विरक्त भाव दिखलाया। उलूपी बभ्रुवाहन की देख-रेख कर चुकी थी अतः उस पर उसका प्रभाव था। उसने उसकाया और बभ्रुवाहन और अर्जुन में लड़ाई होने लगी। उलूपी की माया से अर्जुन को बभ्रुवाहन ने मार डाला और अंत में दुखी होकर आत्महत्या करना चाहता था, पर उलूपी ने एक मणि से अर्जुन को जिला दिया। विष्णुपुराण के अनुसार अर्जुन से उलूपी को इरावान नामक पुत्र पैदा हुआ था। उलूपी ने अन्त तक अर्जुन का साथ दिया और उनके साथ स्वर्ग भी गई।

उसमान ग़नी—इसलाम धर्म के तीसरे खलीफ़ा और मुहम्मद साहब के दामाद तथा मित्र। इनकी स्त्री का नाम 'रुक़य्या' था।

ऊर्मिला—महाराज सीरध्वज जनक की औरस पुत्री। इसका विवाह लक्ष्मण से हुआ था जिससे अंगद तथा चंद्रकेतु नाम के दो पुत्र पैदा हुए थे।

ऊपा—यह बलि की पौत्री तथा बाणासुर की पुत्री थी। एक बार स्वप्न में इसने किसी को देखा और उस पर मोहित हो गई। उसके विना इसका खाना-पीना छूट गया। यह देख ऊपा की सखी चित्रलेखा ने राजकुमारों तथा देवताओं का चित्र बना-बना कर इसे दिखाना आरम्भ किया और अन्त में अनिरुद्ध का चित्र दिखलाने पर इसका मुख लज्जा से लाल हो गया और

इस प्रकार चित्रलेखा ने यह जान लिया कि यह अनिरुद्ध से प्रेम करती है।

अनिरुद्ध कृष्ण का पौत्र तथा प्रद्युम्न का पुत्र था। चित्रलेखा ने उसे अपनी माया से मँगा लिया तथा ऊषा के साथ छिपे स्थान पर रख दिया। कुछ दिन बाद बाणासुर को पता चला तो पहले तो उसने अनिरुद्ध को मारना चाहा पर जब यह संभव न हो सका तो उसने इसे एक साँप से बाँध कर रख छोड़ा। यह समाचार नारद कृष्ण के पास ले गए और कृष्ण, प्रद्युम्न तथा बलराम आदि बड़ी भारी सेना लेकर लड़ने आए। बाणासुर शिव का भक्त था अतः उसकी ओर से शिव तथा स्वामिकार्तिकेय आदि लड़ने आए। घमासान युद्ध में कृष्ण ने बाण के हाथों को काट डाला। वे उसे मार भी डालते पर शिव के कहने से छोड़ दिया। बाद में बाण ने अपनी पुत्री ऊषा का विवाह अनिरुद्ध से कर उसे विदा किया।

ऋतुपर्ण—अयोध्या के विख्यात सूर्यवंशी राजा। राजा नल राज्य एवं दमयंती से अलग होने पर इन्हीं के यहाँ बाहुक नाम से अश्वाध्यक्ष और सारथी थे। नल अश्वविद्या का ज्ञाता था और ऋतुपर्ण द्यूत के, इस प्रकार परस्पर ज्ञान-विनिमय से दोनों ही दोनों विद्याओं के पंडित हो गए। एक बार दमयन्ती ने धोखे से स्वयन्वर के नाम पर राजा ऋतुपर्ण को अपने यहाँ बुलवाया। वहाँ जाने पर उसने नल को जो साथ में गए थे पहचाना और तब ऋतुपर्ण नल के वास्तविक रूप को जान सके। दे० 'दमयंती' 'नल'।

ऋष्यशृंग—एक त्रेता-कालीन ऋषि। विभांडक ऋषि ने एक बार उर्वशी को देखा और उनका वीर्यपात हो गया जिसे एक मृगी ने जल के साथ पी लिया और गर्भवती हो गई। इसी से ऋष्य-शृंग मुनि की उत्पत्ति हुई। मृगी से उत्पन्न होने के कारण इन्हें

ी इसी कारण इनका नाम ऋष्यशृंग पड़ा। एक बार रोम-
ऋषि के राज्य में पानी न बरसने से सूखा पड़ा, तो उन्होंने
शृंग मुनि को अपने राज्य में बुलाया। इनके जाते ही वहाँ
ो बरसा। वहीं ऋष्यशृंग का विवाह दशरथ की पुत्री शांता
हुआ। दे० 'रोमपाद'।

एकलव्य—महाभारत काल का प्रसिद्ध धनुर्धर। यह भील
जाति का बालक था। प्रारंभ में द्रोणाचार्य ने एकलव्य को अछूत
समझ कर अस्त्रविद्या सिखाने से इनकार कर दिया था। परन्तु
यह गुरुनिष्ठ बालक द्रोणाचार्य की एक मिट्टी की मूर्ति बनाकर
और उसे सामने रखकर अस्त्रविद्या का अभ्यास करने लगा, जिसके
फलस्वरूप यह प्रकांड धनुर्धारी निकला। अर्जुन ने एक दिन जब
देखा कि यह उनसे भी धनुर्विद्या में बढ़ गया तो उन्होंने इससे
इसके आचार्य का नाम पूछा। उत्तर में द्रोणाचार्य का नाम सुन
अर्जुन को आश्चर्य तथा दुःख हुआ और उन्होंने यह बात द्रोणा-
चार्य से बतलाई। गुरु द्रोण ने एकलव्य की कला को घटाने के
लिए उसके दाहिने हाथ का अंगूठा गुरुदक्षिणा में माँगा। एक-
लव्य ने प्रसन्नता पूर्वक गुरुदक्षिणा दे दी।

ऐरावत—इरा अर्थात् जल से उत्पन्न होने के कारण इसका
नाम ऐरावत था। यह हाथी समुद्र-मन्थन के उपरांत निकले १४ रत्नों
में से एक था। यह इंद्र को दिया गया था। ऐरावत उनका प्रधान
वाहन है। इसका रंग श्वेत कहा गया है तथा इसके दाँत संख्या
में चार कहे गए हैं। यह पूर्व दिशा का दिग्गज भी है। इसके अन्य
पर्याय अभ्रमातंग, ऐरावण, अभ्रभूवल्लभ, श्वेतहस्ती, मल्ल
नाग, इन्द्रकुंजर, हस्तिमल्ल, सदादान, सुदामा, श्वेतकुंजर, गज
ग्रणी, नागमल्ल तथा इन्द्रहस्ती आदि हैं।

कंस—मथुरा का एक प्रसिद्ध अत्याचारी राजा जो उग्रसेन

पुत्र था। इसका विवाह मगधराज जरासंध की दो कन्याओं अस्ति तथा प्राप्ति से हुआ था। यह कृष्ण का मामा था। अपने श्वसुर की सहायता से इसने अपने पिता उग्रसेन को राजगद्दी से उतार दिया और स्वयं राजा बन बैठा, जिससे इसके संबंधी इससे रुष्ट रहा करते थे। देवकी (जो कंस के चाचा की पुत्री थी) के विवाह के समय एक आकाशवाणी हुई थी कि देवकी का आठवाँ पुत्र कंस का वध करेगा। इस भय से कंस ने देवकी तथा वसुदेव को कारा-गृह में रख छोड़ा था, तथा उनके पुत्रों को मरवा डालता था। कृष्ण बड़ी उपाय से बचे। दे० 'कृष्ण'।

कंस ने कृष्ण को मारने के लिए कितने ही असुरों को भेजा; पर सभी मारे गए और अंत में इसने स्वयं कृष्ण को अक्रूर द्वारा मथुरा बुलवाया जहाँ कृष्ण ने इसे मार डाला।

ककुत्स्थ—सूर्यवंशीय सम्राट इक्ष्वाकु के पुत्र। इनका प्रचलित नाम पुरंजय था। देव और दानवों के युद्ध में देवों की ओर से पुरंजय की सहायता माँगी गई। इन्होंने इस शर्त पर देवों की प्रार्थना स्वीकार की कि इन्द्र उनके वाहन बनें। विष्णु के कहने पर इन्द्र बैल के रूप में आए जिस पर बैठकर पुरंजय ने विध्वंसात्मक संग्राम किया और देवों की जीत हुई। बैल के ककुद् पर बैठकर युद्ध करने के कारण ही इनका नाम ककुत्स्थ पड़ा। कहीं-कहीं ककुत्स्थ को भगीरथ या सौदास का भी पुत्र कहा गया है।

कच्छप—विष्णु के २४ अवतारों में से दूसरा अवतार। कूर्म पुराण के अनुसार एक बार विष्णु ने कछुवे का रूप धर पृथ्वी के भीतर जा जीवन के रहस्य समझाए थे। यही रूप कूर्म या कच्छप अवतार कहा गया। समुद्र-मंथन के समय कच्छप भगवान ही समुद्र में स्थित हुए थे। उस समय मंदराचल के भार से कच्छप भगवान के शरीर में इतना खून गिरा कि सारा समुद्र लाल हो

गया। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार प्रजापति ने कच्छप का रूप धारण कर सृष्टि की। ऐसा करने के कारण ही उनका नाम कूर्म पड़ा। इस प्रकार कूर्म विष्णु के साथ प्रजापति के भी अवतार माने जाते हैं। कूर्म के अन्य पर्याय कूर्म, कच्छ, कच्छप, कछुआ, कछ, पंचनख, जलगुल्म, गुह्य, कमठ, क्रोड़पाद, चतुर्गति, पंचांग-गुप्त, दौलेय, जीवथ, पीवर तथा पंचगुप्त आदि हैं।

कण्व—एक प्राचीन ऋषि जिन्होंने मेनका के छोड़ देने पर शकुन्तला का पालन-पोषण किया था। इनकी गणना सप्तर्षियों में होती है। कण्व मुनि कश्यप गोत्रीय थे। इस नाम के और भी बहुत से ऋषि हुए हैं।

कद्रु—दक्ष प्रजापति की पुत्री तथा महर्षि कश्यप की तेरह पत्नियों में से एक। कद्रु के गर्भ से सहस्र सर्प उत्पन्न हुए थे, जिनमें सर्वश्रेष्ठ शेष नाग था।

कपालिका—एक देवी जिनके शरीर में भस्म लगा रहता है और जो घंटा बजाकर सर्वदा शंकर, शंभू चिल्लाया करती हैं।

कबंध—एक राक्षस जो कश्यप और दनु का पुत्र था। एक बार इंद्र ने इसे ऐसा मारा कि इसके पैर और सिर पेट में घुस गए। पूर्व जन्म का यह विश्वावसु गंधर्व था। स्थूलशिरा ऋषि के शाप से इसे विकृत बनना पड़ा था। ब्रह्मा ने इसे दीर्घायु होने का वर दिया था। यह दंडकारण्य में रहता था और ऋषियों को कष्ट देता था। राम जब वहाँ पहुँचे तो उनसे और इससे युद्ध हुआ राम ने इसके हाथ काट जीते ही इसे भूमि में गाड़ दिया और य[illegible] शापमुक्त हो गया।

कबीर—एक प्रसिद्ध भक्त और हिंदी के कवि। इनका ज[illegible] तथा मृत्यु संवत १४४० और १५२० के लगभग है। यों इनका ज[illegible] किसी विधवा ब्राह्मणी से माना जाता है पर कबीरपंथियों के [illegible]

सार काशी के लहरतारा तालाब में एक कमल के फूल से इनका जन्म हुआ था। कुछ लोगों का यह कहना है कि किसी विधवा ब्राह्मणी ने एकबार रामानंद को प्रणाम किया। रामानंद ने उसके वैधव्य की ओर ध्यान न देकर उसे पुत्रवती होने का आशीर्वाद दिया। इसी आशीर्वाद के फलस्वरूप उसे एक बालक पैदा हुआ, जिसे उसने लहरतारा तालाब के पास लोकलाज से फेंक दिया। बाद में इसे नीरू जुलाहे ने पाला और यही कबीर हुआ। कबीर के जीवन के संबंध में भी अन्य भक्तों की भाँति बड़ी विचित्र-विचित्र घटनाएँ प्रचलित हैं, जिनमें से कुछ यहाँ दी जा रही हैं।

एक बार जगन्नाथपुरी के मंदिर में आग लगी और वहाँ का रसोईघाँदार जलने लगा। कबीर उस समय काशी में थे। यहाँ उन्होंने पानी गिराया, जिसके फलस्वरूप जगन्नाथपुरी की आग बुझ गई।

गुरुद्रोही राजा त्रिशंकु की छाया मगहर भूमि पर पड़ी और तभी से वह अपवित्र मानी जाने लगी। लोगों का विश्वास था और है कि मगहर में मरने वाला नरक में जाता है। कबीरदास को यह मान्य न था। इसीलिए सारा जीवन काशी में बिताकर मृत्यु के समय मगहर चले गये। वहाँ मरने के बाद हिंदू-मुसलमानों में उनके शव के लिए झगड़ा हुआ। हिंदू फूँकना चाहते थे और मुसलमान दफनाना। अन्त में किसी साधु ने वहाँ आकर कहा कि क्या लड़ते हो? कपड़ा उठाकर देखो भी तो! लोगों ने देखा तो कबीर के शरीर के स्थान पर वहाँ फूल था। हिंदू और मुसलमानों ने आधा-आधा उस फूल को बाँटकर अपने-अपने धर्मानुसार उन की अन्त्येष्टि क्रिया की।

कबीर जुलाहे का काम करते थे। एक दिन वे अपना बुना थान बाजार में बेचने गए। वहाँ किसी साधु ने जो वस्त्रहीन था इनसे

इनका थान माँगा और इन्होंने दे दिया। कबीर जब बाजार से लौटे तो इनके पास पैसे नहीं थे, अतः अपने घरवालों के डर से ये रास्ते में छिप रहे। कहा जाता है कि भगवान् स्वयं इनके घर बैल पर लाद कर खाद्य-सामग्री पहुँचा आए और कुछ दिन बाद जब कबीर खोजकर लाए गए तो यह रहस्य स्पष्ट हुआ। दे० 'सम्मन'।

कर्कोटक—कद्रु के गर्भ से उत्पन्न एक सहस्र सर्पों में एक प्रधान सर्प। एक बार इसने नारद के साथ छल किया था, जिससे उन्होंने शाप दिया कि तुम वन में स्थावर होकर रहो और तुम्हारा उद्धार राजा नल के द्वारा होगा। शाप पड़ा और यह स्थावर हो गया। कलि के कोप से जब राजा नल राज्यच्युत होकर भटकते-भूलते उस वन में पहुँचे तो कर्कोटक ने उन्हें काटा। काटते ही उसकी मुक्ति हो गई और नल विरूप हो गए। कर्कोटक ने राजा से पूरी बात बतलाई और यह भी बतलाया कि मेरे काटने से आपको दो लाभ होंगे—एक तो आपके विरूप होने से आपके शत्रु आप को पहचान न सकेंगे और दूसरे मेरे ज़हर से कलि का प्रभाव धीरे-धीरे कम होगा।

कर्ण—कुमारी कुंती के गर्भ से सूर्य के औरस पुत्र। दे० 'कुंती'। इस प्रकार कर्ण पांडवों के भाई थे। दुर्योधन तथा कर्ण में दाँत-काटी रोटी का व्यवहार था, इसीलिए उसने कर्ण को अंग देश का राजा बना उन्हें अंगराज की उपाधि दी थी। दान देने में कर्ण अग्रणी माने जाते रहे हैं और इनका नाम आदर से 'दानवीर कर्ण' के रूप में लिया जाता है। कुंती ने पैदा होते ही लोक-लज्जा के कारण इस नवजात शिशु को जमुना में बहा दिया था जिसे राधा नाम की एक स्त्री (दे० अधिरथ) ने पाया। उसने ही इनका पालन-पोषण किया जिसके नाम पर कर्ण को 'राधेय' कहते हैं। कर्ण ने भी अर्जुन आदि की तरह द्रोणाचार्य से ही अस्त्र-विद्या

सीखी थी। कर्ण तथा अर्जुन के बीच सदा प्रतिद्वन्द्विता रहती थी। अर्जुन के यथार्थ पिता इंद्र ने अर्जुन की तुलना में इन्हें कमजोर बनाने के लिए, इनकी दानशीलता का लाभ उठाते हुए, इनके सहजात कवच तथा कुंडल जो इनके शरीर से लगे थे, माँगे। कर्ण ने इन्हें प्रसन्नतापूर्वक दे दिया। कहते हैं कि इन्हें शरीर से अलग करते समय ख़ून निकलने लगा था। कर्ण का विवाह पद्मावती नामक कन्या से हुआ था। कर्ण अपनी माता कुंती से अर्जुन के अतिरिक्त किसी भी पांडव को न मारने के लिए प्रतिज्ञाबद्ध हो चुके थे। इसका उन्होंने मरते दम तक पालन किया।

महाभारत युद्ध के सोलहवें दिन कौरवों के कहने पर कर्ण ने सेनापतित्व स्वीकार किया और संयोगवश दूसरे ही दिन अर्जुन के हाथ से मारे गए। घटोत्कच की मृत्यु कर्ण के हाथ से हुई थी। कृष्ण कर्ण को अर्जुन से भी बड़ा वीर मानते थे।

कर्दम—महर्षि कपिल के पिता एक ऋषि। इनका विवाह स्वायम्भुव मनु की कन्या देवहूति से हुआ था। देवहूति से इन्हें कला आदि नौ कन्यायें हुई थीं। कर्दम मुनि छाया के गर्भ से उत्पन्न सूर्य के औरस पुत्र थे।

करमाबाई—इनकी कथा भक्तमाल में मिलती है। ये एक भक्त महिला थीं और जगन्नाथपुरी में रहती थीं। करमा प्रतिदिन खिचड़ी बनाकर जगन्नाथ को भोग लगाती थीं। इनकी गंदगी देखकर वहाँ के पुजारी लोग एक दिन बिगड़े कि नहा-धोकर खिचड़ी बनाया करो। दूसरे दिन करमाबाई नहाने-धोने लगीं। इस देर के कारण जगन्नाथ को बड़ा दुःख हुआ। जब पुजारियों ने फाटक खोला तो आश्चर्य से देखा कि जगन्नाथ के मुँह में खिचड़ी लगी है। जगन्नाथ ने उन लोगों से करमाबाई को न रोकने की आकाशवाणी द्वारा आज्ञा दी। [illegible] तुलना में कहीं अधिक प्रेम का भूखा है,

और वह प्रेम कर्माबाई में सबसे अधिक है। तभी से फिर कर्माबाई उसी प्रकार भोग लगाने लगीं।

कलि—चौथे युग, कलियुग के प्रवर्तक या स्वामी। दमयंती-स्वयंवर में कलि भी गए थे तथा दमयंती को नल के साथ जाते देख नल पर बहुत क्रुद्ध हुए थे। इसका बदला लेने के लिए नल पर इन्होंने अपना प्रभाव दिखलाया और उनकी बुरी दशा की। कर्कोटक नाम के सर्प ने नल को काट कर कलि का प्रभाव कम किया था। पुराणों के अनुसार कलि के पिता का नाम क्रोध और माता का नाम हिंसा है। दे० 'परीक्षित' 'नल'।

कल्कि—कल्किपुराण ने एक ऐसी कल्पना की है जिसके अनुसार कलियुग के अंत में विष्णु का १० वाँ अवतार इसी नाम से होगा। कलियुग का संहार कर भगवान सतयुग की प्रवृत्तियों का प्रचार करेंगे। लक्ष्मी भी पद्मा के रूप में जन्म लेंगी और उनका विवाह कल्कि से होगा। यह अवतार उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जिले के सम्भल स्थान पर एक कुमारो कन्या के गर्भ से होगा।

कश्यप—एक ऋषि। वाल्मीकि रामायण के अनुसार ये ब्रह्मा के मानस पुत्र मरीचि के पुत्र थे। इनकी माता का नाम कला था। संसार के सारे जीव इनके ही पुत्र हैं। भागवत के अनुसार इनकी अदिति, दिति, दनु, काष्ठा, अरिष्ठा, सुरसा, इला, मुनि, क्रोधवशा, ताम्रा, सुरभि, सम्य, तिमि, विनता, कद्रू, पतंगी और यामिनि—ये १७ पत्नियाँ थी और इन्हीं से संसार के विभिन्न जीव पैदा हुए थे। कुछ मतों से इनकी ७ या १३ पत्नियाँ थीं। इनकी सभी पत्नियाँ दक्ष प्रजापति की पुत्रियाँ थीं। विष्णु का वामन अवतार भी अदिति के गर्भ से कश्यप के पुत्ररूप में हुआ था। अदिति से आदित्य तथा देवता भी पैदा हुए थे। दिति से दैत्यों की उत्पत्ति हुई थी। कश्यप का नाम सप्तर्षियों में भी लिया जाता है। इनके जन्म,

जीवन, विवाह आदि के सम्बन्ध में विभिन्न मतों की संख्या बहु
अधिक है।

काकभुशुंडि—ये एक ब्राह्मण थे। एक बार लोमश ऋषि
यहाँ ये ज्ञान प्राप्त करने गए। वहाँ बात ही बात में दोनों आदमि
में वाद-विवाद होने लगा। इस पर लोमश ऋषि बहुत रुष्ट हु
और उन्होंने शाप दिया—

सठ स्वपच्छ तव हृदयँ बिसाला।
सपदि होहि पच्छी चंडाला॥

शाप के फलस्वरूप ब्राह्मण कौआ हो गए और उनका ना
काकभुशुंडि पड़ा। बाद में क्रोध शांत होने पर मुनि ने फिर से इन
ज्ञान कराया और ये बहुत बड़े राम-भक्त हुए।

काकभुशुंडि से एक बार गरुड़ से लड़ाई हो गई। काकभुशुं
राम के शिशुरूप के भक्त थे। एक बार बालक राम अपने आँगन
खा रहे थे। काकभुशुंडि उनके हाथ से पूए का टुकड़ा लेकर भगे
राम की प्रेरणा से गरुड़ ने उनका पीछा किया। युद्ध में भुशुं
बुरी तरह घायल हुए और तीनों लोक में भागे पर कहीं उन्हें गरुड़
त्राण न मिला। अंत में वे राम के पास आए और राम ने उनकी
रक्षा की। कहा जाता है कि मोह उत्पन्न होने के कारण भुशुंडि पूआ
लेकर भागे थे। गरुड़ से हारने पर तथा पुनः राम की शरण
आने पर उनका मोह दूर हो गया।

रामकथा को सर्वप्रथम कहने वाले काकभुशुंडि ही हैं। शंक
ने हंस का रूप धारण कर यह कथा उनसे सुनी थी।

कहा जाता है कि भुशुंडि ने एक भुशुंडि रामायण की रचना भ
की। काकभुशुंडि अमर हैं। इनका कभी भी नाश नहीं होता।

[illegible]—ये सौंदर्य एवं प्रेम के प्रतीक हैं। इनके माता-पि
[illegible] तथा [illegible] थे। ये सर्वश्रेष्ठ [illegible] हैं और

मलिनता इनके चेहरे पर कभी नहीं आती। इनकी सवारी तोता है। इनके झंडे पर मछली का चिह्न है। इनका जन्म सबसे पहले हुआ था। कहीं-कहीं इनको धर्म का पुत्र तथा न्याय का देवता भी कहा गया है। काम ने ही शिव को पार्वती से पाणिग्रहण के लिए विवश किया जिस पर क्रोधित होकर शिव ने अपने तृतीय नेत्र से कामदेव को भस्म कर दिया। परंतु पुनः काम की पत्नी रति के रोने से शिव ने वरदान दिया और इनका जन्म कृष्ण तथा रुक्मिणी से प्रद्युम्न रूप में होगा। एक अन्य मत से प्रद्युम्न का पुत्र अनिरुद्ध कामदेव का अवतार था। कामदेव का साथी वसंत; वाहन कोकिल तथा धनुषबाण फूलों का है। कामदेव के पाँच बाण मोहन, उन्मादन, संतपन, शोषण और निश्चेष्टकरण या लालकमल, अशोक, आम, चमेली और नील कमल हैं।

कामधेनु—एक गाय, जो समुद्र-मंथन के समय निकले चौदह रत्नों में थी। इससे जो कुछ भी माँगा जाय देती है। यह गाय वसिष्ठ के पास थी।[1] एक बार कार्तवीर्य ने वसिष्ठ पर आक्रमण किया। कामधेनु ने तुरन्त बहुत से सैनिक ला खड़े किये। इसी गाय के लिए वसिष्ठ और विश्वामित्र में घोर युद्ध हुआ था। शबला, नंदिनी, कामदुहा तथा सुरभि आदि दूसरे और भी इसके नाम हैं।

कारून (या कारूँ)—प्रसिद्ध पैगम्बर मूसा के देश का निवासी एक कंजूस। एक मत से यह मूसा का चचेरा भाई था। यह बहुत सुंदर तथा कीमियागर था। इसके पास असंख्य धन था। इसके खज़ाने की कुंजियाँ ४० ऊँटों या खच्चरों पर चलती थीं। मूसा ने इससे कहा कि १००० दीनार कमाओ तो उसमें एक दीनार दान

---

[1]एक मत से वसिष्ठ के पास जो नंदिनी गाय थी वह कामधेनु न होकर कामधेनु की पुत्री थी।

कर दिया करो, पर इसने नहीं माना और उनसे लड़ाई की। क्रोधित होकर मूसा ने इसे शाप दिया और अपने पूरे धन के साथ यह पृथ्वी में धँस गया। कहा जाता है कि अब भी यह नीचे धँसता जा रहा है। इसी के नाम पर 'कारूँ का खजाना' मशहूर है।

कार्तवीर्य—कृतवीर्य का पुत्र, जिसके एक सहस्र हाथ थे। इसकी राजधानी माहिष्मती नगरी में थी। इसे तंत्र शास्त्र का आचार्य माना जाता है। रावण को इसने हराया था और अपने रनिवास में बन्द किया था। (दे० 'रावण') एक बार इसने जमदग्नि का आश्रम उजाड़ डाला जिससे क्रोधित हो परशुराम ने इसकी हजारों भुजाएँ काट कर इसे मार डाला।

सहस्रबाहु या सहस्रार्जुन भी इसी के नाम हैं।

कार्त्तिकेय—महादेव के पुत्र। इनका पालन चंद्रमा की स्त्री कृत्तिका के दूध से हुआ था, इसीलिए इनका नाम कार्त्तिकेय पड़ा। एक मत से कृत्तिका नक्षत्र में पैदा होने के कारण यह नाम पड़ा था। इनका जन्म तारकासुर के वध के लिए हुआ था। इस युद्ध में ये देवसेना के नायक थे। ब्रह्मा की पुत्री देवसेना से इनका विवाह हुआ था। ये स्कन्द भी कहे जाते हैं। इनका वाहन मयूर है जो परवाणी कहा जाता है। उस पर ये तीर धनुष लेकर बैठते हैं। कार्त्तिकेय की उत्पत्ति बिना स्त्री के हुई थी। शिव के वीर्य को अग्नि ने धारण किया और फिर गङ्गा ने। एक अन्यमत से पृथ्वी और कृत्रियों ने भी। इन्हीं कारणों से अग्निभू, गंगाज आदि भी इनके नाम हैं। दे० 'तारकासुर'।

कालनेमि—१. एक प्रसिद्ध राक्षस जिसने देवासुर संग्राम में कुबेर आदि लोकपालों को जीत स्वर्ग पर अधिकार कर लिया था और अपने शरीर को चार भागों में बाँट कर शासन करता था। यह विष्णु के हाथ से मारा गया।

२. एक राक्षस जो रावण का मामा था। रावण ने अपना आधा राज्य देने की लालच दे इसे हनुमान को मारने को भेजा। हनुमान जब संजीवनी लाने जा रहे थे तो गंधमादन पर्वत पर तपस्वी के रूप में यह मिला। हनुमान को पास के सरोवर में रहने वाली एक शापग्रस्त अप्सरा से इसकी यथार्थता का पता चला तो उन्होंने इसे उठाकर ऐसा फेंका कि वह लङ्का में रावण के सामने जा गिरा। दे० 'कालिय'

कालभैरव—शिव के एक अनुचर। ये काशी में पापियों को दंड देने के लिए रहते हैं। ब्रह्मा का पाँचवाँ मस्तक काटने के लिए इनका जन्म हुआ था।

कालयवन—गार्ग्य ऋषि का पुत्र जो गोपाली नामक अप्सरा के गर्भ से पैदा हुआ था। जरासंध के साथ ही इसने भी मथुरा पर चढ़ाई की; पर कृष्ण, यह जान कर कि मथुरा वालों से यह न मारा जायगा इसके सामने एक गुफा में घुस गए। उनका पीछा करता कालयवन भी भीतर घुसा। भीतर मुचकुंद सो रहा था। कालयवन ने उसी को कृष्ण समझकर जोर से लात मारी। लात लगते ही मुचकुंद उठा और उसकी दृष्टि के सामने पड़ते ही यह जल गया।

कालिय—कद्रू का पुत्र एक प्रसिद्ध सर्प। पहले यह रमण द्वीप में रहता था। एक बार गरुड़ से इसे हारना पड़ा और तब से मथुरा के पास यमुना में रहने लगा। इसमें इतना विष था कि आस-पास का पानी विषाक्त हो गया था। इसके पाँच फन थे। कृष्ण ने यमुना में कूद कर इससे युद्ध किया और इसे नाथा। वे इसे मारने जा रहे थे पर प्रार्थना करने पर इसे छोड़ दिया और यह वहाँ से अपने पूरे दल के साथ समुद्र में चला गया। एक मत से यह कालनेमि का अवतार था।

काश्यप—१. महाभारत कालीन एक प्रसिद्ध विष-चिकित्सा-विशारद। जब परीक्षित को सर्प काटने वाला था तो ये उन्हें बचाने के लिए राजधानी की ओर चले। रास्ते में इनकी परीक्षा के लिए तक्षक ने इनसे भेंट की। उसने एक हरे पेड़ को काट कर सुखा दिया पर इन्होंने तुरन्त उसे पहले से भी हरा कर दिया। इस पर तक्षक चिंतित हुआ। उसका परीक्षित को काटना बेकार हो जाता क्योंकि काश्यप उन्हें ठीक कर देता। काश्यप लोभी थे, अतः तक्षक ने और कोई युक्ति चलते न देख उन्हें बहुत धन दिया जिसके कारण वे लौट गए।

२. राम की सभा में काश्यप नाम का एक सभासद था। कुछ मतों से वह विदूषक था।

किन्नर—एक देव जाति। ये कैलाश पर स्थित कुबेरपुरी में रहते हैं। इनका सारा शरीर तो मनुष्यों सा होता है पर मुँह घोड़े सा। संगीतशास्त्र में ये प्रवीण कहे जाते हैं। इनकी उत्पत्ति ब्रह्मा के अंगूठे से मानी जाती है। ये लोग यक्षों के भाई भी कहे जाते हैं।

कीचक—मत्स्यराज विराट का साला तथा प्रधान सेनानायक। इसकी वीरता का आतंक सब के ऊपर था। जिस समय पाण्डव अज्ञातवास में विराट के यहाँ नौकर-रूप में रहते थे, द्रौपदी भी वहाँ दासी थी। कीचक द्रौपदी पर मोहित होगया और उसने अपने विचार इससे प्रकट किए। द्रौपदी ने भीमसेन से कहकर कीचक को रात में मरवा डाला।

कीर्त्ति—वृषभानु की स्त्री और राधा की माता। इन्हीं के आधार पर सूर आदि ने राधा को 'कीरति कुमारी' कहा है।

कुन्तिभोज—महाभारत के वीर योद्धा तथा पाण्डवों के सहायक। इनके कोई संतान न थी, इसीलिए इन्होंने शूरसेन की पुत्री

पृथा को गोद लिया। इनके नाम पर पृथा का वाद में नाम कुंती पड़ा। दे० 'कुंती'।

कुंती—शूरसेन की कन्या और वसुदेव की बहन। इसके चचा कुंतिभोज के कोई संतान न थी अतः उन्होंने इसे गोद लिया। इसका आरंभिक नाम पृथा था। कुंतिभोज के नाम पर यह कुंती नाम से प्रसिद्ध हुई। एक बार कुंती ने दुर्वासा ऋषि की सेवा की। ऋषि ने प्रसन्न हो एक ऐसा मंत्र बतलाया कि जिससे पाँच देवताओं में किसी भी देवता को बुलाया जा सकता था। एक दिन देखने के लिए कुंती ने सूर्य को बुलाया। वे सचमुच आ गए और कुमारी कुंती को उनसे गर्भ रह गया। कर्ण का जन्म इसी गर्भ से हुआ जिसे कुंती ने नदी में छोड़ दिया (दे० 'कर्ण')। कुंती का विवाह पांडु से हुआ पर उन्हें शाप था कि वे अपनी पत्नियों से भोग न कर सकेंगे। इसी कारण धर्मराज, वायु और इंद्र के साथ संयोग कर कुंती ने युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन ये तीन पुत्र पैदा किए। महाभारत युद्ध के बाद गांधारी और धृतराष्ट्र के साथ यह जंगल में चली गई जहाँ तीनों आग में जल गए।

कुंभकर्ण—विश्रवा और कैकसी का पुत्र और रावण का सहोदर भाई। इसने ब्रह्मा को प्रसन्न कर वर माँग लिया था कि मैं ६ महीने सोऊँ और केवल एक दिन के लिए भोजनार्थ उठूँ।

राम से जब रावण हारने लगा तो उसे कुंभकर्ण की सहायता की आवश्यकता पड़ी। कुंभकर्ण उस समय सो रहा था। किसी प्रकार जब उठाया गया तो २००० बोतल शराब पीने के बाद यह युद्ध-स्थल पर गया। वहाँ जाते ही सुग्रीव पर उसने बड़े जोर से पत्थर चलाया और उसे बंदी बना लिया। अन्त में राम से लड़ता हुआ यह मारा गया।

कुबेर—यक्षों के अध्यक्ष तथा शिव के मित्र। ये रावण के वैमातेय,

तथा विश्रवा और इलविला के पुत्र थे। रावण के पहले लंका में यही राज्य करते थे। बाद में इनकी राजधानी कुवेरपुरी या अलकापुरी में हो गई। कुवेर बहुत कुरूप थे। इनके तीन पैर एक आँख और केवल आठ दाँत थे। ये इंद्र की नवनिधियों के भंडारी हैं। विश्वकर्मा से इन्होंने लंका बनवाई थी। एक मत से कुवेर शिव के भंडारी हैं।

कुब्जा—एक कुबड़ी जो कंस के यहाँ अनुलेपन कार्य करने वाली दासी थी। कंस के धनुषयज्ञ में जाते समय कृष्ण ने मार्ग में इससे सुगन्ध अनुलेपन माँगा, जिसे यह कंस के यहाँ ले जा रही थी। कुब्जा ने वह प्रसन्नता पूर्वक दे दिया। कृष्ण ने प्रसन्न होकर इसका कुबड़ापन दूर कर इसे एक सुन्दरी बना दी। कहा जाता है कि बाद में इससे कृष्ण से प्रेम हो गया। भ्रमर गीतों में गोपियों ने कृष्ण के साथ कुब्जा को भी खरी-खोटी सुनायी है।

कुश—राम के दो पुत्रों में से एक, जिनका जन्म तपोवन में हुआ था। इनके छोटे भाई का नाम लव था। कुश का जन्म कुशा से हुआ था इसीलिए ये कुश कहलाए। राम की मृत्यु के बाद ये दोनों पुत्र दक्षिणी तथा उत्तरी कोशल के राजा हुए। कुश ने विन्ध्यप्रदेश में अपने नाम पर कुशावती या कुशस्थली नामक नगरी बसाई। 'दे० 'लव'।

कृत्या—तंत्रशास्त्र की एक राक्षसी, जिसे अपने शत्रु आदि को विनष्ट करने के लिए भेजा जाता है। ऋषि लोग प्रायः क्रोध में अपने बाल आदि से कृत्या उत्पन्न करते रहे हैं।

कृपाचार्य—गौतम ऋषि के वीर्य से उत्पन्न, जो सरकंडे पर पड़ गया था। अन्यत्र ये गौतम के पौत्र कहे गए हैं और इनका जन्म तपस्वी शारद्वत से होना लिखा है। शारद्वत अपने शिशु तथा कन्या को जंगल में छोड़ आए। राजा शान्तनु ने शिकार खेलते समय इन्हें

देखा और उठाकर घर ले आए। उनकी कृपा से पालन होने के कारण पुत्र का नाम कृप तथा पुत्री का कृपी रखा गया। कृपाचार्य ही कृप था। यह धनुर्विद्या का कुशल जानकार था और महाभारत के युद्ध में इसने कौरवों का पक्ष लिया था।

कृपी—यह कृपाचार्य की बहन थी। दे० 'कृपाचार्य'। द्रोणाचार्य का विवाह इसी से हुआ था। अश्वत्थामा कृपी के गर्भ से द्रोणाचार्य का औरस पुत्र था।

कृष्ण—ययाति के पुत्र यदु के वंश में उत्पन्न वसुदेव के पुत्र। इनकी माता का नाम देवकी था जो कंस के पिता उग्रसेन के भाई देवक की पुत्री थीं। इस प्रकार कृष्ण कंस के भांजे थे। कृष्ण के जन्म के समय कंस अपने पिता उग्रसेन को कैदकर स्वयं राज्य कर रहा था। देवकी के विवाह के समय ही कंस को आकाशवाणी से ज्ञात हो गया था कि उसकी मृत्यु देवकी के आठवें गर्भ से उत्पन्न बालक से होगी। इसी भय से उसने वसुदेव और देवकी को बंदीगृह में डाल रक्खा था और उनकी प्रत्येक संतान को मार डालता था। कृष्ण के जन्म[1] के समय वसुदेव पहले से होशियार थे और पैदा होते ही इन्हें गोकुल में नंद के घर रख आए और वहाँ से यशोदा की नवजात पुत्री को लाकर उनके स्थान पर सुला दिया। दूसरे दिन कंस ने उस पुत्री को देवकी के आठवें गर्भ का समझ हाथ से ऊपर उठा भूमि पर पटकना चाहा, पर वह ऊपर

---

[1] कृष्ण विष्णु के ८ वें अवतार थे। इन्हें पूर्ण अवतार कहा जाता है। महाभारतादि में इनके जन्म के संबंध में लिखा है कि विष्णु ने अपने सर से एक सफेद और एक श्याम दो बाल तोड़े और उन्हें रोहिणी और देवकी के गर्भ में डाल दिया। श्याम बाल से कृष्ण पैदा हुए और सफेद से बलराम।

उठते ही उड़ गई और जाते समय कहती गई कि तुम्हें मारने वाला पैदा हो चुका है और वह गोकुल में है। तब से कंस शंकित रहने लगा। उसने कृष्ण को मारने के बहुत से उपाय किए। पूतना तथा इस प्रकार के और भी कई असुर और असुर-स्त्रियाँ उन्हें मारने के प्रयास में उनके द्वारा मारी गईं। कृष्ण ने हयासुर, प्रलंबासुर, नरकासुर, जृम्भासुर तथा मुरु आदि और भी कई असुरों का वध किया। जमुना के एक कुंड में रहने वाले कालियनाग को नाथकर उसे वश में किया। अपनी कोई चाल सफल न होते देखकर कंस ने अक्रूर द्वारा इन्हें मथुरा बुलवाया जहाँ अक्रूर की प्रार्थना पर कृष्ण ने कंस का वध कर धरती का संकट दूर किया।

बाद में कृष्ण ने द्वारिका में यादवों का राज्य स्थापित किया और वहाँ रहने लगे। विदर्भकुमारी रुक्मिणी इनकी प्रधान रानी थी, जिससे प्रद्युम्न नामक पुत्र और चारुमती नाम की पुत्री उत्पन्न थी। स्यमंतक मणि के लिए जांबवंत को कृष्ण ने मारा और उसकी पुत्री जांबवती से विवाह किया। इनकी अन्य स्त्रियों में सत्यभामा भी प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि कृष्ण के कुल १६००० रानियाँ थीं जिनसे १८०,००० संतानें हुईं। 'राधा' भी इनकी एक प्रेमिका कही जाती हैं। दे० 'राधा'।

महाभारत युद्ध में कृष्ण ने पांडवों का पक्ष लिया था। ये अर्जुन के सारथी थे।

कृष्ण की मृत्यु एक बहेलिया के तीर से हुई।

दे० 'पूतना' 'जांबवान' 'जांबवती' 'स्यमंतक' 'कालिय' 'अघासुर'।

केकय—केकय देश के राजा जो कैकेयी के पिता और दशरथ के ससुर थे। जब दशरथ मरे तो भरत और शत्रुघ्न इन्हीं के यहाँ थे।

केतु—एक राक्षस जिसकी माता का नाम सिंहिका था। जिस समय समुद्र से अमृत निकला यह भी देवता का रूप धारण कर

देवताओं की पंक्ति में बैठ गया, परंतु सूर्य तथा चंद्रमा इस बात को जानते थे, अतः उन्होंने इस रहस्य को अन्य देवताओं से खोल दिया। विष्णु ने क्रोध में अपना सुदर्शन चक्र चलाया और इसके शरीर के दो भाग हो गए। पर, उस समय तक अमृत उसके मुँह में चला गया था अतः यह मरा नहीं और इसके दोनों भाग जीवित रहे। धड़ 'केतु' नाम से पुकारा गया तथा मस्तक 'राहु'। कहा जाता है कि उसी के प्रतिशोध के लिए राहु आज भी सूर्य और चंद्रमा को ग्रसता है जिसकी संज्ञा हम लोगों ने 'ग्रहण' दी है।

केसरी—एक वन्दर जिसकी स्त्री का नाम अंजनी था। हनुमान इसके क्षेत्रज पुत्र थे।

कैकेयी—केकय देश की राजकुमारी, अयोध्या नरेश दशरथ की कनिष्ठ पत्नी तथा भरत की माता। इसके अपूर्व रूप पर मोहित होकर दशरथ ने इससे विवाह किया था। वृत्रासुर संग्राम में कैकेयी ने दशरथ के रथ को गिरने से बचाया था और दशरथ ने प्रसन्न हो दो वर देने का वचन दिया था। राम के राज्याभिषेक के समय दासी मन्थरा के उसकाने पर इसने दोनों वर मांगे। एक के अनुसार भरत को राज्य-तिलक तथा दूसरे के अनुसार राम को १४ वर्ष का वनवास। उस समय भरत ननिहाल में थे। राम सुनते ही पिता के कहे बिना ही वन के लिए प्रस्तुत हो गए। सीता वा लक्ष्मण भी साथ में गए। भरत ननिहाल से लौटे तो कैकेयी पर बहुत बिगड़े और राजगद्दी पर बैठना अस्वीकार कर दिया।

कैटभ—कल्पांत में एक बार जब भगवान विष्णु योगनिद्रा में सो रहे थे तो उनके कान के मैल से मधु और कैटभ नाम के दो राक्षस उत्पन्न हुए। उस समय भगवान की नाभी से कमल निकला हुआ था और उस पर ब्रह्मा विराजमान थे। ये असुर ब्रह्मा को मारने की तैयारी करने लगे। यह देख ब्रह्मा बहुत डरे

और योगनिद्रा से प्रार्थना करने लगे। योग निद्रा ने असुरों से युद्ध किया पर पाँच सहस्र वर्ष बीत जाने पर भी उन्हें न मार सकी। तब विष्णु उनसे लड़ने लगे। विष्णु का लड़ना उन्हें इतना अच्छा लगा कि विष्णु से उन्होंने वर माँगने को कहा। इस पर विष्णु ने उनसे वर माँगा कि तुम दोनों मेरे हाथ से मरो। उन्होंने वर स्वीकार किया, अतः विष्णु ने अपने जंघों पर रखकर दोनों के सिर चक्र से काट डाले। कैटभ की कथा एक और प्रकार से भी प्रचलित है। ब्रह्मा ने एक बार विष्णु के कर्णमूल से दो राक्षसों को उत्पन्न किया। जन्म के समय ये दोनों अचेत थे। प्राण-संचार होने पर एक का शरीर कोमल तथा दूसरे का कड़ा निकला। अतः ये दोनों क्रमशः मधु एवं कैटभ कहलाए। अपने बल के कारण एकार्णव सागर पर इनका एकछत्र अधिकार हो गया। ब्रह्मा भी डर कर विष्णु के कमलनाभ में जा बैठे। परन्तु बाद में ब्रह्मा विष्णु तथा इन दोनों से युद्ध हुआ। विष्णु की युद्ध-कला से ये प्रसन्न हुए और वर माँगने को कहा। विष्णु ने वर माँगा कि तुम दोनों मेरे हाथ से मरो। इन्होंने वर स्वीकार किया और विष्णु के हाथ से मारे गये।

कौरव—कुरु धृतराष्ट्र तथा पाण्डु दोनों ही के पूर्वज थे परन्तु बाद में कौरव नाम केवल धृतराष्ट्र के १०० पुत्रों के लिए ही प्रयोग किया गया। कौरवों में दुर्योधन तथा दुःशासन आदि प्रधान थे।

कौशल्या—कोशल की राजकन्या और दशरथ की महारानी। ये राम की माता थीं। इन्हें अदिति का अवतार भी कहते हैं।

खर—रावण का एक भाई। यह १४ हज़ार राक्षसों को लेकर रावण के स्थान की रक्षा करता था। शूर्पणखा को जब लक्ष्मण ने नाक-कान-विहीन कर दिया तो उसके कहने पर खर, दूषण, त्रिशिरा तथा अपनी पूरी सेना को लेकर लड़ने गया और राम

के हाथ से वहीं पंचवटी में मारा गया। इसके मरने की खबर रावण को अकंपन ने दी थी।

ख़िज्र—एक मुसलमानी पैगंबर। इनके बारे में प्रसिद्ध है कि इन्होंने जीवन (अमृत) का झरना पा लिया है और उसे पीते रहते हैं। इसी कारण ये अमर हैं। ख़िज्र मूसा के साथी और सूफियों के सहायक कहे जाते हैं। पथ-प्रदर्शन करना इनका प्रधान कार्य है।

गङ्गा—१. शांतनु की एक पत्नी जिन्होंने इस शर्त पर विवाह किया था कि जो भी उनके दिल में आएगा करेंगी और यदि ज़रा भी शांतनु रोक-टोक करेंगे तो चली जायँगी। गंगा से शांतनु को सात संतानें हुईं। सातों को गंगा ने फेंक दिया। आठवीं वार भीष्म पैदा हुए तो शांतनु ने फेंकने से रोका। गंगा मान तो गई पर तुरन्त उनके यहाँ से शर्त के अनुसार चली गईं। गंगा के ये आठो पुत्र आठ वसु थे। दे० 'वसु'।

२. उत्तरी भारत की पवित्र नदी। पुराणों के अनुसार यह हिमालय की पुत्री तथा पार्वती की वहिन है। पहले इसका स्थान स्वर्ग था। परन्तु जब सगर के साठ हजार पुत्रों को तारने का प्रश्न आया, जो कपिल ऋषि के शाप से गंगासागर में मरे थे, तो गंगा के लाने का प्रयत्न किया गया। तीन पीढ़ियों के अनवरत परिश्रम के पश्चात् भगीरथ अपनी तपस्या के वल से गंगा को विष्णु के पैर से पृथ्वी पर लाने में सफल हुए। यहाँ पहले ये शिव की जटा में आईं और वहाँ से आगे वढ़ीं तो जह्नु ऋषि ने पी लिया। फिर वहुत कहने पर उन्होंने अपने जाँघ से इसे निकाला। गंगा सागर में पहुँच कर इन्होंने सगर-पुत्रों को तारा।

गंधर्व—देवताओं का एक भेद जो गाने वजाने और नाचने का काम करते हैं। अप्सराएँ भी इसी योनि की हैं। दे० 'अप्सरा'। प्रधान गंधर्वों में विश्वावसु, चित्ररथ, हाहा हूहू तथा तुंबुरु आदि

का नाम लिया जाता है। इनके नाम पर आजकल एक जाति भी प्रचलित है। कुछ वेश्याएँ अपने को गंधर्व जाति की वतलाती हैं।

गज—गज या गजेन्द्र की कथा के दो रूप मिलते हैं। एक रूप के अनुसार हाहा और हूहू नाम के दो गंधर्व थे। दोनों ही गान-विद्या में वहुत दक्ष थे। एक वार दोनों में इस वात पर विचार होने लगा कि दोनों में अच्छा गायक कौन है। इसके निर्णय के लिए वे देवल ऋषि के पास गए। ऋषि अपनी साधना में व्यस्त थे अतः उन्होंने इनकी वातों पर ध्यान नहीं दिया। इस अवहेलना के कारण दोनों गंधर्व देवल मुनि को गाली देने लगे। परिणाम-स्वरूप मुनि ने उन्हें शाप दिया और एक गज हो गया तथा दूसरा ग्राह।

गज एक दिन अपनी हथिनियों के साथ क्षीर सागर के किनारे त्रिकूट पर्वत पर स्थित एक तालाव में जल क्रीड़ा कर रहा था। हूहू गंधर्व जो शाप से ग्राह हो गया था उसी तालाव में था। उसने गज को पकड़ लिया। दोनों में सहस्रों वर्ष (कहीं-कहीं १२ हज़ार वर्ष) तक युद्ध होता रहा। अंत में पानी का जानवर न होने के कारण गज थक गया। उसने एक कमल का फूल तोड़ कर भगवान के नाम पर अर्पित किया और करुण स्वर में प्रार्थना की। भगवान इससे इतने द्रवित हुए कि उसके मुँह से अभी पूरा नाम भी नहीं निकल पाया था और वे अपना गरुड़ छोड़कर पैदल ही वहाँ दौड़े आए। भगवान ने गजेन्द्र की रक्षा की और ग्राह को मार डाला। दोनों मुक्त हो गए। गज तो मुक्त होकर भगवान का पार्षद हो गया और हूहू गंधर्व लोक में चला गया।

'सच्चे हृदय से पुकारने पर भगवान एक क्षण में आ जाते हैं।' इसके प्रमाण के लिए प्रायः इस कथा का उल्लेख साहित्य में मिलता है।

कथा का दूसरा रूप यह है कि ऋषि के शाप से मगर होने

वाला तो हूहू गंधर्व ही था, पर गज हाहा नामक गंधर्व न होकर कोई इन्द्रद्युम्न नामक राजा था, जिसे किसी अपराध के कारण किसी ऋषि ने शाप दे दिया था। शेष कथा पूर्ववत है।

गणिका—गणिका के नाम पर दो कथाएँ मिलती हैं।

(१) *पिंगला*—पिंगला नाम की एक वेश्या थी। एक दिन वह शृंगार कर आधी रात तक किसी धनी-मानी की प्रतीक्षा करती रही, पर कोई न आया। अन्त में वह चारपाई पर लेटकर सोचने लगी कि जितनी देर मैंने किसी व्यभिचारी की प्रतीक्षा में व्यर्थ के लिए विताया, यदि भगवान के नाम लेने में विताती तो कितना भला होता? यह विचार आते ही उसने अपनी वह वृत्ति छोड़ दी और भक्त हो गई। साथ ही उसने यह भी अनुभव किया कि आशा दुखों का मूल है। दे० 'पिंगला'।

(२) *जीवन्ती*—प्राचीन काल में जीवन्ती नाम की एक सुन्दरी थी। इसका पति एक वैश्य था जिसका नाम परशु था। जीवन्ती के पिता का नाम रघु था। पति के मरने पर जीवन्ती वेश्या हो गई और आजीवन इसने अपना जीवन व्यभिचार में विताया। इसे कोई संतान न थी अतः कुछ मन-वहलाव के लिए इसने एक तोता पाल रक्खा था। एक वार एक साधु इसके घर भिक्षा माँगने आए। उन्हें इसका जीवन देखकर वड़ी तरस आई चलते-चलाते साधु ने इससे अपने तोते को 'राम-राम' पढ़ाने के लिए कहा। तभी से जब भी इसे अवकाश मिलता यह तोते को 'राम-राम' पढ़ाया करती थी।

जीवन्ती राम का नाम केवल तोते को पढ़ाने के लिए लेती थी, किन्तु राम के उच्चारण मात्र का इतना प्रभाव हुआ कि मरने के वाद उसको स्वर्ग प्राप्त हुआ।

गणेश—एक देवता जिनका सारा शरीर तो मनुष्य का है पर सर हाथी का। इसके अतिरिक्त भी इनकी कुछ विशेषताएँ हैं। हाथियों की भाँति इनके दो दाँत न होकर केवल एक है और मनुष्यों की भाँति दो हाथ न होकर चार हैं। ये पार्वती के गर्भ से शिव के पुत्र हैं और इनकी सवारी चूहा है। इनके जन्म के विषय में कहा जाता है कि पार्वती को पहले पुत्र नहीं हो रहा था जिसके निवारण के लिए शिव ने पुण्यक व्रत रहने की आज्ञा दी। इससे उन्हें गर्भ रह गया और गणेश का जन्म हुआ। इस अवसर पर सभी देवता उपस्थित हुए। पार्वती के कहने पर शनि भी आए। परंतु उनको उनकी पत्नी का शाप था कि जिसको तुम देखोगे वह मर जायगा। फलस्वरूप उनके देखते ही गणेश का सर कट गया। पार्वती रोने लगीं और विष्णु को बुलाया गया। रास्ते में पड़े हाथी का मस्तक काटकर विष्णु ले आए और गणेश के धड़ में लगाकर उन्हें जीवित किया। इसी कारण इनका सर हाथी का हो गया। एक बार इस बात के लिए देवताओं में वादाविवाद हो रहा था कि सर्वप्रथम किस देव की पूजा हो। अन्त में तय यह हुआ कि जो सबसे पहले ब्रह्मांड घूमकर आ जायगा वही पूजा जायगा। सभी देवता अपने-अपने वाहन पर चले। गणेश चुपचाप बैठे रहे और राम शब्द लिखकर उसकी परिक्रमा कर ली। जब सब देव ब्रह्मांड घूमकर लौटे तो लोगों ने इनको वहाँ उपस्थित पाया। पूछने पर लोगों को जब इनकी बुद्धिमत्ता का पता चला तो सभी ने इनकी सराहना की और इनको विजयी घोषित किया गया। तभीसे सभी शुभ कार्यों में ये पहले पूजे जाते हैं। इनके एक रदन होने के विषय में कई मत हैं। एक मत से परशुराम से युद्ध में यह टूटा, दूसरे मत से रावण ने इसे तोड़ा था और तीसरे मत से व्यास का महाभारत लिखते समय लेखनी टूट गई। अतः ये अपना दाँत

तोड़कर उससे लिखने लगे। एक चौथा मत भी है कि कार्तिकेय ने यह दाँत तोड़ा था।

गरुड़—कश्यप तथा विनता के संयोग से उत्पन्न पक्षियों के राजा जो विष्णु के वाहन कहे जाते हैं। सूर्य के सारथी अरुण इन्हीं के भाई थे। अपनी माता को सौतेली माता के चंगुल से छुड़ाने के लिए अमृत लाने जब ये स्वर्ग जा रहे थे तो मार्ग में भूख लगी। ये कश्यप के पास गए और कुछ खाने को माँगा। उन्होंने लड़ते हुए एक हाथी तथा कच्छप को दिखलाया। ये उन्हें लेकर एक वटवृक्ष पर चले गए पर ज्यों ही बैठे पेड़ की डाल टूट गई। इन्होंने देखा कि उस पर अनेक ऋषि लटके हुए थे। ऋषियों की मृत्यु के भय से ये पुनः अपने पिता के पास गए। कश्यप के कहने पर ऋषिगण चले गए और गरुड़ ने भी मेरुपर्वत पर जाकर अपनी भूख बुझाई, फिर ये स्वर्ग पहुँचे। वहाँ अमृत के लिए इनसे देवताओं से युद्ध हुआ और ये देवों को हराकर अमृत लाए। गरुड़ को नागों का शत्रु कहा जाता है। कालिय नाग इन्हीं के भय से यमुना में रहने लगा था।

गांडीव—अर्जुन का प्रिय धनुप। एक बार अर्जुन ने अग्नि का अजीर्ण रोग मिटाया था जिस पर प्रसन्न होकर अग्नि ने गांडीव नामक धनुप इनको वरुण से दिलाया था। इस धनुप को ब्रह्मा ने बनाकर सोम को दिया था और सोम ने वरुण को।

अर्जुन जब वृद्धावस्था के कारण इतने निर्बल हो गए कि इस धनुप को चढ़ा भी न सकते थे तो उन्होंने मरने के पूर्व इसे वरुण को लौटा दिया था। दे० 'अर्जुन'

गांधारी—गांधार देश के राजा सुबल की कन्या जो धृतराष्ट्र की स्त्री और दुर्योधनादि की माता थीं। शिव के वरदान से इन्हें १०० पुत्र हुए थे। पातिव्रत धर्म के पालन में ये 'न भूतो न भविष्यति'

हैं। पति के अंधा होने के कारण विवाह के बाद ही इन्होंने आँखों पर पट्टी बाँध ली थी और आजन्म उसे नहीं खोला। महाभारत के युद्ध के बाद धृतराष्ट्र के साथ ये वन में चली गईं जहाँ आग में जलकर इनका प्राणांत हुआ।

गाधि—राजा कुशिक के पुत्र तथा विश्वामित्र के पिता। ये इन्द्र के अंश से उत्पन्न थे। इनकी कन्या सत्यवती को भृगु ने व्याहा था।

गायत्री—ब्रह्मा की दूसरी पत्नी। यों तो ब्रह्मा की बहुत सी पत्नियाँ थीं पर वास्तविक पत्नी सावित्री थीं। एक यज्ञ के अनुष्ठान के समय जब इंद्र सावित्री को बुलाने आए तो सखियों की अनुपस्थिति में जाना इन्होंने उचित नहीं समझा। परंतु यज्ञ के समय पत्नी का होना अनिवार्य था अतः इंद्र मर्त्यलोक से जाकर एक ग्वालिन ले आए जिसका नाम गायत्री था। इससे गांधर्व विवाह कर ब्रह्मा ने यज्ञ किया। ये वेदमाता हैं और गायकों की पालिका हैं। हिन्दू धर्म में इनका बड़ा महत्त्व है। इनके हाथों में कमल तथा मृगशृंग हैं।

गायत्री नाम का एक वैदिक छंद तथा एक मंत्र भी है।

गार्गी—गर्ग गोत्रीय एक स्त्री जो अत्यन्त विदुषी तथा ब्रह्मज्ञानी थी। राजा जनक की सभा में इसने याज्ञवल्क्य से शास्त्रार्थ किया था। बृहदारण्यक उपनिषद् में इसकी कथा आती है।

गालव—एक ऋषि जो विश्वामित्र के शिष्य थे। हरिवंश पुराण इन्हें विश्वामित्र का पुत्र मानता है। अपना अध्ययन समाप्त कर चुकने पर गालव ने गुरु विश्वामित्र से गुरु-दक्षिणा माँगने के लिए हठ किया। विश्वामित्र ने उनके हठ से चिढ़ कर गुरु-दक्षिणा में ८०० श्यामकर्ण घोड़े माँगे। गालव इधर-उधर बहुत घूमे पर कहीं प्राप्ति न हुई। अंत में गरुड़ के साथ राजा ययाति के पास गए परन्तु उन्होंने भी असमर्थता प्रकट की। बाद में ययाति ने अपनी

पुत्री माधवी को देकर कहा कि तुम इससे घोड़े पा जाओगे क्योंकि यह सुन्दर है और अनेक लोग इसे चाहेंगे। गालव माधवी के साथ सर्व प्रथम राजा हर्यश्व के पास गया जो पुत्र के इच्छुक थे। माधवी को लेकर राजा ने दो सौ घोड़े दिए और एक पुत्र लाभ के बाद माधवी को लौटा दिया। इसी प्रकार माधवी काशिराज दिवो-दास तथा राजा उशीनर के पास क्रमशः गई और एक-एक पुत्र उत्पन्न होने पर पुनः गालव के पास आ गई। इस प्रकार गालव को ६ सौ 'श्यामकर्ण घोड़े मिल गए। अधिक घोड़ों की आशा न देख कर गालव ने इन ६ सौ घोड़ों के साथ माधवी को ही २०० घोड़े के बराबर मान गुरु-दक्षिणा में दे दिया और इस प्रकार गुरु-बचन को पूरा किया। माधवी से विश्वामित्र को भी एक पुत्र हुआ जो अष्टक कहलाया। तदोपरान्त विश्वामित्र ने भी माधवी को लौटा दिया। माधवी अब भी कुमारी थी। गालव ने इसे इसके पिता के पास पहुँचाया और स्वयं जंगल में चले गए। अपने हठ के कारण गालव को इतनी परेशानी उठानी पड़ी।

गोवर्धन लीला—यह कृष्ण की एक लीला है। कृष्ण के पूर्व ब्रज के लोग इंद्र की पूजा करते थे। जब कृष्ण बड़े हुए तो उन्होंने इन्द्र की पूजा रोकवा दी और ब्रजवासियों को गोवर्धन पर्वत की पूजा करने की आज्ञा दी। अपनी पूजा न होते देख इंद्र को बड़ा दुःख हुआ और उन्होंने ब्रज पर मुसलाधार पानी बरसाना आरम्भ किया। पानी न रुकते देख कृष्ण इंद्र का कोप समझ गए और उन्होंने गोवर्धन पर्वत को अपनी उँगली पर छाते की तरह उठा लिया। उसके नीचे आकर सारे ब्रजवासियों ने अपनी रक्षा की। अंत में ब्रजवासियों तथा कृष्ण को झुकते न देख इंद्र बहुत लज्जित हुए और भागवत के अनुसार उन्होंने कृष्ण से क्षमा-याचना की।

गौतम—एक ऋषि जिनका विवाह अहल्या से हुआ था। एक

बार इंद्र ने चंद्रमा की सहायता से गौतम को रात में उनके घर से बाहर कर दिया और उनका स्वरूप धारण कर उनकी स्त्री के साथ संभोग किया। संभोग करके इंद्र जाने ही वाले थे कि गौतम आ गए। उन्होंने चंद्रमा को तो त्रिशूल से मारा जिसके कारण आज भी चंद्रमा के अंक में काला निशान है और इंद्र को सहस्र भग-वाला होने का शाप दिया। अपनी पत्नी अहल्या को भी शाप से उन्होंने पत्थर बना दिया। राम ने अपने चरणस्पर्श से जनकपुर जाते समय अहल्या का उद्धार किया। इंद्र भी धनुष-भंग के समय उनका दर्शन कर सहस्र भगवाले शाप से मुक्त हो गए। दे० 'अहल्या' 'इंद्र' 'चंद्रमा'।

ग्राह—दे० 'गज'।

घटोत्कच—भीम तथा हिडिम्बा के संयोग से इसका जन्म हुआ था। यह बड़ा वीर था और महाभारत के युद्ध में इसने पाण्डवों का साथ दिया। कौरव सेना में इसने कुहराम मचा दिया था। कर्ण ने इंद्र से शक्ति प्राप्त कर इसका वध किया था। दे० 'हिडिंबा'।

घृताची—स्वर्ग की एक प्रसिद्ध अप्सरा। इससे बहुत से ऋषियों से सम्बन्ध हुआ और संतानें उत्पन्न हुईं जिनमें प्रधान रुद्राश्व से १० पुत्र तथा कुशानाभ से १०० पुत्रियाँ हैं। एक मत से महर्षि व्यास भी इस पर मोहित हुए जिससे शुकदेव का जन्म हुआ।

चंड—चंड और मुंड दो भाई थे। चंड शंभासुर का सेना नायक था। यह भगवती दुर्गा के हाथों मारा गया।

चंडी—चंड नामक राक्षस के वध के कारण दुर्गा का नाम चंडी पड़ा। दे० 'दुर्गा'।

चंद्रमा—एक देवता। इनकी उत्पत्ति समुद्र-मंथन के समय समुद्र से हुई थी इसी कारण इन्हें लक्ष्मी का भाई या समुद्र का पुत्र कहते हैं। अमृत-पान के समय एक राक्षस चंद्रमा के पास

बैठकर अमृत पीने लगा। चन्द्रमा और सूर्य ने मिलकर और देवों से यह भेद खोल दिया। विष्णु ने उस पर अपना चक्र चला दिया। वह अमृत पी चुका था अतः मरा नहीं पर उसके शरीर के दो टुकड़े हो गए जो राहु और केतु कहलाए। उसी क्रोध से आज भी राहु चंद्रमा को ग्रसता है जो ग्रहण के नाम से प्रसिद्ध है। चंद्रमा के कलंक या धब्बे के विषय में कई मत हैं। एक के अनुसार चंद्रमा की सहायता से जब इंद्र ने गौतम-पत्नी अहल्या के साथ संभोग किया तो गौतम ने अपना त्रिशूल (एकमत से कमंडल) चंद्रमा पर चला दिया था और उसी का यह निशान है। एक अन्यमत से दक्ष प्रजापति के शाप से इन्हें राजयक्ष्मा रोग हो गया जिसकी शांति के लिए उन्होंने अपनी गोद में यह हिरण ले रक्खा है।

समुद्र-मंथन से निकला विष शंकर ने पान किया अतः उसकी गर्मी की शांति के लिए उन्हें चंद्रमा दिए गए। उन्होंने अपने सर पर तभी से चंद्रमा को रख रक्खा है।

पुराणों में चंद्रमा को अत्रि और अनुसूया का पुत्र कहा गया है। इनका विवाह नव नक्षत्रों से हुआ है जो दक्ष की कन्याएँ हैं। चंद्रमा की एक और स्त्री रोहिणी भी है। कालिका पुराण के अनुसार रोहिणी पर चंद्रमा का विशेष प्रेम था अतः दक्ष की पुत्रियों को बुरा लगा और दक्ष क्रुद्ध हुए जिससे उनके नासिकाग्र से यक्ष्मा रोग निकला और चंद्रमा के शरीर में घुस गया तभी से वे क्षीण होने लगे। फिर उन्होंने अपनी भूल का अनुभव कर सब स्त्रियों के साथ बराबर प्रेम करना शुरू किया और तब से महीने में १५ दिन क्षीण होते हैं और १५ दिन बढ़ते हैं।

कुछ अन्य मतों से चंद्रमा धर्म या प्रभाकर के भी पुत्र कहे जाते हैं। चंद्रमा देवगुरु बृहस्पति की स्त्री तारा को हर लाए थे। इन्हें उनसे बुध नामक पुत्र भी हुआ। दे० 'तारा'।

बार इंद्र ने चंद्रमा की सहायता से गौतम को रात में उनके घर से बाहर कर दिया और उनका स्वरूप धारण कर उनकी स्त्री के साथ संभोग किया। संभोग करके इंद्र जाने ही वाले थे कि गौतम आ गए। उन्होंने चंद्रमा को तो त्रिशूल से मारा जिसके कारण आज भी चंद्रमा के अंक में काला निशान है और इंद्र को सहस्र भग-वाला होने का शाप दिया। अपनी पत्नी अहल्या को भी शाप से उन्होंने पत्थर बना दिया। राम ने अपने चरणस्पर्श से जनकपुर जाते समय अहल्या का उद्धार किया। इंद्र भी धनुष-भंग के समय उनका दर्शन कर सहस्र भगवाले शाप से मुक्त हो गए। दे० 'अहल्या' 'इंद्र' 'चंद्रमा'।

ग्राह—दे० 'गज'।

घटोत्कच—भीम तथा हिडिम्बा के संयोग से इसका जन्म हुआ था। यह बड़ा वीर था और महाभारत के युद्ध में इसने पाण्डवों का साथ दिया। कौरव सेना में इसने कुहराम मचा दिया था। कर्ण ने इंद्र से शक्ति प्राप्त कर इसका वध किया था। दे० 'हिडिंबा'।

घृताची—स्वर्ग की एक प्रसिद्ध अप्सरा। इससे बहुत से ऋषियों से सम्बन्ध हुआ और संतानें उत्पन्न हुईं जिनमें प्रधान रुद्राश्व से १० पुत्र तथा कुशानाभ से १०० पुत्रियाँ हैं। एक मत से महर्षि व्यास भी इस पर मोहित हुए जिससे शुकदेव का जन्म हुआ।

चंड—चंड और मुंड दो भाई थे। चंड शंभासुर का सेना नायक था। यह भगवती दुर्गा के हाथों मारा गया।

चंडी—चंड नामक राक्षस के वध के कारण दुर्गा का नाम चंडी पड़ा। दे० 'दुर्गा'।

चंद्रमा—एक देवता। इनकी उत्पत्ति समुद्र-मंथन के समय समुद्र से हुई थी इसी कारण इन्हें लक्ष्मी का भाई या समुद्र का पुत्र कहते हैं। अमृत-पान के समय एक राक्षस चंद्रमा के पास

बैठकर अमृत पीने लगा। चन्द्रमा और सूर्य ने मिलकर और देवों से यह भेद खोल दिया। विष्णु ने उस पर अपना चक्र चला दिया। वह अमृत पी चुका था अतः मरा नहीं पर उसके शरीर के दो टुकड़े हो गए जो राहु और केतु कहलाए। उसी क्रोध से आज भी राहु चंद्रमा को ग्रसता है जो ग्रहण के नाम से प्रसिद्ध है। चंद्रमा के कलंक या धब्बे के विषय में कई मत हैं। एक के अनुसार चंद्रमा की सहायता से जब इंद्र ने गौतम-पत्नी अहल्या के साथ संभोग किया तो गौतम ने अपना त्रिशूल (एकमत से कमंडल) चंद्रमा पर चला दिया था और उसी का यह निशान है। एक अन्यमत से दक्ष प्रजापति के शाप से इन्हें राजयक्ष्मा रोग हो गया जिसकी शांति के लिए उन्होंने अपनी गोद में यह हिरण ले रक्खा है।

समुद्र-मंथन से निकला विष शंकर ने पान किया अतः उसकी गर्मी की शांति के लिए उन्हें चंद्रमा दिए गए। उन्होंने अपने सर पर तभी से चंद्रमा को रख रक्खा है।

पुराणों में चंद्रमा को अत्रि और अनुसूया का पुत्र कहा गया है। इनका विवाह नव नक्षत्रों से हुआ है जो दक्ष की कन्याएँ हैं। चंद्रमा की एक और स्त्री रोहिणी भी है। कालिका पुराण के अनुसार रोहिणी पर चंद्रमा का विशेष प्रेम था अतः दक्ष की पुत्रियों को बुरा लगा और दक्ष क्रुद्ध हुए जिससे उनके नासिकाग्र से यक्ष्मा रोग निकला और चंद्रमा के शरीर में घुस गया तभी से वे क्षीण होने लगे। फिर उन्होंने अपनी भूल का अनुभव कर सब स्त्रियों के साथ बराबर प्रेम करना शुरू किया और तब से महीने में १५ दिन क्षीण होते हैं और १५ दिन बढ़ते हैं।

कुछ अन्य मतों से चंद्रमा धर्म या प्रभाकर के भी पुत्र कहे जाते हैं। चंद्रमा देवगुरु बृहस्पति की स्त्री तारा को हर लाए थे। इन्हें उनसे बुध नामक पुत्र भी हुआ। दे० 'तारा'।

चामुंडा—दुर्गा का एक रूप जिनके हाथ से शुंभ और निशुंभ के चंड और मुंड नाम के दो सेनापतियों का संहार हुआ था। दे० 'दुर्गा'।

चार्वाक—प्राचीन काल का एक अनीश्वरवादी संप्रदाय। इसको महर्षि बृहस्पति ने आरम्भ किया था परन्तु उनके शिष्य चार्वाक के कारण ही इसका प्रचार हुआ अतः इसे चार्वाक मत कहते हैं। इसकी उत्पत्ति के विषय में मिलता है कि बृहस्पति ने दैत्यगुरु शुक्राचार्य का रूप धारणकर दैत्यों की बुद्धि भ्रष्ट करने के लिए इसको चलाया था। इसमें परलोक तथा ईश्वर का विधान नहीं है। इनके अनुसार शरीर से पृथक् आत्मा का अस्तित्व नहीं है और इस संसार में सुखप्राप्ति ही परमपुरुषार्थ है। इस मत के प्रवर्तक 'चार्वाक' की बोली मीठी थी अतः उनका नाम चारुवाक या चार्वाक पड़ा। चार्वाक शब्द का प्रयोग व्यक्ति और संप्रदाय दोनों ही रूप में होता है।

चित्रगुप्त—चौदह यमराजों में से एक जो जीवों के पाप-पुण्य का हिसाब रखते हैं। जिस समय ब्रह्मा सृष्टि के पश्चात् ध्यानमग्न थे उनके शरीर से एक पुरुष कलम-दावात लिये उत्पन्न हुआ। उसने अपना कार्य पूछा तो ब्रह्मा ने कहा कि तुम यमराज के पास जाकर मनुष्यों के कार्य का लेखा-जोखा रखो। ब्रह्मा के काय से इनका जन्म हुआ इसलिए ये कायस्थ कहे गए। कहा जाता है कि कायस्थों के ये ही आदि पुरुष हैं। चित्रगुप्त के नागर, भट्ट, सेनक, गौड़, श्रीवास्तव, अभिष्ठान, माथुर, अंबष्ट तथा शैकसेन आदि कई पुत्र कहे जाते हैं। कायस्थ लोग यमद्वितीया को कलम-दावात तथा चित्रगुप्त की पूजा करते हैं।

चित्रांगद—भीष्म के सौतेले भाई तथा महाराजा शान्तनु के पुत्र। शान्तनु की मृत्यु के बाद इन्होंने ही राजगद्दी ली क्योंकि भीष्म

ने पहले से राजा न बनने का प्रण कर लिया था। चित्रांगद नाम के गंधर्व के साथ युद्ध करते समय इनकी मृत्यु हुई थी। इनके बड़े भाई का नाम विचित्रवीर्य था। दे० 'सत्यवती'।

चित्रांगदा—अर्जुन की एक पत्नी जो मणिपुर के राजा चित्रवाहन की कन्या थी। इसके गर्भ से बभ्रुवाहन नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ था जो अपने ननिहाल में राजा बनाया गया। दे० 'बभ्रुवाहन' 'उलूपी'।

च्यवन—भास्कर के सोलह शिष्यों में से एक। ये एक प्राचीन वैद्य हैं। इनका एक ग्रंथ 'जीवदान' नाम का है। इनके पिता का नाम भृगु तथा माता का नाम पुलोमा था। जब ये गर्भ में थे तो एक दिन एक राक्षस इनकी माता को हरण करने आया। ये तुरन्त गर्भ से निकल आए और अपनी माता की रक्षा की। अपने आप गर्भ से निकल आने के कारण ही इनका नाम च्यवन पड़ा। इनका विवाह शर्याति की पुत्री सुकन्या से हुआ था। उस समय ये वृद्ध थे पर अश्विनीकुमारों के आशीर्वाद से नवजवान हो गए।

छाया—सूर्य की पत्नी का नाम संज्ञा था, जिसके गर्भ से यमुना तथा यम की उत्पत्ति हुई थी। सूर्य के प्रचंड तेज को न सह सकने के कारण संज्ञा अपनी छाया सूर्य के पास रखकर स्वयं अपने पिता विश्वकर्मा के पास चली गई। विश्वकर्मा ने संज्ञा को बहुत फटकारा और लौट जाने को कहा परन्तु वह सूर्य के पास न जाकर उत्तरापथ में घोड़ी का रूप धारण कर तपस्या करने लगी। सूर्य ने संज्ञा की छाया को संज्ञा समझ उसके साथ संभोग कर सावर्णि और शनैश्चर नाम की दो संतानें उत्पन्न कीं। अब छाया अपनी संतानों के प्रति तो प्रेम रखने लगी और यमुना तथा यम आदि के प्रति उपेक्षा भाव। यह देख सूर्य को रहस्य का पता चला और वे घोड़ा का रूप धारण कर घोड़ी रूप में तपस्या करती

अपनी स्त्री संज्ञा के पास गए और उसके साथ संभोग कर अश्विनीकुमारों को उत्पन्न किया। छाया के यथार्थ रूप संज्ञा का कहीं-कहीं 'प्रभा' या त्वष्टा नाम भी मिलता है।

छिन्नमस्ता—एक देवी। इनका स्वरूप विचित्र है। इन्होंने अपना सर काटकर अपने बाएँ हाथ में ले रक्खा है और गले से निकलते रुधिर को अपने कटे सर की जीभ से चाट रही हैं। इनके दाएँ हाथ में कृपाण है। स्त्री और पुरुष का मैथुनरत युग्म ही इनका वाहन है।

जंभ—महिषासुर का पिता। इसे इंद्र ने मारा था।

जटायु—गरुड़ का भतीजा, अरुण का पुत्र और संपाती का भाई। एक गृद्धपक्षी जो राम का भक्त कहा जाता है। इसकी माता का नाम श्येनी था। दशरथ से इसकी मित्रता थी। जिस समय रावण सीता का हरण कर ले जा रहा था जटायु ने उसे रोका, परंतु रावण ने इसके पंखों को काट कर इसे घायल कर दिया और सीता को ले गया। राम जब सीता को ढूँढ़ते हुए इसके पास पहुँचे तो इसने सारी कथा कह सुनाई और सुनाते ही इसके प्राण निकल गए। राम ने इसकी अंत्येष्टि क्रिया अपने हाथ से की।

जटासुर—महाभारतकालीन एक राक्षस। पाण्डव एक बार बद्रिकाश्रम में ठहरे थे। वहीं जटासुर ने द्रौपदी को देखा और उस पर मोहित हो गया। यह भीम से डरता था। अतः एक बार उनकी अनुपस्थिति में वह ब्राह्मण का वेष धर द्रौपदी को हरने आया और युधिष्ठिर आदि को कैद कर द्रौपदी को लेकर चला। संयोग से रास्ते में ही भीम मिल गए। उन्होंने इसे मार डाला।

जड़भरत—एक ब्राह्मण जो बहुत ज्ञानी थे और जड़वत रहते थे। पुराणों के अनुसार राजा भरत जब गृहस्थाश्रम त्याग वानप्रस्थी हुए तो उन्होंने एक हिरन के बच्चे को पाल लिया। उससे इनमे

इतना प्रेम हो गया कि मरते समय भी इनका चित्त उससे लगा रहा और मरने पर फिर उनका एक ब्राह्मण के घर में हिरण योनि में जन्म हुआ। ज्ञान के कारण उन्हें पूर्व जन्म की बातें याद थीं। सांसारिकता से बचने के लिए वे जड़वत रहते थे, इसीलिए उन्हें जड़भरत की संज्ञा मिली। एक बार लोगों ने इन्हें पागल समझ कर सौवीर राज की पालकी में लगा दिया। रास्ते में इन्होंने ऐसी ज्ञानपूर्ण बातें कीं कि सौवीर राज ने पालकी से उतर कर इनसे क्षमायाचना की।

जनक—मिथिला के एक सूर्यवंशीय राजा। ये अपने पूर्वज निमि, विदेह के नाम पर विदेह भी कहे जाते हैं। वशिष्ठ के शाप से राजा निमि भस्म हो गए थे और उनके राज्य का कोई उत्तराधिकारी न था इसलिए उनके मृत शरीर से एक कुमार उत्पन्न किया गया जो स्वयं पैदा होने के कारण जनक कहलाया। इन्होंने मिथिलापुरी बसायी। इन्हीं की बीस पीढ़ी बाद दूसरे राजा जनक पैदा हुए जो बड़े ज्ञानी तथा गृहस्थाश्रम में रहते हुए भी विरक्त थे। इसी कारण राजर्षि कहलाते थे। सीता इन्हीं की पुत्री थीं। इन्हें इनके पूर्वज जनक से अलग करने के लिए सीरध्वज जनक भी कहते हैं। इनके कई भाई थे।

जनमेजय—अर्जुन के पौत्र तथा परीक्षित के पुत्र। परीक्षित की मृत्यु साँप के काटने से हुई थी इसलिए जनमेजय ने सर्पों के नाश के लिए एक नागयज्ञ किया। तक्षक, जिसने परीक्षित को काटा था, भय से इन्द्रलोक चला गया। सर्पराज वासुकि ने आस्तीक को यज्ञ बन्द कराने के लिए भेजा। जनमेजय ने आस्तीक से कहा कि यदि इन्द्र तक्षक को नहीं छोड़ते तो इन्द्र सहित वह भस्म होगा। इस भय से इन्द्र ने उसे छोड़ दिया। जब बहुत से सर्प आकर उस सर्प कुंड में गिर-गिर कर भस्म होने लगे तो आस्तीक ने जो स्वयं भी

सर्प था, अपने कुल की रक्षा के लिए परीक्षित से बहुत प्रार्थना की और अंत में उसके कहने से इन्होंने सर्प-यज्ञ बंद कर दिया।

जमदग्नि—एक प्राचीन ब्रह्मर्षि। ये भृगु के पुत्र ऋचीक के पुत्र थे।

कहा जाता है कि एक बार कुशिक पर प्रसन्न होकर इंद्र ने उनके यहाँ गाधि नाम से उत्पन्न होना स्वीकार किया। गाधि जब बड़े हुए तो उन्हें सत्यवती नाम की एक कन्या हुई, जिसका विवाह भृगुमुनि के पुत्र ऋचीक से हुआ। एक बार ऋचीक बहुत प्रसन्न हुए और इन्होंने अपनी सास तथा स्त्री के लिए दो चरु तैयार किए। उन्हें खाने से सास को वीर, क्रूर प्रचंड और राजों को जीतने वाला पुत्र होता तथा उनकी स्त्री को शांत और गंभीर। भूल से ऋचीक की स्त्री सत्यवती ने अपनी माँ का भाग खा लिया और उसकी माँ ने सत्यवती का। जब सत्यवती को अपनी भूल ज्ञात हुई तो उसने ऋचीक से प्रार्थना की कि मेरा पुत्र क्रूर, प्रचंड आदि न हो बल्कि पौत्र हो। ऋचीक ने उसकी प्रार्थना स्वीकार की और उसके गर्भ से जमदग्नि की उत्पत्ति हुई। जमदग्नि बड़े ज्ञानी और विद्वान थे। इनका विवाह प्रसेनजित की पुत्री रेणुका से हुआ जिससे इन्हें रुमन्वान्, सुषेण, वसु, विश्वावसु तथा परशुराम ये पाँच पुत्र हुए। सत्यवती की प्रार्थना के अनुसार वीर, तेजस्वी, क्रोधी और क्रूर परशुराम था। जमदग्नि की आज्ञा पाकर परशुराम ने रेणुका को मार डाला था पर फिर परशुराम के वरदान मांगने पर उन्हें जमदग्नि ने जीवित किया। परशुराम ने जब सहस्रार्जुन की सहस्र भुजाओं को काट डाला तो उनके कुटुंबियों ने एक दिन प्रतिशोध स्वरूप जमदग्नि को मार डाला।

जयंत—इंद्र और शची का पुत्र। कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न से इसका युद्ध हुआ था। जयन्त ने ही कौवे का वेष बनाकर सीता को चोंच

से मारा था, जिसके फलस्वरूप रामचंद्र ने उसे मारना चाहा परन्तु वह उन्हीं की शरण में आगया। राम ने प्राण-भिक्षा तो दे दी परन्तु उसकी एक आँख निकाल ली और जयन्त काना हो गया। जयन्त को उपेन्द्र भी कहते हैं।

जय—विष्णु के दो द्वारपालों में से एक। एक बार इसने सनकादि ऋषियों को विष्णु से मिलने से रोका था जिससे रुष्ट हो ऋषियों ने इसे शाप दे दिया। पीछे से उन्होंने जय की मुक्ति का मार्ग भी बतलाया कि विष्णु से शत्रुता या मित्रता करने से तुम्हारी मुक्ति होगी। ऋषि के शाप से जय सत्ययुग, त्रेता तथा द्वापर में क्रमशः हिरण्याक्ष, रावण तथा शिशुपाल हुआ था और शत्रुता कर विष्णु के हाथ मारे जाने पर इसकी मुक्ति हुई। इसके साथी या भाई, दूसरे द्वारपाल का नाम विजय था। दे० 'विजय'।

जयद्रथ—सिंधु देश का राजा और दुर्योधन का जीजा। पांडवों के काम्यक वन में वास के समय जयद्रथ ने धोखे से द्रौपदी को हर लिया था। इस पर भीम तथा अर्जुन ने उसकी बड़ी दुर्दशा की और द्रौपदी को मुक्त किया। इसका बदला लेने के लिए जयद्रथ ने तपस्या द्वारा शिव को प्रसन्न किया। शिव ने वर दिया कि तुम अर्जुन को छोड़कर सभी पाण्डवों को हरा सकोगे। इस वर के फलस्वरूप उसने चक्रव्यूह में पड़े अभिमन्यु का वध किया जिसके बदले के लिए अर्जुन ने जयद्रथ को सूर्यास्त के पूर्व मारने की प्रतिज्ञा की। यह सुन कौरवों ने उसे छिपा दिया, परन्तु कृष्ण ने छल से सूर्य को रोक दिया और सूर्यास्त जान जयद्रथ बाहर निकल आया। कृष्ण ने जयद्रथ को सामने देख सूर्य को फिर प्रकट कर दिया और अर्जुन ने जयद्रथ का वध कर अपना प्रण पूरा किया। दे० 'दुःशला'

जरत्कारु—एक ऋषी जो सर्पराज वासुकी के जीजा और

जनमेजय का नागयज्ञ बन्द कराने वाले आस्तीक के पिता थे। एक दिन इनकी स्त्री मनसा ने इन्हें शाम को सोते समय उठा दिया जिससे क्रोधित होकर ये कहीं चले गए। उस समय आस्तीक गर्भ में था।

जरासंध—मगधराज बृहद्रथ का पुत्र और कंस का ससुर। जरासंध का जन्म चन्डकौशिक ऋषि के आशीर्वाद से हुआ था। ऋषि ने बृहद्रथ को एक फल दिया था जिसको उन्होंने अपनी दो रानियों में आधा-आधा बाँट दिया जिसके फलस्वरूप दोनों रानियों से आधे-आधे पुत्र हुए परन्तु श्मशानवासिनी जरा नामकी एक राक्षसी ने उन दो आधों को जोड़ कर पूर्ण पुत्र बना दिया और बालक का नाम जरासंध पड़ा। जरासंध ने अपनी दो पुत्रियों अस्ति तथा प्राप्ति का विवाह कंस से किया था। इसकी सहायता से कंस ने अपने पिता को गद्दी से उतार दिया और स्वयं राजा बन बैठा। जरासंध को यह वर मिला था कि उसकी मृत्यु यों न होकर जोड़ी गई संधियों के टूटने से होगी। कंस को जब कृष्ण ने मार डाला तो बदला लेने के लिए जरासंध ने उन पर आक्रमण किया पर जरासंध के भय से कृष्ण द्वारका चले गए। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के समय कृष्ण, अर्जुन, भीम तथा युधिष्ठिर आदि जरासंध की राजधानी गिरिव्रज में गए। वहाँ भीम से इनसे द्वन्द्व युद्ध हुआ और भीम ने कृष्ण के इशारे पर बीच से चीर कर इसे मार डाला।

जल-प्लावन—संसार का जल-मग्न हो जाना। सभी धर्मों में जल-प्लावन की बात किसी न किसी रूप में मिलती है। जल-प्लावन प्रलय के समय होता है। हिंदू पुराणों के अनुसार जल-प्लावन में सब कुछ डूब गया था। मत्स्यावतार के सहारे मनु केवल एक नाव पर बैठे थे। दे० 'मनु' 'मत्स्य'। मुसलमानों और ईसाइयों के अनुसार जल-प्लावन के समय हज़रत नूह एक नाव में सब जीवों

का एक-एक जोड़ा लेकर बचे रहे। दे० 'नूह'। आधुनिक हिंदी काव्य के गौरव ग्रंथ कामायनी में जल-प्लावन का सुंदर चित्र है।

जह्नु—एक राजर्षि। इनके पिता का नाम सुहोत्र तथा माता का नाम केशिनी था। जिस समय ये सर्वमेध यज्ञ कर रहे थे, गङ्गा इनके पास गईं तथा इनसे अपना पति बनने की प्रार्थना करने लगीं, परन्तु इन्होंने अस्वीकार कर दिया। इस पर गङ्गा ने इनके यज्ञस्थल को ही डुबाने की सोची यह देख जह्नु ने गंगा को पी लिया। भगीरथ के बहुत कहने पर जह्नु ने इन्हें अपने जानु से निकाला और तब गङ्गा आगे बढ़ीं। तभी से गंगा का एक नाम 'जाह्नवी' भी पड़ गया। एक अन्य मत से गंगा को लेकर भगीरथ जब गंगा सागर की ओर बढ़े जहाँ सगर के पुत्र जले थे तो रास्ते में जह्नु मुनि यज्ञ कर रहे थे। गंगा के पानी से उनके यज्ञ में विघ्न पड़ा अतः वे गंगा को पी गए पर फिर जैसा कि ऊपर कहा गया है, भगीरथ की प्रार्थना पर गङ्गा को उन्होंने अपने जानु से निकाल दिया।

जांववती—कृष्ण की एक पत्नी। सत्राजित के पास स्यमन्तक नाम की एक मणि थी। उनके छोटे भाई प्रसेन को मार कर एक सिंह ने और सिंह को मार कर जांववान ने वह मणि ले ली। सत्राजित ने कृष्ण पर संदेह किया कि इन्होंने ही मणि के लिए प्रसेन को मार डाला है। कृष्ण अपना कलंक छुड़ाने के लिए प्रसेन को खोजने निकले और गुहा में जाकर देखा कि सिंह तथा प्रसेन मरे हैं और जांववान की पुत्री जाम्बवती उस मणि से खेल रही है। वहाँ कृष्ण और जाम्बवान का युद्ध हुआ परंतु जाम्बवान हार गया और उसने जाम्बवती तथा स्यमन्तक मणि कृष्ण के चरणों में अर्पित कर दी।

जांववान—ऋक्षों का राजा तथा ब्रह्मा का पुत्र। त्रेता में यह

सुग्रीव का सेनापति था। द्वापर में इससे और कृष्ण से एक मणि के लिए युद्ध हुआ था। इसकी पुत्री जांववती का विवाह कृष्ण से हुआ था। दे० 'जांववती' 'स्यमंतक'।

जिब्रील—स्वर्ग के एक दूत। ये खुदा की ओर से हर एक पैगम्बर के पास हुक्म लेकर जाया करते थे।

जुलेखा—मिश्र की राजकुमारी जो यूसुफ से प्रेम करती थी। दे० 'यूसुफ'।

ज्वर—एक विचित्र दैत्य। शिव ने दैत्यराज बाण की सहायता के लिए इसको भेजा था। जब कृष्ण अनिरुद्ध की सहायतार्थ बाण के पास गए थे तो ज्वर ने उनको पीड़ित कर दिया था। क्रोध में कृष्ण ने एक नए ज्वर का निर्माण किया जिससे यह लज्जित हो गया। कृष्ण ने बाद में इसे छोड़ दिया और वर दे दिया कि संसार में तुम्हें छोड़ दूसरा ज्वर न रहेगा। तब से यह संसार में है। एक दूसरी कथा के अनुसार दक्ष प्रजापति ने जब यज्ञ में शिव को न निमंत्रित कर उनका अपमान किया तो क्रुद्ध होकर शिव ने अपने श्वास से यज्ञ-विध्वंसनार्थ इस ज्वर को उत्पन्न किया था।

तक्षक—पातालपुरी के श्रेष्ठ आठ नागों में एक, जो कश्यप और कद्रू का पुत्र था। ऋषि का शाप पूरा करने के लिए इसी ने राजा परीक्षित को काटा था। जब परिक्षित का पुत्र जनमेजय अपने पिता का बदला लेने के लिए सर्प यज्ञ करने लगा तो यह डर कर इन्द्र के पास चला गया। पर यह सुन कर जनमेजय ने अपने पुरोहितों को आज्ञा दी कि ऐसा मंत्र पढ़ो कि इंद्र के साथ ही तक्षक आकर कुण्ड में गिरे और भस्म हो जाय। पुरोहितों ने ऐसा ही किया तो इंद्र डरे और उन्होंने तक्षक को छोड़ दिया। अब तक्षक कुण्ड की ओर गिरने लगा। वासुकि ने कोई उपाय न देख अपने भांजे आस्तीक को जनमेजय के पास यज्ञ रोकने के लिए भेजा।

आस्तीक इसमें सफल हुआ और इस प्रकार तक्षक के प्राण बचे। दे० 'आस्तीक', 'परीक्षित'।

ताड़का—सुकेतु नामक एक वीर यक्ष की पुत्री। ब्रह्मा के आशीर्वाद से इसका जन्म हुआ था। इसका पति सुन्द अगस्त्य के शाप से मारा गया था। ताड़का अपने पुत्र मारीच के साथ अगस्त्य को मारने गई, परन्तु ऋषि ने इसे राक्षस बना दिया। तब से इनका काम ब्राह्मणों का विनाश करना हो गया। जब तड़का के कारण जंगल में ऋषियों का रहना दुर्लभ हो गया तो इसके वध के लिए विश्वामित्र, राम तथा लक्ष्मण को दशरथ से माँग कर, ले आए। पहले तो राम स्त्री जान कर इसे मारने में संकोच कर रहे थे पर विश्वामित्र के कहने पर उन्होंने इसका वध किया।

तारकासुर—देवताओं का शत्रु एक असुर जो वज्रांक का पुत्र था। तप द्वारा ब्रह्मा से इसने वर प्राप्त किया था कि संसार में इसकी बराबरी का बलवान कोई दूसरा न हो और इसकी मृत्यु केवल शिव के पुत्र द्वारा हो। इसने देवताओं को बड़ा परेशान किया। देवता लोग ब्रह्मा के पास गए परन्तु वे अपने वरदान से हार चुके थे। अतः शिव के पुत्र-लाभ की बात सोची जाने लगी। देवता लोगों के कहने से कामदेव शिव के सामने उन्हें उत्तेजित करने गए परन्तु शिव के ध्यान टूटते ही उनका त्रिनेत्र खुला और कामदेव जल गए। पार्वती से विवाह होने पर भी जब बहुत दिन तक कोई पुत्र न हुआ तो देवता लोग बड़े चिंतित हुए। अन्त में वे लोग अग्नि के पास गए और अग्नि ने कपोत रूप धारण कर शिव के वीर्य को धारण किया जिससे शिव के पुत्र कार्तिकेय हुए इन्हीं कार्तिकेय द्वारा तारकासुर मारा गया। दे० 'कार्तिकेय'।

तारा—१. बालि की पत्नी तथा अंगद की माता। जब राम ने बालि का वध कर दिया तो इसने अपना ब्याह सुग्रीव से किया।

यह पंच देव-कन्याओं में है। २. बृहस्पति की स्त्री जिसे उसकी इच्छानुसार चंद्रमा ने रख लिया था। बृहस्पति ने इसे चंद्रमा से माँगा तो उन्होंने देना अस्वीकार कर दिया। दोनों में इस पर युद्ध होने लगा और ब्रह्मा छुड़ाने आए। अंत में तारा ने प्रसव किया और चंद्रमा ने अपने पुत्र को लेकर तारा को लौटा दिया यही पुत्र 'बुध' कहा गया।

तिलोत्तमा—तपस्या से प्रसन्न हो ब्रह्मा ने सुन्द तथा उपसुन्द को वर दे रखा था कि तुम लोगों से बलवान पृथ्वी पर दूसरा न होगा और तुम लोगों की मृत्यु केवल आपसी युद्ध से होगी। वर के अभिमान में दोनों ने पृथ्वी पर बड़ा अत्याचार किया। अंत में देवता लोग ब्रह्मा के पास गए और त्राण के लिए याचना करने लगे। ब्रह्मा ने उन दोनों को मार पृथ्वी का कल्याण करने के लिए विश्वकर्मा से एक अद्वितीय अप्सरा निर्मित करने का आदेश दिया। विश्वकर्मा ने विश्व की सभी सुन्दर वस्तुओं से तिल-तिल भर सौंदर्य लेकर तिलोत्तमा नाम्नी अप्सरा का निर्माण किया (इसी से यह तिलोत्तमा कहलाई)। इसको सुन्द तथा उपसुन्द के पास भेजा गया। देखते ही दोनों इस पर मोहित हो गए और इसे लेने के लिए आपस में लड़ने लगे। इसी आपसी युद्ध में दोनों ने एक दूसरे को मार डाला।

तुबा—मुसलमानी धर्म के अनुसार स्वर्ग का एक पेड़। यह बड़ा पवित्र है।

तुलसी—अत्यन्त पवित्र वृक्ष जो वैष्णवों द्वारा पूजा जाता है। इसकी उत्पत्ति के विषय में कहा जाता है कि यह एक स्त्री थी जो राधा की सखी थी। एक दिन राधा ने इसे कृष्ण के साथ विहार करते देख शाप दिया कि तू मनुष्य हो जा। शापानुसार तुलसी धर्मध्वज राजा की कन्या हुई। उसके असीम सौंदर्य की तुलना

किसी से नहीं हो सकती थी अत: उसका नाम 'तुलसी' पड़ा। उसने घोर तप किया और वर माँगा कि 'मैं कृष्ण के साथ संभोग करने से अभी तृप्त नहीं हुई हूँ अत: उनकी पत्नी होना चाहती हूँ।' ब्रह्मा के कहने पर तुलसी ने शंखचूड़ नाम के राक्षस से शादी की। शंखचूड़ को वर मिला था कि बिना उसकी स्त्री का सतीत्व भंग हुए उसकी मृत्यु न होगी। जब शङ्खचूड़ से देवता लोग परेशान हो गए तो विष्णु ने शङ्खचूड़ का रूप धारण कर तुलसी के साथ भोग किया। इस प्रकार शङ्खचूड़ मर गया पर तुलसी बहुत रुष्ट हुई और उसने विष्णु को पत्थर हो जाने का शाप दिया। तभी से विष्णु शालिग्राम की पिंडी बने और उनके वरदान से तुलसी, तुलसी वृक्ष बनी जिसका पत्ता शालिग्राम (विष्णु) के मस्तक पर चढ़ने लगा।

तुलसीदास—एक प्रसिद्ध भक्त कवि। इनका जन्म १५८६ वि० के आस-पास हुआ था। तुलसी अपनी स्त्री रत्नावली पर बहुत अनुरक्त रहते थे। एकबार वह इनसे पूछे बिना अपने नैहर चली गई। शाम को जब तुलसी को पता चला तो ये भी चल दिए। कहा जाता है कि इन्होंने एक मुर्दे पर चढ़कर नदी पार की तथा साँप को रस्सी समझ उसके सहारे रत्नावली के कोठे पर चढ़ गए। इन्हें देख रत्नावली बहुत लज्जित और क्रोधित हुई। उसने आवेश में इनसे कहा—

लाज न लागत आपको, दौरे आयहु साथ।
धिक-धिक ऐसे प्रेम को कहा कहौं मैं नाथ॥
अस्थि चर्म मय देह मम, तामें जैसी प्रीति।
तैसी जो श्रीराम मँह, होत न तो भवभीति॥

यह बात तुलसी के हृदय में लगी और वे तुरत लौट गए तथा साधु हो गए। तुलसी के सम्बन्ध में भाँति-भाँति की किंवदंतियाँ

प्रचलित हैं। ये रोज़ सबेरे एक पेड़ में पानी देते थे जिससे उस पेड़ के भूत ने प्रसन्न हो इनकी हनुमान से भेंट करा दी। और हनुमान की कृपा से चित्रकूट में इन्होंने राम-लक्ष्मण के दर्शन किए—

चित्रकूट के घाट पर, भइ संतन की भीर।
तुलसिदास चंदन घिसतु तिलक देत रघुबीर॥

तुलसी के विषय में यह भी प्रसिद्ध है कि इन्होंने एक विधवा के मरे पति को जिला दिया था तथा अपने मित्र टोडर की मृत्यु के बाद उनके उत्तराधिकारियों के लिए उनसे पंचनामा लिखा दिया। कहा जाता है कि इनकी कुटिया की चोर आदि से स्वयं राम-लक्ष्मण रक्षा करते थे। इनके सम्बन्ध में यह भी किंवदंती है कि एक बार ये किसी कृष्ण मंदिर में गए पर 'तुलसी मस्तक तब नवे जब धनुष बाण लो हाथ' कहते हुए इन्होंने मूर्ति को प्रणाम नहीं किया। इनके मुँह से यह निकलना था कि मूर्ति राम में परिवर्तित हो गई।

त्रिजटा—रावण के अंत:पुर की एक राक्षसी जो एक मत से विभीषण की बहन थी। सीता की यह देख-रेख करती थी। सीता के साथ इसका व्यवहार बहुत अच्छा था।

त्रिपुर—तारकासुर के लड़के तारकाक्ष, कमलाक्ष और विद्युन्माली के लिए मय दानव ने तीन नगर सोने, चाँदी और लोहे के बनवाए थे। इन्हें त्रिपुर कहते हैं। देवताओं के कहने पर शिव ने एक ही बाण में तीनों नगरों को नष्ट कर दिया और त्रिपुरारि कहलाने लगे। दे० 'महादेव'। एक मत से त्रिपुर नाम का एक राक्षस भी था।

लोचनदेव—वैश्यकुल में उत्पन्न एक भक्त। ये व्यवसाय का काम करते थे पर साथ ही किसी लायक आदमी को अपने घर आए भक्तों की सेवा के लिए रखना चाहते थे क्योंकि इनके व्यस्त रहने

के कारण घर आए भक्तों की सेवा उचित रूप से नहीं हो पाती थी। कहा जाता है कि इस कार्य के लिए इनको अपने मन का आदमी न मिलते देख, भगवान ने स्वयं कुछ दिन तक इनकी नौकरी की।

त्रिशंकु—एक सूर्यवंशी राजा। अपने गुरु वशिष्ट तथा उनके पुत्रों से इन्होंने सशरीर स्वर्ग जाने की कामना की, परन्तु उन लोगों ने अस्वीकार कर दिया। यह सुनकर त्रिशंकु ने दूसरा गुरु चुनने की इच्छा प्रकट की। क्रुद्ध हो ऋषि-पुत्रों ने उन्हें चाण्डाल होने का शाप दे दिया और त्रिशंकु चाण्डाल मनोवृत्ति वाले हो गए। ऐसी दशा में इनके मंत्रियों ने भी इन्हें त्याग दिया। इन्होंने विश्वामित्र को गुरु मानकर अपना आशय प्रकट किया और उन्होंने ऐसा करने का वचन दिया। एतदर्थ यज्ञ किया गया। जब त्रिशंकु स्वर्ग में पहुँचे तो इंद्र ने इसका विरोध किया और उन्हें नीचे फेंका। विश्वामित्र इस पर क्रुद्ध हुए। उन्होंने उन्हें बीच में रोक दिया। और एक नया स्वर्ग बनाने लगे।[1] इस पर देवता लोग घबड़ाए और अंत में उन्होंने विश्वामित्र से प्रार्थना कर संधि कर ली। तभी से त्रिशंकु अधोमस्तक होकर आकाश तथा पृथ्वी के मध्य में लटके हुए हैं। हरिवंश पुराण में यह कथा कुछ दूसरे प्रकार से दी गई है।

त्रिशिर—रावण का एक भाई जो तीन सिरों का था। दंडक वन में शूर्पणखा के नाक-कान-विहीन होने के बाद खर-दूषण के साथ यह भी लड़ने आया था। एकमत से यह यहाँ मारा गया पर दूसरे मत से बच गया। कुछ मतों से यह रावण का पुत्र था। इसका नाम त्रिशिरा भी मिलता है।

---

[1]एक अन्य मत से सप्तर्षियों की रचना की।

दक्षप्रजापति—महाभारत के अनुसार दक्ष की उत्पति ब्रह्मा के दाएँ अंगूठे से हुई थी। उसके बाएँ अंगूठे से एक स्त्री उत्पन्न हुई जो दक्ष की स्त्री हुई। एक अन्य मत से मनु की पौत्री और प्रियव्रत की पुत्री प्रसूति दक्ष की स्त्री थी। प्रसूति से दक्ष को एक मत से २४, एक मत से ५० और एक मत से ६० पुत्रियाँ हुईं। इनमें १० का विवाह धर्म से तथा १३ का कश्यप ऋषि से हुआ था। कश्यप की पत्नियों से देव, दैत्य, सर्प, पक्षी आदि अनेक योनियों के लोग पैदा हुए। एक मत से दक्ष की २७ पुत्रियों का विवाह चंद्रमा से हुआ था और यही २७ नक्षत्र हैं।

दक्ष प्रजापति की एक पुत्री सती थीं जिनका विवाह शिव से हुआ था। एक बार दक्ष ने यज्ञ किया पर शिव या सती को नहीं बुलाया, फिर भी पिता का घर जान सती चली आईं। यहाँ आकर उन्होंने देखा कि यज्ञ में सब देवताओं का भाग तो है पर शिव का नहीं। यह उन्हें बहुत बुरा लगा और यज्ञ कुंड में कूदकर उन्होंने अपने प्राण दे दिए। यह देख शिव के गणों ने यज्ञ का नाश कर दिया। कुछ मतों से इसी समय शिव ने अपने श्वास से ज्वर उत्पन्न किया जिसने यज्ञ-भंग करने में गणों की सहायता की। दे० 'महादेव' 'सती' 'पार्वती' 'ज्वर' 'वीरभद्र'। अन्य स्थानों पर दक्ष का जीवन और प्रकार से भी चित्रित मिलता है।

दत्तात्रेय—एक प्राचीन ऋषि जो पुराणों के अनुसार विष्णु के २४ अवतारों में माने जाते हैं। कहा जाता है कि विष्णु ने ही अनसूया के गर्भ से इनके रूप में जन्म लिया था। अनसूया ने देवताओं से यह वर प्राप्त किया था कि ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश मेरे गर्भ में क्रमशः सोम, दत्तात्रेय और दुर्वासा होकर आवें। इनके पिता का नाम अत्रि था। जब दत्तात्रेय गर्भ में थे तो एक बार हैहयराज अत्रि को बहुत परेशान करने लगे। क्रोधित होकर

७वें दिन ही वे गर्भ से निकल आए। ये बड़े विद्वान और योगी थे। इन्होंने अपने बहुत से गुरु बना रक्खे थे। भागवत के अनुसार इनके पृथ्वी, वायु, आकाश, जल, अग्नि, चंद्रमा, सूर्य, कबूतर, अजगर, सागर, पतंग, मधुकर, हाथी; मधुहारी, हरिण, मछली, पिंगला वेश्या; गिद्ध, बालक, कुमारी कन्या, बाण बनानेवाला, साँप, मकड़ी और तितली—ये २४ गुरु थे।

दधीचि—शुक्राचार्य के पुत्र एक वैदिक ऋषि। वृत्रासुर एक समय देवताओं को बड़ा तंग कर रहा था। देवताओं को ज्ञात हुआ कि केवल दधीचि की हड्डी से बने हुए वज्र से ही यह मरेगा। वे लोग दधीचि के पास गए और हड्डी के लिए याचना की। ऋषि ने सहर्ष अपना शरीर देवकार्य के लिए छोड़ दिया। इन्होंने योगाग्नि से अपना शरीर जला लिया और शेष बची हड्डी को देवता लोग उठा ले गए। इसी हड्डी का वज्र बना जिससे वृत्रासुर मारा गया।

दनु—दक्ष प्रजापति की पुत्री तथा कश्यप की पत्नी। इसके गर्भ से ४० पुत्र हुए जो इसके नाम के कारण 'दानव' कहलाए।

दमयन्ती—विदर्भराज भीम की पुत्री। राजा ने इसकी शादी के लिए एक स्वयंवर की रचना की। देवता तथा अन्य राजाओं को छोड़कर इसने निषाद नल के गले में जयमाला डाल दी क्योंकि नल के गुणों को इसने एक हंस से पहले से ही सुन रखा था। इस कार्य से शनि तथा कलि बड़े अप्रसन्न हुए और दमयन्ती को कष्ट देने की सोचने लगे। अंत में विवाह के ११वें वर्ष कलि ने नल को राज्यच्युत करा दिया और नल-दमयन्ती वन-वन फिरने लगे। शेष के लिए देखिए 'नल'।

दशरथ—अयोध्या के प्रसिद्ध इक्ष्वाकुवंशी राजा तथा भगवान राम के पिता। इनकी तीन रानियाँ—कौशल्या, सुमित्रा तथा

कैकेयी थीं, परंतु इन्हें एक भी संतान न थी। राजा ने ऋष्यशृंग को बुलाकर पुत्रेष्टि यज्ञ किया और उसका प्रसाद खाने से तीनों रानियों को गर्भ रहा। कालान्तर राम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न ये चार पुत्र उत्पन्न हुए। एक बार इन्होंने मृग के भ्रम में अंधमुनि के पुत्र श्रवणकुमार को मार दिया था जिससे कुपित हो मुनि ने शाप दिया था कि तुम्हें भी मेरी भाँति पुत्र-शोक से मरना होगा। वही हुआ। कैकेयी ने देवासुर संग्राम में इनके रथ की रक्षा की थी जिससे प्रसन्न हो इन्होंने दो वर देने का प्रण किया था। राम के राज्यारोहण के समय मंथरा के कहने में आकर कैकेयी ने दोनों वर माँगे। एक के अनुसार भरत को राज्य देना था तथा दूसरे के अनुसार राम को १४ वर्ष का वनवास। इसके अनुसार राम, लक्ष्मण और सीता के साथ वन चले गए और उनके वियोग में दशरथ का प्राणांत हो गया। दे० 'अंध' 'राम' 'कैकेयी' 'रोमपाद'।

दानव—प्रयोगतः प्रायः दानव, राक्षस, दैत्य आदि शब्द एक समझे जाते हैं पर मूलतः इनमें अंतर है। दक्ष प्रजापति की कन्या दनु और कश्यप ऋषि के पुत्र दानव कहलाए। दानवों में शंबर, नमुचि, पुलोमा तथा केशी आदि प्रसिद्ध हैं। महाभारत के अनुसार दनु से उत्पन्न मूल दानवों की संख्या ४० थी पर भागवत के अनुसार यह संख्या ६० है। इन्हें राक्षस भी कहते हैं। दे० 'दैत्य'।

दिग्गज—पुराणों के अनुसार दस दिशाओं में से ऊपर नीचे छोड़कर ८ में ८ हाथियाँ नियुक्त हैं जो रक्षा के साथ-साथ पृथ्वी को दबाए रहते हैं। इनके नाम निम्न हैं—

	दिशा			दिग्गज
१.	पूर्व	......	......	ऐरावत
२.	पश्चिम	......	......	अंजन
३.	उत्तर	......	......	सार्वभौम

४. दक्षिण .... वामन
५. अग्निकोण (पूर्व और दक्षिण का) ...पुंडरीक
६. नैऋतकोण (पश्चिम और दक्षिण का) ...कुमुद
७. वायुकोण (उत्तर और पश्चिम का) ...पुष्पदंत
८. ईशान कोण (पूर्व और उत्तर का) ...सप्रतीक

दिति—दक्ष की कन्या और कश्यप की स्त्री। इनके पुत्र इन्हीं के नाम पर दैत्य कहलाए। जब इनके सभी पुत्रों (दैत्यों) को इंद्र तथा देवों ने मार डाला तो दिति ने अपने पति से एक अदमनीय पुत्र के लिए प्रार्थना की। कश्यप ने प्रार्थना स्वीकार की और कहा कि इसके लिए सौ वर्ष तक पवित्रता से गर्भ धारण करना पड़ेगा। दिति ने ९९ वर्ष तक तो ठीक से विताया पर अंतिम वर्ष में एक दिन अपवित्रता से सो रहीं। इंद्र ने, जो ताक में थे, उसी समय गर्भ में प्रवेश कर वज्र से उसके ७ भाग किए और फिर प्रत्येक के सात-सात इस प्रकार कुल ४९ भाग कर दिए। ये ही ४९ पवन या मरुत हैं।

दिलीप—एक इक्ष्वाकुवंशीय प्रसिद्ध राजा। एक बार स्वर्ग से आते समय इन्होंने कामधेनु को प्रणाम नहीं किया। इस पर उसने शाप दे दिया कि जाओ मेरी पुत्री नन्दिनी की सेवा किए विना तुम्हें पुत्र न होगा। दिलीप को बहुत दिनों तक संतान न हुई। अन्त में उन्होंने गुरु वशिष्ठ के परामर्श से नन्दिनी की सेवा की और इनकी रानी सुदक्षिणा के गर्भ से रघु की उत्पत्ति हुई। दिलीप नन्दिनी के सेवा में इतने तत्पर थे कि एक वार नन्दिनी की रक्षा के लिए ये अपने को शेर का भोज्य वनाने को तैयार हो गए थे।

दिवोदास—धन्वंतरि के अवतार एक काशी के राजा जो भीमरथ के पुत्र थे। महाभारत इन्हें सुदेव का पुत्र मानता है। इनके एक पुत्र का नाम प्रतर्दन था जिसकी उत्पत्ति यज्ञ करने से हुई थी। इनके और भी बहुत से पुत्र थे जिनको वीतहव्य राजा ने मार डाला

था। इसके प्रतिशोध के लिए प्रतर्दन ने वीतहव्य के पुत्रों को मार डाला। देवताओं ने इन्हें आकाश से पुष्प तथा रत्नादि दिए थे। इसी कारण इनका नाम दिवोदास था। दे० 'शंबर'।

दुंदुभी—भैंसे की शक्ल का एक असुर। वालि ने इसका वध कर इसके सिर को ऋष्यमूक पर्वत पर फेंक दिया था, जिससे क्रुद्ध हो मतङ्ग ऋषि ने शाप दिया जिसके कारण वालि उस पर्वत पर नहीं जा सकता था।

दुर्गा—आदि शक्ति। इन्हें शिव की स्त्री सती या पार्वती का एक रूप कहा जाता है। इसी कारण इनका नाम शिवा भी है। इनके दूसरे नाम भवानी, देवी, कालिका तथा चंडी आदि हैं। इन्होंने दुर्गा राक्षस का वध किया था अतः इनका नाम दुर्गा पड़ा था। दुर्गा के दो रूप हैं एक तो शांत और कोमल (पार्वती, गौरी, उमा आदि नाम इसके द्योतक हैं) और दूसरा भयानक और क्रूर (चंडी, कपालिका, काली तथा भैरवी आदि नाम इसके द्योतक हैं)। दुर्गा का दूसरा रूप ही प्रायः पूजा जाता है। इनके मानने वाले शाक्त कहलाते हैं। तांत्रिकों की ये प्रधान देवी हैं। इनके १० हाथ हैं जिनमें करवाल आदि तरह तरह के अस्त्र-शस्त्र एवं खप्पर है। गले में मुंडों की माला है। इनकी सवारी सिंह है। दुर्गा ने बहुत से राक्षसों को मारा जिनमें प्रधान दुर्गा, महिषासुर, रक्तबीज, तथा शुंभ आदि हैं। दे० 'पार्वती' 'चंडी' 'शुंभ' 'निशुंभ' 'महिषासुर'।

दुर्मुख—१. दुर्योधन का छोटा भाई। जब कर्ण को भीम ने मार कर असहाय बना दिया तो यह उसकी सहायतार्थ भेजा गया था परन्तु इसका भी वध शीघ्र ही हो गया।

२. रामचंद्र का एक गुप्तचर जो उनसे प्रजा की दशा बतलाता था। इसी के मुँह से राम ने सीता के विषय में लोकापवाद सुना था जिसके फलस्वरूप सीता को गर्भावस्था में वन में भेजना पड़ा।

दुर्योधन—धृतराष्ट्र और गांधारी के १०० पुत्रों में सबसे बड़ा और कौरवों का स्वामी। गांधारी ने व्यास से १०० पुत्रों का वरदान माँगा था जिसे व्यास ने स्वीकार किया था। गांधारी गर्भवती हुई और उनकी गर्भावस्था २ वर्ष तक चलती रही और अंत में मांस का एक लोथड़ा पैदा हुआ। व्यास ने इसे १०१ टुकड़ों में बाँटा और अलग-अलग घड़ों में रख दिया। सबसे पहले दुर्योधन पैदा हुआ, उसके बाद ६६ पुत्र और तथा एक दु:शला नाम की पुत्री। पांडु के मरने बाद धृतराष्ट्र ने पांडवों और कौरवों को साथ-साथ शिक्षा दी। वहाँ दोनों में शत्रुता का विकास हुआ। दुर्योधन सबसे अधिक भीम से डरता था क्योंकि वह गदे का विशेषज्ञ था और भीम इसमें उससे आगे था। दुर्योधन ने बलराम से गदा चलाना सीखा था। एक बार इसने भीम को विष देकर गङ्गा में फेंक दिया था पर संयोग से नागलोक में जाकर भीम ठीक हो गए। धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर को राजा बनाना चाहा पर दुर्योधन ने ऐसा न होने दिया और पांडवों को वन में भेज दिया। वहाँ उन्हें लाक्षागृह में जलाने की भी इसने कोशिश की पर सफल न हुआ। अंत में पांडवों के घर लौटने पर युधिष्ठिर को इसने जुआ खेलने के लिए बुलाया और शकुनि की सहायता से उन्हें हरा दिया। इसने द्रौपदी को भी जीता और दु:शासन को उसे नंगा कर अपने जंघे पर रखने की आज्ञा दी। धृतराष्ट्र के कहने तथा कृष्ण की कृपा से ऐसा न हो सका। उसी समय भीम ने गदा से दुर्योधन की जाँघ तोड़ने का प्रण किया। पांडवों को १२ वर्ष वनवास तथा १ वर्ष अज्ञात वनवास बिताना पड़ा। उसके बाद आने पर इन लोगों ने केवल पाँच गाँव माँगे पर दुर्योधन तैयार न हुआ और अंत में युद्ध हुआ, जिसमें कौरवों की ओर के दुर्योधन तथा अश्वत्थामा आदि कुछ को छोड़ सभी मारे गए। अंत में हार कर दुर्योधन एक जलाशय में घुस गया। पानी में देर तक रहने की

उसके पास विशेष शक्ति थी। भीम खोजते हुए वहाँ पहुँचे और दोनों में गदा-युद्ध हुआ। भीम ने गदे से उसकी जाँघ तोड़ कर अपना प्रण पूरा किया और उसे वहीं छोड़ चले गए। अन्त में अश्वत्थामा आया तो दुर्योधन ने उससे भीम का सर लाने को कहा। अश्वत्थामा रात में पांडवों के खेमे में गया। पांडवों को मारने की हिम्मत तो न पड़ी पर द्रौपदी से उत्पन्न उनके पाँचों पुत्रों का सर काटकर ले आया और दुर्योधन से कहा कि के पाँचों पांडवों के सर हैं। दुर्योधन ने भीम का सर अपने हाथ में रखने को कहा। अश्वत्थामा ने दिया तो उसने उसे ज़ोर से दवाया पर जव सर चूर-चूर हो गया तो दुर्योधन को विश्वास न हुआ कि यह भीम का सर है। उसने पूछा तो यथार्थता ज्ञात हुई। इस पर उसे वड़ा दुःख हुआ। उसने कहा 'मेरी शत्रुता पांडवों से थी उनके लड़कों से नहीं'। इसके वाद ही उसका देहान्त हो गया। दे० 'भीम'।

दुर्वासा—अत्रि के पुत्र एक अत्यंत क्रोधी ऋषि। इनका विवाह कंदली से हुआ था जो और्व मुनि की पुत्री थी। विवाह के समय इन्होंने अपनी स्त्री के १०० अपराध क्षमा करने की प्रतिज्ञा की थी। जव उसने १०१ वाँ अपराध किया तो इन्होंने शाप देकर उसे भस्म कर दिया। इस पर और्व मुनि ने इन्हें शाप दिया कि तुम्हारा घमंड और क्रोध चूर-चूर होगा। इसी के फलस्वरूप अंवरीप से इन्हें मुँह-की खानी पड़ी। दे० 'अंवरीप'।

दुष्यंत—पुरुवंशी राजा एति के पुत्र। एक वार शिकार खेलते-खेलते ये कण्व ऋषि के आश्रम में पहुँचे। वहाँ कण्व ऋषि की पाली लड़की शकुन्तला पर ये मुग्ध हो गए और अंत में गांधर्व विवाह कर वहाँ से अपनी राजधानी में चले आए। आते समय स्मरण के लिए अपने नाम की अंगूठी इन्होंने शकुन्तला को दे दी थी। शकुन्तला का गर्भ परा हुआ और इन्हें सर्वदमन नामका पुत्र

हुआ। शकुन्तला की अंगूठी खो गई और वह अपने पुत्र के साथ दरबार में गई। राजा को सारी बातें भूल गई थीं (एक मत से शापवश ये बातें भूल गई थीं और दूसरे मत से उन्हें याद थीं पर लोकलाज से उन्होंने भूल जाने का बहाना किया) अतः उन्होंने डाँट-फटकार कर रानी को भगा दिया। बाद में एक मछुए के यहाँ से जब अंगूठी मिली तो उन्हें याद आई और तब खोजकर वे शकुन्तला तथा उसके पुत्र को लाए। पुत्र का नाम भरत रखा गया। कहा जाता है इसी के नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष या भारत पड़ा। यह भरत इतना वीर था कि बचपन में शेर के बच्चों के साथ खेला करता था। दुष्यंत और शकुन्तला की कहानी विभिन्न ग्रंथों में विभिन्न प्रकार से चित्रित है। दे० 'शकुन्तला'।

दुःशला—गांधारी और धृतराष्ट्र की पुत्री। इसका ब्याह सिन्धुराज जयद्रथ से हुआ था। इसके पुत्र का नाम सुरथ था। जयद्रथ के मरने के पश्चात् इसने अपने पुत्र सुरथ के सहारे बहुत दिनों तक राजकाज चलाया। पांडवों के अश्वमेध के समय जब अर्जुन यज्ञ के अश्व को लेकर सुरथ के राज्य में पहुँचे और सुरथ ने सुना कि इसके पिता को मारने वाले आए हैं तो मारे भय के इसका प्राणांत हो गया। अर्जुन ने इसके पुत्र का राज्याभिषेक कराया और वहाँ से विदा हुए। दे० 'दुर्योधन'।

दुःशासन—दुर्योधन का अनुज, जिसका स्वभाव बड़ा क्रूर था। महाभारत युद्ध का प्रधान कारण यही था। इसी ने द्रौपदी को भरी सभा में नंगी करने का प्रयास किया था। भीम ने इसका रक्तपान करने की प्रतिज्ञा की थी और उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा युद्ध में पूरी की। दे० 'भीम' 'द्रौपदी'।

दूषण—यह एक राक्षस था जिसे कहीं-कहीं रावण का भाई माना गया है, यद्यपि बात यह थी नहीं। दूषण रावण के भाई खर

पूर्व इस देश में अत्यंत महत्त्वपूर्ण था। ये लोग ब्रज के निवासी थे। कृष्ण इनके इंद्र कहे गए हैं।

दैत्य—दैत्य और दानवों को प्रायः एक समझा जाता है और प्रयोगतः भी प्राचीन काल से अब तक इन दोनों में कोई भेद नहीं। मूलतः कश्यप ऋषि और दक्ष पुत्री दिति से उत्पन्न पुत्र दैत्य कहलाए। दे० 'दानव'। दैत्य और दानव देवताओं के शत्रु थे। इन्हें राक्षस भी कहते हैं।

द्रुपद—चंद्र वंश में पृषत नामक एक प्रतापी राजा थे। भरद्वाज ऋषि इनके घनिष्ठ मित्र थे। दोनों मित्रों को साथ-साथ संतानें हुई। पृषत के पुत्र का नाम द्रुपद तथा भरद्वाज के पुत्र का नाम द्रोण था। पिता की तरह पुत्रों में भी मैत्री थी। पृषत की मृत्यु के उपरांत जब द्रुपद राजा हुए तो द्रोण मैत्री के नाते एकबार उनके पास गए, पर द्रुपद ने यह कहकर फटकारा कि तुम ग़रीब ब्राह्मण के लड़के हो और मैं राजा हूँ, हम दोनों में कैसे मैत्री संभव है ? इस पर द्रोण लौट आए पर यह बात उनके दिल से उतरी नहीं। कौरव-पांडव जब शिक्षित होकर अपने घर लौटने लगे तो द्रोण ने गुरु-दक्षिणा के स्थान पर यह आज्ञा दी कि द्रुपद को बाँध-कर मेरे सामने लाओ। पहले कौरवों ने प्रयास किया पर वे अस-फल रहे। अंत में पांडव उन्हें पकड़ लाए। द्रुपद के सामने आने पर द्रोण ने उनसे कहा कि आज भी मैंने आपको मैत्री के लिए ही बुलाया है पर मैं ग़रीब ब्राह्मण हूँ, अतः आपका आधा राज्य लेता हूँ। इस प्रकार उनका आधा राज्य लेकर द्रोण ने द्रुपद को छोड़ दिया। इस बात से द्रुपद बहुत दुखी हुए और इसका बदला लेने के लिए किसी तेजस्वी ब्राह्मण को खोजने लगे। खोजते-खोजते वे गंगा के किनारे याज और उपयाज नाम के दो ब्राह्मणों के पास पहुँचे। एक वर्ष तपस्या करने के उपरांत

उपयाज इनकी सहायता को तैयार हुए और अंत में याज ने भी सहायता देनी स्वीकार की। दोनों की सहायता से इन्होंने द्रोण-विनाशक पुत्र की प्राप्ति के लिए श्रौताग्निसाध्य यज्ञ आरम्भ किया। यज्ञ की समाप्ति पर यज्ञ-कुन्ड से बड़ा तेजस्वी पत्र धृष्टद्युम्न उत्पन्न हुआ। साथ ही कृष्णा नाम की पुत्री भी उत्पन्न हुई। पुत्र जन्म के समय ही बड़ा ढीठ ज्ञात हुआ तथा सहजात रूप से कवच कुंडल आदि धारण किए था अतः धृष्टद्युम्न नाम पड़ा। पुत्री काली थी अतः कृष्णा कही गई। यही आगे द्रौपदी के नाम से प्रसिद्ध हुई। इन दो संतानों के अतिरिक्त द्रुपद को दो और संतानें थीं। पुत्र का नाम शिखंडी तथा पुत्री का शिखंडिनी था।

द्रौपदी का विवाह पांडवों से हुआ अतः पुराना वैर भूलकर महाभारत युद्ध में द्रुपद पांडवों की ओर से लड़ रहे थे। १४वें दिन द्रोण के हाथ से इनकी मृत्यु हुई।

द्रोणाचार्य—महाभारत कालीन प्रसिद्ध ब्राह्मण वीर जो कौरवों और पांडवों के गुरु थे। इनके जन्म की कथा बड़ी विचित्र है। भरद्वाज ऋषि ने नदी के किनारे एकबार घृताची अप्सरा को नग्न देखा और कामार्त हो गए। जो वीर्य स्खलित होकर गिरा उसे उन्होंने एक द्रोण नामक पात्र में रख दिया और उसी से द्रोण नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। द्रोण ने धनुर्विद्या का अध्ययन अग्निवेश्य मुनि से किया था। लड़कपन में द्रोण तथा द्रुपद की मित्रता थी परन्तु बाद में द्रुपद राजा होने पर इसको भूल गए (दे० द्रुपद')। इनकी पत्नी कृपी शरद्वान ऋषि की पुत्री थी। इनके पुत्र का नाम अश्वत्थामा था। इनको यह वरदान था कि अपने पुत्र अश्वत्थामा की मृत्यु का समाचार सुनने पर ये मरेंगे। महाभारत के युद्ध में जब पांडव इनसे परेशान हो गए तो कृष्ण ने एक चाल चली। अश्वत्थामा नाम का एक हाथी मरा था। उसी आधार पर उन्होंने

द्रोण के आगे युधिष्ठिर से कहलवाया—'अश्वत्थामा मरो नरोवा कुन्जरो वा'। कृष्ण ने बीच में शंख-ध्वनि कर दी जिससे द्रोण केवल यह सुन सके कि 'अश्वत्थाम मरो'। सुनते ही अस्त्र-शस्त्र फेंक वे चिंता में पड़े और तब तक धृष्टद्युम्न ने उनका सिर काट लिया। दे० 'अश्वत्थामा'।

द्रौपदी—महाराज द्रुपद की पुत्री। इसका यथार्थ नाम कृष्णा या जो इसके वर्ण के कारण रक्खा गया था। स्वयंवर में नाचते चक्र के बीच से मछली की आँख को भेद कर अर्जुन ने इसे प्राप्त किया था। घर आने पर अर्जुन ने अपनी माँ से कहा कि हम लोग एक नई भीख लाए हैं। इस पर कुन्ती ने कहा कि सभी लोग आपस में बाँट कर उपभोग करो। इसी को मानकर पाँचों पांडवों ने द्रौपदी से विवाह किया और पाँचों पांडवों से इसे एक-एक संतानें हुई जो युद्ध समाप्त होने पर अश्वत्थामा द्वारा मारी गईं। (दे० 'दुर्योधन' तथा 'अश्वत्थामा'।) जुआ में द्रौपदी को जीतकर दुर्योधन ने दुःशासन से उसे नंगा करने की आज्ञा दी तथा उसे अपने जंघे पर रखने को कहा, पर कृष्ण की कृपा से वह नंगा न कर सका। कहा जाता है कि कृष्ण की कृपा से द्रौपदी की साड़ी इतनी बढ़ गई कि उसे खींचते-खींचते दुःशासन का सहस्र हाथियों का बल समाप्त हो गया पर द्रौपदी का कोई अंग न खुला। अंत में हारकर लज्जा से वह बैठ गया। उसी समय भीम ने प्रतिज्ञा की थी कि दुर्योधन के जंघे को तोड़ूँगा तथा दुःशासन के कलेजे का रक्तपान करूँगा। युद्धोपरांत उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की। अज्ञात वनवास के समय कीचक द्रौपदी के साथ भोग करना चाहता था पर भीम ने उसको मार डाला। जीवन के अंत में द्रौपदी अपने पतियों के साथ हिमालय में गलने चली गई और यही सबसे पहले गली। द्रौपदी की गणना पंचदेव कन्याओं में होती है।

द्रौपदी पाँचों पांडवों की स्त्री थी। इसके लिए हर एक पांडव का दिन निश्चित था और यह भी तय था कि एक आदमी के रहते यदि कोई दूसरा द्रौपदी के कमरे में चला जायगा तो उसे १२ वर्ष का वनवास सहना पड़ेगा। अर्जुन से एक बार यह ग़लती हो गई और फलस्वरूप अर्जुन को वनवास लेना पड़ा। दे० 'कीचक 'जटासुर' 'सैरंध्री'।

धन्ना—एक मध्ययुगीन भक्त। इन्हें धन्ना भगत या धनादास भी कहते हैं। इनका समय १६वीं सदी के आसपास है। धन्ना एक साधारण किसान थे। ये साधु-संतों की सेवा में तन-मन-धन से लगे रहते थे। एक बार इनके यहाँ कुछ साधु आए। घर में कुछ नहीं था, केवल बोने के लिए कुछ अन्न बीज रूप में रक्खा था। घर वालों के विरोध करने पर भी इन्होंने बीज रूप में रक्खे अन्न को साधुओं के खिलाने में खर्च कर डाला। जब बोने का समय आया तो उनके घर के लोग बहुत घबराए। धन्ना ने अपने खेत में केवल हल चला दिया और चुपचाप बैठ गये। लोगों को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि बिना बोए ही अन्य लोगों के साथ धन्ना के भी खेत में अन्न उग आया। कहा जाता है कि स्वयं भगवान ने उनका खेत बो दिया था।

धन्वंतरि—देवताओं के वैद्य जो समुद्र-मंथन में निकले, १४ रत्नों में थे। इनके पैदा होते ही चारों दिशाएं जगमगा उठीं। अमृत का कलश इनके ही हाथ में था। दे० 'दिवोदास'।

धर्म—एक प्राचीन ऋषि तथा प्रजापति जिनका जन्म ब्रह्मा के दाहिने अंग से हुआ था। धर्म के चार पैर—गुण, द्रव्य, क्रिया तथा जाति कहे जाते हैं। सत्ययुग में चार पैर से, त्रेता में तीन पैर से, द्वापर में दो पैर से और कलियुग में एक पैर से धर्म शासन करते हैं। धर्म के चार पुत्र सनत्कुमार, सनातन, सनक तथा सनन्दन

हैं। इनके अतिरिक्त युधिष्ठिर भी धर्म के पुत्र हैं। धर्म के बहुत से विवाह हुए थे। महाभारत के अनुसार दक्ष की १० (एकमत से १३) पुत्रियों का विवाह धर्म से हुआ था। इनकी एक स्त्री का नाम अहिंसा था। कुछ मतों से धर्म, धर्मराज तथा यमराज एक ही हैं। दे० 'मांडव्य'।

धूम्रलोचन—शुंभ दैत्य का सेनापति। जब शुंभ-निशुंभ के संहार के लिए देवी ने परम सुन्दरी का रूप धारण किया था तो शुंभ ने उन्हें पकड़ लाने के लिए धूम्रलोचन को ही भेजा था।

धृतराष्ट्र—विचित्रवीर्य के बड़े पुत्र। इनकी माता का नाम अम्बिका था। विचित्रवीर्य की मृत्यु निःसंतान ही हुई थी। इसलिए उनकी माता ने वंशनाश के डर से अपने कुमारावस्था के पुत्र व्यास को बुलाया। इन्हीं के नियोग या संभोग से धृतराष्ट्र का जन्म हुआ था। अम्बिका ने संभोग के समय लज्जा से आँखें बंदकर ली थीं इसलिए धृतराष्ट्र जन्मांध पैदा हुए। इनका विवाह गंधारराज की कन्या गांधारी से हुआ था। व्यास के ही आशीर्वाद से इनको दुर्योधन आदि सौ पुत्र तथा दुःशाला नाम की एक पुत्री हुई थी। अपने पिता के पश्चात ये ही राजा हुए थे। ये बड़े न्यायप्रिय थे, पर दुर्योधन के आगे इनकी एक न चली। महाभारत युद्ध के बाद गांधारी तथा कुन्ती के साथ ये वन में गए जहाँ तीनों आग में जल गए। दे० 'अंबिका' 'दुर्योधन'।

धृष्टद्युम्न—राजा द्रुपद के पुत्र। इनकी उत्पत्ति यज्ञ करने से द्रोण से बदला लेने के लिए हुई थी। पिता के अपमान का बदला चुकाने के लिए इन्होंने द्रोणाचार्य को उस समय मारा जब अस्त्र छोड़कर पुत्र शोक में वे चिंतामग्न थे। धृष्टद्युम्न द्रोण पुत्र अश्वत्थामा के हाथ से मारे गए। दे० 'द्रोणाचार्य' 'द्रुपद'।

ध्रुव— राजा उत्तानपाद और सुनीति के पुत्र एक प्रसिद्ध भक्त। इनके पिता उत्तानपाद की सुनीति और सुरुचि दो स्त्रियाँ थीं और दोनों से ध्रुव और उत्तम दो पुत्र थे। राजा, सुरुचि और उत्तम के प्रति अधिक प्यार रखते थे। एक दिन ध्रुव अपने पिता की गोद में बैठा पर तुरत सुरुचि ने उसे उतार कर उत्तम को बिठला दिया। यह ध्रुव को बड़ा अखरा और वह जंगल में तपस्या करने चला गया। तप पूरा कर वह घर लौटा और राजा हुआ। उसने शिशुमार की कन्या भ्रमि तथा इला से विवाह किए जिनसे क्रम से कल्प और वत्सर एवं उत्कल नाम के तीन पुत्र हुए। बहुत दिन तक राज्य करने बाद ध्रुव विष्णु द्वारा प्रदत्त ध्रुव लोक में चला गया। ध्रुव का लोक अटल और सब नक्षत्रों से ऊपर कहा जाता है। दे० 'उत्तानपाद'।

नंद—श्रीकृष्ण के पालने वाले एक गोपों के प्रधान। कंस के भय से वसुदेव ने कृष्ण को नन्द के यहाँ पहुँचा दिया था और उनकी पुत्री महामाया को कृष्ण के स्थान पर ले आए थे। नंद की स्त्री का नाम यशोदा था। नंद और यशोदा कृष्ण को अपने पुत्र से भी अधिक मानते थे। कृष्ण भी इन लोगों को अपना यथार्थ माँ-बाप समझते थे। नन्द पूर्व जन्म के दक्ष प्रजापति कहे जाते हैं।

नंदिनी—वसिष्ठ की कामधेनु का नाम। दिलीप इसको वन में चराने ले गए थे जहाँ सिंह के आक्रमण करने पर उन्होंने इसकी प्राणपण से रक्षा की। नंदिनी की ही पूजा से उन्हें रघु नामक पुत्र हुआ। महाभारत के अनुसार द्यो नामक वसु अपनी पत्नी के कहने से इसे वसिष्ठ के आश्रम से चुरा ले गया। इस पर वसिष्ठ ने उसे शाप दिया और वह भीष्म बनकर पैदा हुआ। एकबार विश्वामित्र बहुत से लोगों के साथ वसिष्ठ के आश्रम पर पहुँचे। वसिष्ठ ने नंदिनी से सामग्री प्राप्त कर सबका उचित सत्कार किया।

इस पर विश्वामित्र के मन में लालच का उदय हुआ और वे उसे जबरदस्ती ले चले। कहा जाता है कि वसिष्ठ के कहने से या नंनिदी के चिल्लाने से एक बड़ी सेना निकली जिसने विश्वामित्र को परास्त किया। एकमत से नंदिनी कामधेनु का ही नाम है और दूसरे मत से यह कामधेनु की पुत्री है। दे० 'वसिष्ट' 'विश्वामित्र'।

नंदी—शिव का बैल जो श्वेत रंग का माना जाता है। इसे शिव का वाहन, द्वारपाल, गणों का स्वामी आदि बहुत कुछ कहा गया है। संसार के चार पैर वाले जानवरों का यह अधिपति भी है। वायु पुराण के अनुसार यह कश्यप और सुरभि का पुत्र है। कुछ मतों से नन्दी पूर्व जन्म में शालंकायण मुनि का पुत्र था।

कहा जाता है कि शंकर जब तांडव नृत्य करने लगते हैं तो उनका साथ नन्दी भी ताल तथा संगीत द्वारा देता है। इसी कारण उसे तांडव-तालिका कहा गया है। इसके अन्य पर्याय शालंकायण, तथा नादि-देह आदि हैं।

नकुल—चौथे पांडव जो माद्री के गर्भ से पांडु के क्षेत्रज तथा अश्विनीकुमारों के औरस पुत्र थे। जब शाप युक्त होकर पांडु अपनी दोनों पत्नियों (कुन्ती, माद्री) को लेकर जंगल में रह रहे थे तो एक बार माद्री ने पुत्र की इच्छा प्रकट की। पांडु शापवश असमर्थ थे अतः कुन्ती के कहने पर माद्री ने अश्विनीकुमारों का स्मरण किया जिनसे उसे दो पुत्र नकुल तथा सहदेव हुए। अज्ञात वनवास के समय नकुल विराट के यहाँ तंत्रीपाल नाम से गाय चराते थे। इनका विवाह चेदिराज की कन्या करेणुमती से हुआ था। ये अत्यन्त सुन्दर, युद्ध एवं नीति विशारद तथा पशु चिकित्सा में दक्ष थे। इनके प्रधान पुत्र का नाम निरमित्र था।

नमरूद—ईश्वर का विरोधी एक बादशाह। यह खुदाई का दावा करता था। इसने इस बात का विरोध करने पर इब्राहिम

को आग में फेंक दिया पर वे बच गए। एक बार नमरूद की नाक में एक मच्छड़ घुस गया जिससे इनकी मृत्यु हो गई।

नर—दक्ष प्रजापति की कन्या से उत्पन्न धर्म के पुत्र एक ऋषि जो विष्णु के अंशावतार माने जाते हैं। नर और नारायण दो भाई थे जिनमें नारायण बड़े थे। दे० 'नारायण'।

नरक—स्वर्ग का उलटा वह लोक जहाँ पापी लोग मरकर जाते हैं। यहाँ उन्हें तरह-तरह का कष्ट यम के दूतों द्वारा दिया जाता है। मनुस्मृति के अनुसार २१ नरक हैं, पर भागवत में दिए गए २१ नरकों से मनुस्मृति के नरक कुछ भिन्न हैं। प्रसिद्ध नरकों में अंधतामिस्त्र, रौरव, कुम्भीपाक, शूकरमुख, कृमिभोजन, तथा सूचिमुख का नाम लिया जाता है। नरक लोक स्वर्ग के विरुद्ध पाताल में है। यमराज नरक के स्वामी हैं।

नरकासुर—एक असुर। विष्णु ने जब वाराह औतार लिया तो उन्होंने पृथ्वी के साथ संभोग किया जिससे पृथ्वी को गर्भ रह गया। सुरों को जब पता चला कि पृथ्वी के गर्भ में एक बड़ा असुर है तो उन्होंने उस लड़के को गर्भ से बाहर आने से रोका। उस पर पृथ्वी ने भगवान से प्रार्थना की। भगवान ने कहा कि त्रेता तक तुम्हें कोई कष्ट न होगा और राम के हाथ से रावण के मारे जाने के बाद तुम्हें पुत्र होगा। यही हुआ और उचित समय पर जहाँ सीता पैदा हुई थीं पृथ्वी को नरक नामक पुत्र पैदा हुआ। इसे जनक ने शिक्षा दी और फिर पृथ्वी ने इसके जन्म की पूरी कथा इससे कह सुनाई। इसी बीच विष्णु नरक को अपने साथ ले गए और प्राग्ज्योतिषपुर का राजा बना दिया। इसका विवाह विदर्भ कुमारी माया से हुआ था, जिससे सुमाली आदि चार पुत्र हुए। संयोग से बाणासुर इसके राज्य में पहुँचा और धीरे-धीरे उसके साथ में नरकासुर में भी बुराई आ गई और यह देवों को

कष्ट देने लगा। वसिष्ठ एक बार कामाख्या देवी के दर्शनार्थ गए पर उन्हें इसने अपने राज्य में घुसने तक नहीं दिया। इस पर रुष्ट होकर ऋषि ने शाप दिया कि शीघ्र ही तुम्हारे पिता के हाथ से तुम्हारी मृत्यु होगी। नरक ने तप करके ब्रह्मा से अमर होने का वर प्राप्त किया और असुरों की सहायता से इंद्र को जीत लिया। अत्याचार जब बहुत बढ़ा तो कृष्ण ने इस पर चढ़ाई की और चक्र से इसका सिर काट लिया।

नरसी मेहता—एक गुजराती भक्त। ये अपने दान के लिए प्रसिद्ध थे। एक बार कुछ साधु इनके पास आए। वे द्वारिका जाना चाहते थे। इनके पास संयोग से कुछ नहीं था। इनके लाख कहने पर भी साधुओं ने अपनी कुछ लेने की टेक न छोड़ी तो इन्होंने एक हुंडी (चेक) द्वारिका के भगवान को 'साँवल साह' के नाम से लिख दी। भगवान ने साधुओं के वहाँ पहुँचने पर साँवल साह का रूप धर हुंडी भुना दी। एक बार इनकी बड़ी लड़की को बच्चा पैदा हुआ पर छठी के दिन इनके पास खर्च करने के लिए कुछ भी न था। कहा जाता है कि भगवान ने स्वयं आकर उस दिन इनका काम चलाया।

नल—१. निषध देश के राजा वीरसेन के पुत्र। नल एक बार विदर्भ देश की राजकुमारी दमयंती की प्रशंसा सुन उस पर मुग्ध हो गए थे। इसी बीच उन्होंने एक हंस को पकड़ लिया। हंस ने उनसे छोड़ देने की प्रार्थना की तथा कहा कि यदि आप छोड़ देंगे तो मैं दमयंती से आपकी प्रशंसा करूँगा। राजा ने उसे छोड़ दिया और हंस विदर्भ देश गया। वहाँ जब दमयंती ने हंस से नल की प्रशंसा सुनी तो वह भी उनसे विवाह करने को इच्छुक हुई। अंत में दमयंती के पिता ने स्वयंवर रचा जिसमें दूर-दूर से राजा आए। इंद्र, यम, अग्नि तथा वरुण आदि देवता

भी इस स्वयंवर में आए। ये लोग जब आ रहे थे तो नल भी आते हुए मिले। देवताओं ने नल से अपना परिचय दिया और दमयंती से जाकर अपने सम्बन्ध में कहने को कहा। नल ने सचमुच जाकर दमयंती को बहुत समझाया पर दमयंती ने नहीं माना और तब सच्चाई के साथ नल ने देवताओं से आकर जो बात हुई थी बतला दी। सीधे काम न बनते देख देवताओं ने एक चाल चली। वे सभी नल का स्वरूप धारण कर स्वयंवर में उसके पास बैठ गए। दमयंती जब सामने आई तो उसके लिए नल को पहचानना एक समस्या हो गई, पर फिर उसने दो बातों से देवताओं को पहचान लिया। १. देवताओं की छाया नहीं होती, २. देवताओं का पैर ज़मीन से कुछ ऊपर रहता है। पहचानने के बाद दमयंती ने नल के गले में जयमाल डाल दी और विवाह हो गया। कलि भी स्वयंवर में आए थे वे नल और दमयंती पर बहुत रुष्ट हुए और ११ वर्ष तक नल के शरीर में घुसने का अवसर देखते रहे पर उन्हें कोई अवसर न मिला। इसी बीच नल को इंद्रसेन और इंद्रसेना नामकी दो संतानें हुईं। १२वें वर्ष कलि ने नल के शरीर में प्रवेश किया और फलस्वरूप नल अपने भाई पुष्कर के साथ जूआ खेलकर अपना पूरा राज्य हार गए और अपने पुत्र और पुत्री को ननिहाल भेज दमयंती के साथ जंगल की शरण ली। उनका मस्तिष्क यहाँ तक खराब हुआ कि एक दिन जंगल में दमयंती को सोती छोड़ वे आगे बढ़ गए। दमयंती सोकर उठी तो बहुत रोयी और अंत में परेशान होकर अपने माता के घर चली गई। इधर नल को कर्कोटक नाम के एक सर्प ने काटकर विरूप कर दिया तथा उसके विष के प्रभाव से कलि का प्रभाव नष्ट होने लगा। अंत में नल ने अयोध्या के राजा ऋतुपर्ण के यहाँ नौकरी कर ली। ये अश्व-विद्या में बड़े पटु थे। वहाँ नल ने

ऋतुपर्ण को अश्वविद्या सिखाई तथा स्वयं उनसे द्यूत सीखा। कुछ दिन बाद दमयंती को पता चला कि ऋतुपर्ण के यहाँ कोई अश्वविद्या विशारद आया है। उसे विश्वास हो गया नल के अतिरिक्त कोई नहीं हो सकता। दमयंती के पिता ने धोखे से नल को बुलाने के लिए ऋतुपर्ण के यहाँ कहलवाया कि मेरी लड़की का स्वयंवर है। ऋतुपर्ण नल को सारथी बना वहाँ तुरत आ पहुँचे और इस प्रकार नल-दमयंती मिलन हुआ। नल ने जो द्यूत में दक्ष हो गया था पुष्कर को फिर जुआ खेलने को बुलाया और अपना राज्य जीत लिया। दे० 'कर्कोटक'। २. रामकी सेना का एक बंदर जो नील का साथी था। दे० 'नील'।

नलकुवर—कुबेर का पुत्र। इसका एक भाई मणिग्रीव था। एक बार नारद ने इन दोनों को शराब पीकर तपोवन में स्त्री-क्रीड़ा करते देख शाप दिया कि तुम लोग अर्जुन वृक्ष हो जाओ। फलस्वरूप नलकुवर और मणिग्रीव दोनों वृंदावन में यमलार्जुन हो गए। कृष्ण ने इन दोनों को उखाड़ कर द्वापर में इनका उद्धार किया। दे० 'यमलार्जुन' 'रंभा'।

नहुष—अयोध्या का एक प्रसिद्ध राजा जो आयु या अंबरीष का पिता था। वृत्रासुर ब्राह्मण था। अतः उसे मारने से इंद्र को जब ब्रह्महत्या लगी तो नहुष को उनकी अनुपस्थिति काल में इंद्र बनाया गया। एक अन्यमत से नहुष ने तपस्या के बल से इंद्रत्व प्राप्त किया था। इंद्र होने के बाद नहुष ने इंद्राणी शची को अपनी स्त्री बनाना चाहा। यह सुन बृहस्पति की राय से इंद्राणी ने इनसे सप्तर्षियों द्वारा ढोई गई पालकी पर बैठ कर आने कहा। नहुष ने ऐसा ही किया और सप्तर्षियों को शीघ्रता से चलाने के लिए सर्पः सर्पः कहा। इस पर अगस्त्य मुनि ने शाप दिया कि तुम सर्प हो जाओ। नहुष सर्प हो गए। एक अन्यमत से पालकी पर बैठे राजा नहुष का पैर

अगस्त्य से छू गया और इसी कारण उन्हें यह शाप मिला। अगस्त्य ने प्रार्थना करने पर यह भी कहा कि तुम्हारी गति तुम्हारे वंश के एक युधिष्ठिर नामक राजा से होगी। वनवास के समय इसी सर्प (नहुप) ने भीम को पकड़ लिया और जब युधिष्ठिर आए तो उन्होंने भीम को छुड़ाकर नहुप को शाप मुक्त किया।

नामदेव—दक्षिण भारत के एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। ये जाति के छीपी थे। कबीर की भाँति इनका भी जन्म विधवा कन्या से हुआ था। इनकी माता बड़ी पवित्र और भक्त थीं। किसी के आशीर्वाद के फलस्वरूप ही इनसे नामदेव का जन्म हुआ था। नामदेव के सम्बन्ध में भी बहुत सी विचित्र कथाएँ प्रसिद्ध हैं।

एक बार नामदेव के माता ने उन्हें पूजा का काम सौंपा। नामदेव ने भोग लगाने को कटोरे में दूध रक्खा। उनका विश्वस था कि मूर्ति सचमुच दूध पीती होगी। भोग की घंटी बजाने पर जब मूर्ति ने दुग्धपान न किया तो नामदेव ने समझा कि भगवान अप्रसन्न हैं। वे तीन दिन तक उसी प्रकार प्रतीक्षा करते रहे और अंत में मूर्ति ने थोड़ा दूध पी लिया और शेष उन्हें प्रसाद-रूप दे दिया।

नामदेव एक बार किसी मेले में गए। वहाँ किसी मंदिर में भगवान के दर्शन के लिए घुसे तो चोरी के डर से इन्होंने अपना जूता कमर में खोंस लिया। ज्यों ही मंदिर में पहुँचे किसी ने जूता देख लिया और इन्हें बाहर कर दिया। ये मंदिर के पीछे जाकर पश्चाताप करने लगे। कहते हैं कि मंदिर जड़ से घूम गया और उसका दरवाजा नामदेव के सामने हो गया।

एक बार एक राजा ने नामदेव को बुलाया और कहा कि तुम अपने को बहुत सिद्ध समझते हो, हमारी एक गाय मर गई है उसे

ऋतुपर्ण को अश्वविद्या सिखाई तथा स्वयं उनसे द्यूत सीखा। कुछ दिन बाद दमयंती को पता चला कि ऋतुपर्ण के यहाँ कोई अश्वविद्या विशारद आया है। उसे विश्वास हो गया नल के अतिरिक्त कोई नहीं हो सकता। दमयंती के पिता ने धोखे से नल को बुलाने के लिए ऋतुपर्ण के यहाँ कहलवाया कि मेरी लड़की का स्वयंवर है। ऋतुपर्ण नल को सारथी बना वहाँ तुरत आ पहुँचे और इस प्रकार नल-दमयंती मिलन हुआ। नल ने जो द्यूत में दक्ष हो गया था पुष्कर को फिर जुआ खेलने को बुलाया और अपना राज्य जीत लिया। दे० 'कर्कोटक'। २. रामकी सेना का एक बंदर जो नील का साथी था। दे० 'नील'।

नलकुबर—कुबेर का पुत्र। इसका एक भाई मणिग्रीव था। एक बार नारद ने इन दोनों को शराब पीकर तपोवन में स्त्री-क्रीड़ा करते देख शाप दिया कि तुम लोग अर्जुन वृक्ष हो जाओ। फल-स्वरूप नलकुबर और मणिग्रीव दोनों वृंदावन में यमलार्जुन हो गए। कृष्ण ने इन दोनों को उखाड़ कर द्वापर में इनका उद्धार किया। दे० 'यमलार्जुन' 'रंभा'।

नहुष—अयोध्या का एक प्रसिद्ध राजा जो आयु या अंबरीष का पिता था। वृत्रासुर ब्राह्मण था। अतः उसे मारने से इंद्र को जब ब्रह्म हत्या लगी तो नहुष को उनकी अनुपस्थिति काल में इंद्र बनाया गया। एक अन्यमत से नहुष ने तपस्या के बल से इंद्रत्व प्राप्त किया था। इंद्र होने के बाद नहुष ने इंद्रणी शची को अपनी स्त्री बनाना चाहा। यह सुन बृहस्पति की राय से इंद्राणी ने इनसे सप्तर्षियों द्वारा ढोई गई पालकी पर बैठ कर आने कहा। नहुष ने ऐसा ही किया और सप्तर्षियों को शीघ्रता से चलने के लिए सर्पः सर्पः कहा। इस पर अगस्त्य मुनि ने शाप दिया कि तुम सर्प हो जाओ। नहुष सर्प हो गए। एक अन्यमत से पालकी पर बैठे राजा नहुष का पैर

अगस्त्य से छू गया और इसी कारण उन्हें यह शाप मिला। अगस्त्य ने प्रार्थना करने पर यह भी कहा कि तुम्हारी गति तुम्हारे वंश के एक युधिष्टिर नामक राजा से होगी। वनवास के समय इसी सर्प (नहुप) ने भीम को पकड़ लिया और जब युधिष्टिर आए तो उन्होंने भीम को छुड़ाकर नहुप को शाप मुक्त किया।

नामदेव—दक्षिण भारत के एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। ये जाति के छीपी थे। कवीर की भाँति इनका भी जन्म विधवा कन्या से हुआ था। इनकी माता बड़ी पवित्र और भक्त थीं। किसी के आर्शीवाद के फलस्वरूप ही इनसे नामदेव का जन्म हुआ था। नामदेव के सम्बन्ध में भी बहुत सी विचित्र कथाएँ प्रसिद्ध हैं।

एक बार नामदेव के माता ने उन्हें पूजा का काम सौंपा। नामदेव ने भोग लगाने को कटोरे में दूध रक्खा। उनका विश्वस था कि मूर्ति सचमुच दूध पीती होगी। भोग की घंटी बजाने पर जब मूर्ति ने दुग्धपान न किया तो नामदेव ने समझा कि भगवान अप्रसन्न हैं। वे तीन दिन तक उसी प्रकार प्रतीक्षा करते रहे और अंत में मूर्ति ने थोड़ा दूध पी लिया और शेप उन्हें प्रसाद-रूप दे दिया।

नामदेव एक बार किसी मेले में गए। वहाँ किसी मंदिर में भगवान के दर्शन के लिए घुसे तो चोरी के डर से इन्होंने अपना जूता कमर में खोंस लिया। ज्यों ही मंदिर में पहुँचे किसी ने जूता देख लिया और इन्हें बाहर कर दिया। ये मंदिर के पीछे जाकर पश्चाताप करने लगे। कहते हैं कि मंदिर जड़ से घूम गया और उसका दरवाजा नामदेव के सामने हो गया।

एक बार एक राजा ने नामदेव को बुलाया और कहा कि तुम अपने को बहुत सिद्ध समझते हो, हमारी एक गाय मर गई है उसे

जिला दो नहीं तो मार डाले जाओगे। नामदेव ने बड़ी विनती की कि वे यह सब बिल्कुल नहीं जानते, पर राजा ने एक न सुनी और अंत में नामदेव ने भगवान से प्रार्थना कर गाय को जिला दिया।

एक बार नामदेव के घर में आग लगी और घर जलने लगा। कहा जाता है कि जो चीजें घर के बाहर थीं उन्हें भी भगवान की आज्ञा समझ नामदेव जलते घर में जलने के लिए डालने लगे। उनका यह भाव देख भगवान ने अपने हाथों उनके लिए दूसरा घर बना दिया।

नारद—प्रसिद्ध देवर्षि जो चारों ओर विचरने तथा चुगली करने के लिए प्रसिद्ध हैं। इनकी गणना प्रजापतियों में भी होती है। इनके जन्म के विषय में कई मत मिलते हैं। अधिक प्रचलित मत यह है कि ये ब्रह्मा के मानस पुत्र थे। ब्रह्मा के कार्य में उत्पन्न होते ही नारद ने कुछ बाधा उपस्थित की। अतः उन्होंने इन्हें एक स्थान पर स्थिर न रह कर घूमते रहने का शाप दिया। नारद ने इस शाप के कारण घूम-घूमकर कितनों का घर बिगारा यह गणना से परे है। नारद झगड़ा लगाने में इतने तेज़ रहे हैं कि दोनों पक्षों को उसकाना ही इनका प्रधान कार्य रहा है। भोजपुरी कहावत 'चोर से कहें चोरी कर, साहु से कहें जाग' इन पर पूर्ण चरितार्थ होती है। कृष्ण जब पैदा हुए तो नारद कंस को तुरन्त सूचना दे आए और बाद में कृष्ण के भी मित्र हो गए। नारद के कृत्यों से पौराणिक कथाएँ भरी पड़ी हैं। ये संगीत विद्या के बहुत बड़े विशारद थे तथा एक जन्म में गंधर्व भी हुए थे। इन्हें १२ वर्ष तक स्त्री भी बनना पड़ा था।

एक बार नारद विष्णु के यहाँ गए और बात ही बात में कहने लगे कि मैंने काम को जीत लिया है। उन्होंने अपनी एक घटना भी सुनाई जिसमें उन्होंने काम पर विजय पाई थी। यह सुन कर विष्णु ने सोचा कि नारद के हृदय में अभिमान आ गया है अतः उसे दूर

करना चाहिए। जब नारद विष्णु के यहाँ से चले तो विष्णु की माया से उन्हें रास्ते में एक नगर मिला जहाँ के राजा ने उन्हें अपनी लड़की दिखाई और उसका भविष्य पूछा। राजा ने यह भी कहा कि कल उसका स्वयंवर है। नारद लड़की के सौंदर्य पर मोहित हो गए और स्वयंवर में उसे जीतने की सोचने लगे। अंत में बहुत सोच विचार कर वे विष्णु के यहाँ गए और उन्हें पूरी कथा सुनाकर उनका रूप माँगा। विष्णु ने कहा कि ठीक है आप जाइए मैं वही करूँगा जिसमें आपका हित हो। नारद दूसरे दिन स्वयंवर में पहुँचे। विष्णु ने उन्हें बन्दर का रूप दे दिया था। सारा स्वयंवर उनके रूप को देख कर मुस्करा रहा था और वे अपने को सब से सुन्दर समझ तन कर यह सोचे बैठे थे कि लड़की उन्हें ही वरेगी। विष्णु भी वेश बदल कर वहाँ पहुँचे थे। इधर-उधर घूम-घामकर राजकुमारी ने विष्णु के गले में जयमाला डाल दी। नारद बड़े विकल हुए। उनकी दशा और भी विचित्र हो गई और यह देख शिव के गणों ने मुस्कराते हुए उन्हें अपने कमंडल में अपना मुँह देखने को कहा। जब नारद ने अपना मुँह देखा तो विष्णु पर बहुत रुष्ट हुए। गणों को तो उसी क्षण राक्षस हो जाने का शाप दिया और विष्णु के यहाँ जाकर उन्हें भी शाप दिया—'स्त्री के बिना मैं दुखी हुआ हूँ तो तुम भी कभी स्त्री के वियोग में (रामावतार) दुखी होगे। और मुझे बंदर बनाया है तो बंदरों से ही तुम्हें सहायता (हनुमान आदि) लेनी होगी।' शाप स्वीकार कर विष्णु ने अपने बल से नारद का अज्ञान दूर कर दिया तब नारद उनके चरणों पर गिर पड़े।

नारद की और भी बहुत सी कथाएँ हैं।

नारायण—नर के बड़े भाई एक ऋषि। देवी भागवत के अनुसार नर और नारायण धर्म तथा दक्ष की कन्या के पुत्र थे। जब दक्ष प्रजापति अपना यज्ञ कर रहे थे, तो नर और नारायण दोनों

गंधमादन पर्वत पर तपस्या कर रहे थे। सती जब यज्ञ कुंड में कूदी तो महादेव ने अपना त्रिशूल यज्ञ विध्वंस करने के लिए फेंका। शूल यज्ञ विध्वंस कर बड़े जोर से नारायण की छाती पर गिरा पर नारायण इतने जोर से गरजे कि भयभीत होकर शूल लौट गया। इस पर महादेव बहुत विगड़े और नारायण के पास आ उनसे युद्ध करने लगे। अन्त में ब्रह्मा ने महादेव को आकर बतलाया कि नारायण भगवान ही हैं इनसे न लड़ो। तब महादेव ने क्षमा माँगी और नारायण को प्रसन्न किया। एक बार इंद्र ने इन लोगों की तपस्या से डर कर स्वर्ग की सुंदरतम अप्सराओं को इनके पास भेजा। नारायण न अप्सराओं तथा इन्द्र को लज्जित करने के लिए अपने उरु से उर्वशी नाम की एक अप्सरा उत्पन्न की तथा उसके साथ ही इंद्र की अप्सराओं की सेवा के लिए उनसे भी सुंदर सहस्रों अप्सराएँ उत्पन्न की। इस पर वे अप्सराएँ बहुत लज्जित हुई और अन्त में सभी अप्सराओं ने मिल कर वर माँगा कि 'हे नारायण! आप मेरे पति हों'। नारायण ने स्वीकार किया। द्वापर में नर अर्जुन हुए और नारायण कृष्ण तथा ये अप्सराएँ गोपियाँ हुईं।

निमि—राजा जनक के एक पूर्वज। एक बार एक यज्ञ करने के लिए इन्होंने वसिष्ठ से कहा पर इंद्र के यहाँ यज्ञ कराने का वचन दे चुकने के कारण वसिष्ठ ने बाद में इनके यहाँ यज्ञ कराने का वादा किया। उनके जाने के बाद और ऋषियों की सहायता से निमि ने यज्ञ आरम्भ करा दिया। इंद्र का यज्ञ समाप्त कर जब वसिष्ठ लौटे तो उन्हें पता चला कि निमि के यहाँ यज्ञ हो रहा है। इस पर वसिष्ठ ने उन्हें शाप दिया कि तुम्हारा यह शरीर न रहेगा। राजा ने भी वसिष्ठ को यही शाप दिया और दोनों का शरीर छूट गया। वसिष्ठ तो मित्रावरुण के वीर्य से पुनः उत्पन्न हुए। इधर यज्ञ करने वाले ऋषियों ने निमि के उसी शरीर को पुनः जीवित

करने की कोशिश की पर निमि ने स्वीकार न किया। देवताओं ने तब से इन्हें आदमियों की पलक पर स्थान दे दिया। आज भी कहा जाता है कि पलकों पर राजा निमि हैं। तुलसी ने मानस में लिखा है—मनहु सकुचि निमि तजेउ दृगंचल।

निशुम्भ—महर्षि कश्यप का औरस पुत्र जो दनु के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। इसके दो और भाई शुम्भ तथा नमुचि थे। नमुचि को इन्द्र ने मार डाला इस पर शेष दोनों भाइयों ने स्वर्ग का राज्य ले लिया और स्वयं राज्य चलाने लगे। जब इन्हें पता चला कि दुर्गा ने महिषासुर को मार डाला है तो निशुम्भ ने दुर्गा को मार डालने की प्रतिज्ञा की। पर बाद में इन दोनों ने दुर्गा से अपने में से किसी एक के साथ विवाह करने को कहा। उन्होंने उत्तर दिया कि युद्ध में मुझे जो जीत लेगा उसके साथ विवाह कर लूँगी। इस पर दोनों से युद्ध हुआ और देवी ने पहले निशुम्भ को और फिर शुम्भ को मार डाला।

नील—राम की सेना का एक बन्दर। यह विश्वकर्मा का अंशावतार माना जाता है। नील नल का साथी था और गोदावरी के किनारे रहता था। जब मुनि लोग वहाँ आँख बंद कर पूजा करते थे तो नल नील उनकी शालिग्राम की मूर्तियों को नदी में फेंक दिया करते थे जिससे मुनियों को बड़ी परेशानी होती थी। तङ्ग आकर मुनियों ने शाप दिया कि नल नील के द्वारा पानी में डाले गए पत्थर तैरने लगेंगे। इसी शाप के कारण नल और नील राम की सेना को उतरने के लिए समुद्र पर पुल बना सके। नील वीर भी थे और राम के अश्वमेध यज्ञ के घोड़े की रक्षा के लिए ये भी नियुक्त किए गए थे।

नूह—ये आदम सानी या दूसरे आदम भी कहे जाते हैं। जल-प्लावन या सैलाब के समय इन्होंने अपनी नाव पर हर एक

जीव का एक-एक जोड़ा रख लिया था। इनकी नाव जूदी नाम के पर्वत की चोटी पर टिकी थी। जल-प्लावन समाप्त होने पर उन्हीं जोड़ों से फिर सृष्टि चली। नूह की उम्र सब से बड़ी कही जाती है। कुछ मतों से ये १४०० वर्ष, १०२० वर्ष या ६५० वर्ष तक जीवित रहे थे।

नृग—एक दानी राजा। एक बार इनकी गायों के समूह में किसी अन्य ब्राह्मण की एक गाय मिल गई और जिसे इन्होंने भूल से एक अन्य ब्राह्मण को हज़ार गाएँ दान देते समय दे डाला। संयोग से ब्राह्मण ने खोजते-खोजते अपनी गाय उस दूसरे ब्राह्मण की गायों में पहचान ली और दोनों लड़ते हुए नृग के पास आए। नृग ने दोनों को बहुत समझाया और अंत में उस एक गाय के लिए हज़ार गाएँ देने को तैयार हुए पर दोनों में से किसी ब्राह्मण ने उनकी बात न मानी। इस पर राजा चिंतित हुए और घबरा कर काँपने लगे। ब्राह्मणों ने रुष्ट होकर कहा—तू ब्राह्मणों को लड़ा कर गिरगिट की तरह सर हिलाता है तो जा एक हजार वर्ष के लिए गिरगिट होगा। मरने के बाद राजा से धर्मराज ने बताया कि आपको पुण्यों के साथ एक शाप भी भोगना है। वे शाप भोगने को पहले तैयार हो गए और एक कूएं में गिरगिट बन कर रहने लगे। अवधि पूरी होने पर कुछ लड़कों ने इन्हें देखा और कृष्ण से कहा। कृष्ण ने इन्हें कूएं में से निकाला और इनका उद्धार कर दिव्य विमान पर चढ़ा स्वर्ग भेजा।

नृसिंह—दानव राज हिरण्यकश्यप ब्रह्मा से प्राप्त वर के कारण अभिमानी तथा अत्याचारी हो गया था। साथ ही वह पशु, मनुष्य और देवता तीनों ही से अवध्य था। इस परेशान होकर विष्णु के यहाँ पहुँचे। उनकी प्रार्थना लिए विष्णु ने स्वयं उत्पन्न होने की

एक स्तम्भ से उत्पन्न हुए। हिरण्यकश्यप पहले स्वयं उनको मारना चाहता था परन्तु उन्होंने अपने पंजों से उसको फाड़ डाला। दे० 'हिरण्यकश्यप'।

परशुराम—विष्णु के छठे अवतार। इनका नाम राम था, परशु या फरसा लिए रहने के कारण इन्हें 'परशुराम' कहा गया। ये जाति के ब्राह्मण थे। भृगुवंशी जमदग्नि को उनकी स्त्री रेणुका से ५ पुत्र थे। परशुराम इनमें सबसे छोटे थे। कहते हैं भगवान का अवतार, जब बहुत उत्पात होती है तो उसे शांत करने के लिए होता है। त्रेतायुग के आरम्भ में क्षत्रियों का अत्याचार बहुत बढ़ गया था अतः उसी के लिए परशुराम का अवतार हुआ। (परशुराम के जन्म के सम्बन्ध में देखिए 'जमदग्नि') परशुराम ने अर्जुन को अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा दी थी तथा भीष्म से इनका गदा-युद्ध हुआ था।

परशुराम शिव के भक्त थे। जब उन्होंने सुना कि राम ने 'शिव का धनुष जनकपुर में तोड़ डाला है तो उन्हें बड़ा क्रोध आया और राम से लड़ने को उद्यत हुए। राम को उन्होंने अपना धनुष चढ़ाने को दिया और कहा कि यदि न चढ़ा सकोगे तो युद्ध करूँगा। राम ने धनुष पर वाण चढ़ाया और परशुराम के लोकों का हरण कर लिया। परशुराम को हारना पड़ा।

एक दिन इनकी माता रेणुका नहाने गई थी। वहाँ चित्ररथ को अपनी स्त्री के साथ क्रीड़ा करते देख उसमें भी वासना का उदय हुआ और उसी दशा में वह घर आई। जमदग्नि योग से यह बात जान गए और क्रोधित होकर अपने पाँचों पुत्रों से बारी-बारी से उसका सर काटने की आज्ञा दी। और तो किसी ने स्नेह-वश यह नहीं किया, पर परशुराम ने पिता की आज्ञा का पालन किया और अपनी माता का सर काट डाला। इस पर जमदग्नि

ने प्रसन्न होकर वर माँगने को कहा। परशुराम ने माता को पुनर्जीवित करने, इस घटना की याद किसी को न रहने, अपने को परमायु वाला बनाने तथा युद्ध में अद्वितीय होने का वर माँगा। उनके पिता ने उन्हें चारों वर दे दिए।

एक बार कार्तवीर्य नामक एक राजा ने परशुरामादि की अनुपस्थिति में उनके आश्रम को उजाड़ डाला जिसके प्रतिशोध के लिए बाद में परशुराम ने उनकी सहस्र भुजाओं (इनका नाम सहस्रार्जुन भी था) को काट डाला। इस पर कार्तिवीर्य के कुटुम्बियों ने एक दिन जमदग्नि को मार डाला। इस बार परशुराम का क्रोध इतना भड़का कि उन्होंने सारे क्षत्रियों को मार डालने का प्रण किया, और केवल एक बार नहीं वरन् २१ बार भूमंडल के क्षत्रियों को मार डाला और अंत में सारी पृथ्वी कश्यप को दान दे दी।

कहा जाता है कि परशुराम आज भी कहीं तप कर रहे हैं और कलियुगांत में अवतरित होने वाले कल्कि को ये ही शिक्षा देंगे।

पराशर—एक ऋषि। इनके पिता का नाम वसिष्ठ था। पर अन्य मत से ये वसिष्ठ के पौत्र और शक्ति के पुत्र थे। इनके जन्म के पूर्व ही शक्ति का देहांत हो गया था अतः वसिष्ठ ने इन्हें पाला-पोसा। पराशर के समागम से सत्यवती को कृष्ण द्वैपायन या व्यास नाम का प्रसिद्ध पुत्र हुआ था।

परीक्षित—उत्तरा का पुत्र और अर्जुन का पौत्र जो अपने पिता अभिमन्यु के मर जाने के बाद पैदा हुआ था। अश्वत्थामा ने पांडु वंश का नाश करने के लिए ऐषीक नाम के अस्त्र से परीक्षित को गर्भ में ही मार डाला था और इस प्रकार इनका मृत शव पैदा हुआ, पर कृष्ण के आशीर्वाद से ये जी उठे। पांडव

जब गलने चले गए तो परीक्षित राजा हुए। इनके ही राज्य-काल में द्वापर का अंत और कलियुग का प्रारम्भ हुआ। जब परीक्षित ने सुना कि उनके राज्य में कलियुग आ गया है तो उसे भगाने के लिए खोजने लगे। अंत में उन्हें कलियुग मिल गया और उसे उन्होंने बहुत डाँटा और फिर जुआ, स्त्री, शराब, हिंसा और स्वर्ण केवल इन ५ स्थानों पर उसे रहने की आज्ञा दी। कलि को यह बुरा लगा और वह परीक्षित को समाप्त करने की सोचने लगा। एक दिन राजा के मुकुट के सोने में कलि घुस गया। वे शिकार खेलने गए और वहाँ एक मुनि से शिकार के बारे में पूछा। मुनि मौन होने से कुछ न बोल सके। इस पर क्रोधित हो सर पर कलि के सवार होने के कारण राजा ने मुनि के गले में एक मरा सर्प डाल दिया। इस पर मुनि के पुत्र शृंगी ने शाप दिया कि सर्प डालने वाले को ७ दिन के भीतर तक्षक सर्प काटेगा। राजा ने भी शाप सुना और अपने पुत्र जनमेजय को गद्दी पर बिठा, मरने के लिए तैयार हो शुकदेव से भागवत की कथा सुनने लगे। अंत में तक्षक के काटने से उसकी मृत्यु हुई। कहा जाता है कि परीक्षित के मरने के बाद कलि को रोकने वाला कोई न रहा और उसने स्वतन्त्रतापूर्वक अपना जाल फैला लिया। दे० 'तक्षक'।

पांडु—अंबालिका के गर्भ से उत्पन्न पांडवों के प्रसिद्ध पिता। इनके पिता का नाम विचित्रवीर्य था। थोड़ी अवस्था में ही क्षय रोग से पीड़ित होकर विचित्रवीर्य मर गए। उन्हें कोई संतान न थी अतः राज्य को चलाने के लिए अंबालिका की सास सत्यवती ने व्यास को अंबालिका के साथ नियोग कर पुत्र उत्पन्न करने की आज्ञा दी। नियोग के समय शर्म या भय से अंबालिका पीली पड़ गई थीं अतः पांडु पीले रंग के पैदा हुए और इसी कारण उनका नाम पांडु पड़ा। इनका विवाह कुन्तिभोज की गोद ली गई पुत्री कुन्ती तथा मद्र-

कन्या माद्री से हुआ था। एक बार ये शिकार खेलने गए और वहाँ मैथुन करते हुए एक हिरन को मार डाला। हिरन-हिरनी किमिंदय ऋपि और उनकी पत्नी थे। उन्होंने राजा को शाप दिया कि तुम जब भी किसी के साथ भोग करोगे मर जाओगे और जिसके साथ भोग करोगे तुम्हारे साथ सती होगी। इस शाप के कारण वे अपनी स्त्रियों से मैथुन न कर सकते थे। फल यह हुआ कि निःसंतान रहने की नौबत आ गई। कुन्ती देवों को बुलाने का मन्त्र जानती थी अतः उसने पांडु की आज्ञा से क्रम से धर्म, वायु और इन्द्र को बुलाया और युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन को पैदा किया। उसी के बुलाने से अश्विनीकुमार भी आए जिनसे माद्री को नकुल सहदेव पैदा हुए। एक वार वसंत का दिन था। पांडु अत्यन्त कामातुर हो गए और माद्री के मना करने पर भी न माने तथा माद्री के साथ संभोग किया। शाप के फलस्वरूप तुरन्त उनका देहांत हो गया और माद्री भी उनके साथ सती हो गई। दे० 'कुन्ती' 'माद्री' 'अंबालिका'।

पाताल—पुराणों के अनुसार पृथ्वी के नीचे के ७ लोक। सात पातालों में अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल और पाताल का नाम लिया जाता है। पाताल को प्रायः लोग बुरा समझते हैं पर इन सभी में स्वर्ग से भी अधिक सुख एवं वैभव है। सात पातालों में क्रम से वल, शंकर, वलि, मय, तक्षक, पाणि तथा वासुकि का आधिपत्य है। सातवें पाताल 'पाताल' के ३०,००० योजन नीचे शेष भगवान रहते हैं।

पारिजात—इंद्र के उपवन नन्दन कानन का प्रधान वृक्ष। यह समुद्र-मंथन के समय निकला था और इंद्र को दिया गया था। इसके पुष्पों की विशेपता यह है कि जो जैसी भी गंध चाहे इससे पा सकता है। एक वार कृष्ण अपनी स्त्री सत्यभामा के साथ

नन्दन कानन देखने गए। सत्यभामा ने इस वृक्ष को लेना चाहा, इस पर कृष्ण और इंद्र में युद्ध हुआ और अन्त में इन्द्र को हराकर कृष्ण इसे द्वारका ले गए। कृष्ण के मरने के बाद यह वृक्ष फिर नन्दन कानन में लाया गया। कई बार दानवों और राक्षसों ने इस वृक्ष को ले जाने का प्रयास किया था।

पार्वती—शंकर की स्त्री तथा गणेश की माता। सती जब दक्ष प्रजापति के यज्ञकुण्ड में जल गईं (दे० 'सती') तो इनका दूसरा जन्म हिमवान या हिमालय पर्वत की स्त्री मेनका या मेना (मैना) के गर्भ से हुआ। पर्वत की पुत्री होने से इनका नाम पार्वती पड़ा। इन्होंने पुनः शंकर को पतिरूप में पाने के लिए बड़ी साधना की। अन्न-जल छोड़ कुछ दिन पत्ते खाकर रहीं और फिर पत्ता भी छोड़ योंही रहने लगीं जिसके कारण इनका नाम अपर्णा पड़ा। इनकी अप्रतिम प्रतिज्ञा देख लोग दंग रह गए। सप्तर्षि लोग शंकर के प्रति इनके अटल प्रेम की परीक्षा लेने आए जिसमें ये पूर्ण उतरीं और अंत में शंकर से इनका विवाह हुआ। पार्वती ही दुर्गा तथा देवी आदि भी कही जाती हैं। [इस सम्बन्ध में 'महादेव' 'कामदेव' 'गणेश' 'कार्तिकेय' 'सती' तथा 'दुर्गा' भी द्रष्टव्य हैं।]

पिंगला—एक पौराणिक वेश्या। यह भागवतानुसार विदेह नगर में रहती थी। एक दिन इसने एक सुन्दर धनिक को जाते देखा और उसके लिए अधीर हो उठी। बड़ी रात तक उसकी प्रतीक्षा करती रही पर अंत में जब वह न आया तो उसे ज्ञान हुआ कि आशा ही सब दुःखों का मूल है। यदि वह आशा न करती तो उसे इतनी रात तक न जागना पड़ता। तभी से उसने भगवान में चित्त लगाया और सुखी हो गई। दे० 'गणिका'।

पीपा—एक मध्ययुगीन भक्त और राजा। पीपा राजस्थान के गागरौनगढ़ के राजा थे। इनका समय १५वीं सदी पूर्वार्द्ध के

आस-पास है। एक बार पीपा से किसी साधु की सेवा में कुछ भूल हो गई जिससे भगवती ने उन्हें राज्य छोड़ भक्त हो जाने का स्वप्न दिखाया और तदनुसार पीपा राज्य छोड़ काशी में रामानन्द से दीक्षा लेकर रहने लगे। बाद में रामानन्द के ही आदेश से वे पुनः गागरौनगढ़ लौट आए। पीपा की प्रार्थना पर एक बार रामानन्द उनके राज्य में आए और वहाँ से पीपा अपनी स्त्री सीता को ले रामानन्द के साथ द्वारका गए। रामानन्द के लौट आने पर भी पीपा अपनी स्त्री के साथ वहीं रहने लगे। कहा जाता है कि एक दिन पीपा अपनी स्त्री के साथ समुद्र में कूद पड़े और दिव्य द्वारावती जा भगवान का दर्शन किया और फिर सात दिन बाद लौटे। वे वहाँ एक गाँव में रहते थे। एक बार पीपा ने बहुत सी स्वर्ण मुद्राएँ एक पिटारी में देखी पर अलोभ के कारण उन्होंने उन्हें लिया नहीं। रात में चोरों ने उस पिटारी को साँप की पिटारी समझ उठाया और इनके घर फेंक आए। इस प्रकार न चाहने पर भी वह धन ईश्वर की कृपा से इनके पास चला आया। पीपा ने वह सारा रुपया साधुओं की आवभगत में व्यय कर दिया।

पुरु—राजा नहुप के पौत्र और ययाति के पुत्र। ययाति की दो पत्नियाँ थीं—देवयानी और शर्मिष्ठा। देवयानी से उन्हें दो पुत्र थे और शर्मिष्ठा से तीन। शर्मिष्ठा के सबसे छोटे पुत्र का नाम पुरु था। (दे० 'ययाति' और 'देवयात्री') देवयानी के पिता शुक्राचार्य ने जब शर्मिष्ठा से मैथुन करने के कारण (शर्मिष्ठा ययाति की यथार्थतः स्त्री न होकर उनकी स्त्री देवयानी की दासी थी) पुरु को वृद्ध हो जाने का शाप दिया तो अपने पुत्र पुरु से ही यौवन प्राप्त कर बहुत दिनों तक ययाति सुख भोगते रहे। ययाति के वन में चले जाने पर पुरु राजा हुए। दे० 'ययाति'।

पुरूरवा—एक प्राचीन राजा। कुछ दिनों के लिए चंद्रमा ने बृहस्पति की स्त्री तारा को अपने घर रख लिया था जहाँ तारा के गर्भ से चंद्रमा को बुध नामक पुत्र पैदा हुआ। बुध का विवाह इला से हुआ था। पुरूरवा, बुध और इला के पुत्र थे। एक बार उर्वशी अप्सरा पृथ्वी पर आई और पुरूरवा उसे देखकर मोहित हो गया। एक अन्य मत से इंद्र की सभा में नाचते समय उर्वशी पुरूरवा पर मोहित हो गई जिससे रुष्ट हो इन्द्र ने उर्वशी को पृथ्वी पर आने का शाप दिया। उर्वशी ने ३ शर्तों पर पुरूरवा के साथ विवाह किया। १. यदि उर्वशी काम से उत्तेजित न हो तो उसके साथ संभोग न किया जाय। २. वह पुरूरवा को कभी भी पूर्ण नग्न न देखे। ३. उसकी चारपाई के पास दो मेढ़े सर्वदा बँधे रहें। बहुत दिन बाद जब गंधर्वों को उर्वशी के बिना कष्ट होने लगा तो उन्होंने विश्वावसु नामक गंधर्व को उर्वशी को शापमुक्त कर लाने के लिए पृथ्वी पर भेजा। इसने चुपके से जाकर उर्वशी के मेढ़ों को चुरा लिया और भागा। पुरूरवा उस समय नंगे थे पर मेढ़ों को जाते देख अपने को रोक न सके और उसी दशा में दौड़े। उन्हें नंगा देखते तथा मेढ़ों के चारपाई से अलग होते ही उर्वशी गंधर्वलोक चली गई। उस समय उर्वशी गर्भवती थी। गंधर्वलोक पहुँचने पर उसने प्रसव किया और लड़कों को लेकर राजा के पास एक रात के लिए फिर आई थी। इन लड़कों के नाम आयु, अमावसु, विश्वायु, श्रुतायु, दृढ़ायु, वनायु तथा शतायु थे। एक अन्य मत से लड़कों की संख्या ६ थी। दे० 'उर्वशी'।

पुरोचन—दुर्योधन का एक दुष्ट कर्मचारी तथा मित्र। इसी ने दुर्योधन की आज्ञा से वारणावत नगर में लाक्षागृह बनवाया था और पांडवों को उसमें शरण दी थी। विदुर के संकेत से भीम को सब ज्ञात हो गया। उन्होंने लाक्षागृह तथा पुरोचन के घर में

ने उसे इस पर शाप दिया और वह मर गया। मरने के बाद लोगों को शासन की चिंता हुई। वेन को कोई संतान न थी। ऋषियों ने वेन के मृत शरीर को हिलाना आरम्भ किया। सर्व-प्रथम उसकी जाँघ से एक बौने और काले व्यक्ति की उत्पत्ति हुई जो भीलों का राजा हुआ। उसके बाद वेन के हाथ से 'पृथु' नामक धर्मात्मा राजा और उनकी स्त्री की उत्पत्ति हुई। पृथु पृथ्वी भर के स्वामी हुए। पृथ्वी उस समय कुपित होकर लोगों को अन्नादि नहीं देती थी। पृथु ने पृथ्वी को मारने के लिए धनुप उठाया। इस पर पृथ्वी गाय का रूप धर उनकी शरण में आई और पृथु ने मनु को बछड़ा बनाकर पृथ्वी से औपधियाँ आदि दुहीं। ऋषियों ने वेदमय दूध इसी के थन से निकाला और फिर विभिन्न योनियों ने अपनी-अपनी इच्छानुसार विभिन्न वस्तुएँ पृथ्वी से लीं। इसके राज्य में पृथ्वी फिर से सबका भरण-पोषण करने लगी।

पृथु ने ९९ यज्ञ करने के बाद १००वाँ यज्ञ जब किया तो इन्द्रा-सन छिन जाने के भय से इन्द्र यज्ञ का घोड़ा लेकर भागा पर पृथु ने अपना घोड़ा छीन लिया और इन्द्र को जलाना चाहा। संयोग से ब्रह्मा ने दोनों में संधि करा दी। अंत में पृथु अपनी स्त्री के साथ तप करने चले गए।

पृथु की गणना भगवान के २४ अवतारों में होती है।

प्रसेनजित्—सत्राजित का एक भाई जो निघ्न का पुत्र था। इसके पास एक स्यमंतक मणि थी जिसे पहन कर एक दिन यह शिकार खेलने गया जहाँ एक सिंह ने इसे मार डाला और मणि छीन ली। दे० 'स्यमंतक।

फ़रहाद—फ़ारस का एक संगतराश। वहाँ की राजकुमारी शीरीं से इससे प्रेम हो गया था। राजा को जब यह बात मालूम हुई तो उसने शीरीं का विवाह ख़ुसरो परवेज़ से कर दिया। शीरीं को दूध

आग लगा दी और अपनी माता तथा भाइयों को लेकर सुरंग के रास्ते से निकल आए। पुरोचन अपने घर में जल गया।

पुष्पक—कुबेर का आकाशगामी रथ। इसे पुष्पक रथ या पुष्पक विमान भी कहते हैं। रावण ने इसे कुबेर से छीन लिया था। रावण का वध करने के बाद राम इसी पर चढ़कर अयोध्या गए। वहाँ जाकर उन्होंने इसे फिर कुबेर को लौटा दिया। इस विमान की विशेषता यह थी कि इस पर स्थान की कमी न होती थी। जितने भी आदमी चाहें बैठ सकते थे। यह स्फटिक मणि का बड़ा सुन्दर बना था। एक मत से मय दानव ने इसे बनाया था।

पुलस्त्य—एक प्रजापति जो ब्रह्मा के मानस पुत्र थे। इनकी गणना सप्तर्षियों में भी होती है। इनके द्वारा ही बहुत से पुराण मनुष्यों तक आए। ब्रह्मा से लेकर इन्होंने विष्णु पुराण पराशर को दिया जिनसे मनुष्यों ने पाया। विश्रवा मुनि इनके पुत्र थे जिनकी कुबेर, रावण, कुम्भकर्ण, विभीषण तथा सूर्पणखा आदि संतानें प्रसिद्ध हैं।

पूतना—द्वापर की एक प्रसिद्ध राक्षसी। कंस ने इसे बाल कृष्ण का संहार करने के लिए भेजा था। यह अपने स्तनों को विषाक्त कर कृष्ण को दूध पिलाने गई पर कृष्ण पर विष का प्रभाव बिल्कुल न हुआ। दूध के बहाने उन्होंने इसका सारा रक्त चूस लिया और यह मर गई। मरते समय इसने अपना आकार बहुत बढ़ा लिया था और मरकर जहाँ यह गिरी ज़मीन धँस गई थी। दे० 'अघासुर'।

पृथु—प्राचीन काल में वेन नाम का एक बड़ा अत्याचारी राजा था। उसने अपने राज्य में सारे धर्म-कर्म बंद करा दिए। ब्राह्मणों

ने उसे इस पर शाप दिया और वह मर गया। मरने के बाद लोगों को शासन की चिंता हुई। वेन को कोई संतान न थी। ऋषियों ने वेन के मृत शरीर को हिलाना आरम्भ किया। सर्व-प्रथम उसकी जाँघ से एक बौने और काले व्यक्ति की उत्पत्ति हुई जो भीलों का राजा हुआ। उसके बाद वेन के हाथ से 'पृथु' नामक धर्मात्मा राजा और उनकी स्त्री की उत्पत्ति हुई। पृथु पृथ्वी भर के स्वामी हुए। पृथ्वी उस समय कुपित होकर लोगों को अन्नादि नहीं देती थी। पृथु ने पृथ्वी को मारने के लिए धनुष उठाया। इस पर पृथ्वी गाय का रूप धर उनकी शरण में आई और पृथु ने मनु को बछड़ा बनाकर पृथ्वी से औषधियाँ आदि दुहीं। ऋषियों ने वेदमय दूध इसी के थन से निकाला और फिर विभिन्न योनियों ने अपनी-अपनी इच्छानुसार विभिन्न वस्तुएँ पृथ्वी से लीं। इसके राज्य में पृथ्वी फिर से सबका भरण-पोषण करने लगी।

पृथु ने ९९ यज्ञ करने के बाद १००वाँ यज्ञ जब किया तो इन्द्रा-सन छिन जाने के भय से इन्द्र यज्ञ का घोड़ा लेकर भागा पर पृथु ने अपना घोड़ा छीन लिया और इन्द्र को जलाना चाहा। संयोग से ब्रह्मा ने दोनों में संधि करा दी। अंत में पृथु अपनी स्त्री के साथ तप करने चले गए।

पृथु की गणना भगवान के २४ अवतारों में होती है।

प्रसेनजित्—सत्राजित का एक भाई जो निम्न का पुत्र था। इसके पास एक स्यमंतक मणि थी जिसे पहन कर एक दिन यह शिकार खेलने गया जहाँ एक सिंह ने इसे मार डाला और मणि छीन ली। दे० 'स्यमंतक।

फ़रहाद—फ़ारस का एक संगतराश। वहाँ की राजकुमारी शीरीं से इससे प्रेम हो गया था। राजा को जब यह बात मालूम हुई तो उसने शीरीं का विवाह खुसरो परवेज़ से कर दिया। शीरीं को दूध

आग लगा दी और अपनी माता तथा भाइयों को लेकर सुरंग के रास्ते से निकल आए। पुरोचन अपने घर में जल गया।

पुष्पक—कुबेर का आकाशगामी रथ। इसे पुष्पक रथ या पुष्पक विमान भी कहते हैं। रावण ने इसे कुबेर से छीन लिया था। रावण का वध करने के बाद राम इसी पर चढ़कर अयोध्या गए। वहाँ जाकर उन्होंने इसे फिर कुबेर को लौटा दिया। इस विमान की विशेषता यह थी कि इस पर स्थान की कमी न होती थी। जितने भी आदमी चाहें बैठ सकते थे। यह स्फटिक मणि का बड़ा सुन्दर बना था। एक मत से मय दानव ने इसे बनाया था।

पुलस्त्य—एक प्रजापति जो ब्रह्मा के मानस पुत्र थे। इनकी गणना सप्तर्षियों में भी होती है। इनके द्वारा ही बहुत से पुराण मनुष्यों तक आए। ब्रह्मा से लेकर इन्होंने विष्णु पुराण पराशर को दिया जिनसे मनुष्यों ने पाया। विश्रवा मुनि इनके पुत्र थे जिनकी कुबेर, रावण, कुम्भकर्ण, विभीषण तथा सूर्पणखा आदि संतानें प्रसिद्ध हैं।

पूतना—द्वापर की एक प्रसिद्ध राक्षसी। कंस ने इसे बाल कृष्ण का संहार करने के लिए भेजा था। यह अपने स्तनों को विषाक्त कर कृष्ण को दूध पिलाने गई पर कृष्ण पर विष का प्रभाव बिल्कुल न हुआ। दूध के बहाने उन्होंने इसका सारा रक्त चूस लिया और यह मर गई। मरते समय इसने अपना आकार बहुत बड़ा लिया था और मरकर जहाँ यह गिरी जमीन धँस गई थी। दे० 'अघासुर'।

पृथु—प्राचीन काल में वेन नाम का एक बड़ा अत्याचारी राजा था। उसने अपने राज्य में सारे धर्म-कर्म बंद करा दिए। ब्राह्मणों

ने उसे इस पर शाप दिया और वह मर गया। मरने के बाद लोगों को शासन की चिंता हुई। वेन को कोई संतान न थी। ऋषियों ने वेन के मृत शरीर को हिलाना आरम्भ किया। सर्वप्रथम उसकी जाँघ से एक बौने और काले व्यक्ति की उत्पत्ति हुई जो भीलों का राजा हुआ। उसके बाद वेन के हाथ से 'पृथु' नामक धर्मात्मा राजा और उनकी स्त्री की उत्पत्ति हुई। पृथु पृथ्वी भर के स्वामी हुए। पृथ्वी उस समय कुपित होकर लोगों को अन्नादि नहीं देती थी। पृथु ने पृथ्वी को मारने के लिए धनुष उठाया। इस पर पृथ्वी गाय का रूप धर उनकी शरण में आई और पृथु ने मनु को बछड़ा बनाकर पृथ्वी से औषधियाँ आदि दुहीं। ऋषियों ने वेदमय दूध इसी के थन से निकाला और फिर विभिन्न योनियों ने अपनी-अपनी इच्छानुसार विभिन्न वस्तुएँ पृथ्वी से लीं। इसके राज्य में पृथ्वी फिर से सबका भरण-पोषण करने लगी।

पृथु ने ९९ यज्ञ करने के बाद १००वाँ यज्ञ जब किया तो इन्द्रासन छिन जाने के भय से इन्द्र यज्ञ का घोड़ा लेकर भागा पर पृथु ने अपना घोड़ा छीन लिया और इन्द्र को जलाना चाहा। संयोग से ब्रह्मा ने दोनों में संधि करा दी। अंत में पृथु अपनी स्त्री के साथ तप करने चले गए।

पृथु की गणना भगवान के २४ अवतारों में होती है।

प्रसेनजित्—सत्राजित का एक भाई जो निम्न का पुत्र था। इसके पास एक स्यमंतक मणि थी जिसे पहन कर एक दिन यह शिकार खेलने गया जहाँ एक सिंह ने इसे मार डाला और मणि छीन ली। दे० 'स्यमंतक।

फ़रहाद—फ़ारस का एक संगतराश। वहाँ की राजकुमारी शीरीं से इससे प्रेम हो गया था। राजा को जब यह बात मालूम हुई तो उसने शीरीं का विवाह ख़ुसरो परवेज़ से कर दिया। शीरीं को दूध

बहुत पसंद था। ख़ुसरो परवेज़ ने फ़रहाद से कहा कि कोहे बेसुतून से शीरीं के महल तक दूध आने के लिए पहाड़ खोदकर तुम नहर बना दो तो तुम्हें शीरीं मिल जायगी। फरहाद संगतराश था ही। उसने काम शुरू किया और पूरा कर डाला। जब शीरीं के पति ने देखा कि काम पूरा हो गया तो उसने फ़रहाद से झूठे कह दिया कि शीरीं मर गई। यह सुनते ही फ़रहाद ने पत्थर काटने वाले हथियार से आत्म-हत्या कर ली। शीरीं को जब पूरी बात ज्ञात हुई तो कोठे पर से कूदकर उसने भी प्राण दे दिए। पहाड़ खोदने के कारण फ़रहाद को 'कोहकन' भी कहते हैं।

बलराम—रोहिणी के पुत्र जो कृष्ण के बड़े भाई थे। ये कभी कभी विष्णु के सातवें अवतार भी माने जाते हैं। विष्णु के सफ़ेद बाल से इनकी उत्पत्ति मानी जाती है। (दे० 'कृष्ण') कृष्ण की भाँति ही अपने जन्म के बाद बलराम भो हटाए गए थे और गोकुल में नंद के यहाँ रखे गए थे। इन्होंने लड़कपन में ही धेनुकासुर को मारा था। बलराम भी कृष्ण के साथ मथुरा गए थे। बलराम के हथियार हल और मूसल थे। ये मद्यप भी थे। एक बार मद्य के नशे में इन्होंने जमुना को अपने नहाने के लिए बुलाया। जमुना नहीं आई इस पर ये बहुत रुष्ट हुए और जमुना को अपने हल से जोतने चले पर अंत में जमुना ने क्षमा माँगी।

भीम और दुर्योधन को गदा की शिक्षा बलराम ने ही दी थी। बलराम द्वारिका में मरे।

रैवत की पुत्री रेवती से बलराम का विवाह हुआ था जिससे इन्हें दो पुत्र थे।

बलि—दैत्य जाति का एक प्रसिद्ध दानी राजा जो विरोचन का पुत्र और प्रह्लाद का पौत्र था। दानशीलता में अपने को बलिदान

कर देने के कारण इसका नाम बलि है। धर्मात्मा और दानी होने के कारण बलि देवताओं पर भी शासन करता था। देवों की माता अदिति को यह बात खली कि उसकी बहन दिति का वंशज उसके पुत्रों पर राज्य करे। उसने अपने पति कश्यप से कह कर एक अनुष्ठान किया जिससे भगवान विष्णु वामन रूप में उसके गर्भ से पैदा हुए। माता के कहने से ये ब्राह्मण रूप में बलि के पास गए। बलि के पूछने पर उन्होंने तीन पग भूमि की याचना की। पहले तो बलि ने कुछ और भी माँगने को कहा पर जब वामन ने कुछ और न माँगा तो बलि ने केवल ३ पग भूमि का संकल्प कर दिया। संकल्प के पूर्व उनके गुरु शुक्र ने मना किया क्योंकि वे भेद समझ गए थे, पर बलि ने बात नहीं मानी। जब भूमि देने का प्रश्न आया तो वामन ने अपना विराट रूप धारण किया और दो पग में सारी पृथ्वी नाप दी। यह देख तीसरे पग के लिए बलि ने अपना शरीर अर्पित कर दिया। इस पर वामन उनसे बहुत प्रसन्न हुए। उनका सारा राज्य तो उन्होंने अदिति के संतोष के लिए इंद्र को दे दिया पर बलि को इन्द्रलोक से भी अधिक सुख का स्थान पाताल या सुतल लोक दे दिया। तब से बलि वहीं हैं। यह भी कहा जाता है कि वहाँ स्वयं विष्णु उनके द्वारपाल हैं। अगले कल्प में बलि ही इन्द्र होंगे। लोग कहते हैं कि इन्द्र बलि को मारना चाहते हैं ताकि अगले कल्प में भी इन्द्रासन उनके हाथ से न जाय और इसीलिए वे वर्षा के दिनों में आकाश से पाताल की ओर बिजली गिराते हैं जो दुर्भाग्य से पृथ्वी तक ही आ कर रह जाती है। दे० 'वामन'।

बालि—एक बन्दर राजा जो किष्किंधा में था। इसकी स्त्री का नाम तारा, भाई का नाम सुग्रीव तथा पुत्र का नाम अंगद था। एक बार एक स्त्री पर सूर्य तथा इन्द्र मोहित हुए और उन लोगों का वीर्य क्रम से स्त्री के मस्तक और गर्दन पर गिरा। मस्तक से बालि

पैदा हुआ और गर्दन से सुग्रीव। इस प्रकार वालि सूर्य का पुत्र था। वालि ने सुग्रीव की स्त्री रूमा को छीन लिया था और उसे मार भगाया था। वालि बड़ा वीर था। रावण को इसने अपनी काँख में दबा रक्खा था। 'दे० रावण'। सुग्रीव ने सीता को खोजने में सहायता की और उसके बदले में राम ने वालि को मार डाला। वालि के बाद अंगद राजा बना। दे० 'ढुंढुभी'।

बुद्ध—बौद्ध धर्म के प्रवर्तक और हिंदुओं के ६वें अवतार। ईसा से प्रायः साढ़े पाँच सौ वर्ष पूर्व इनका जन्म हुआ था। इनके पिता का नाम शुद्धोदन तथा माता का नाम महामाया था। माता के मर जाने पर इनकी विमाता ने इनका पालन-पोषण किया। इनका यथार्थ नाम सिद्धार्थ या गौतम था। शैशवावस्था से ही ये शांत और विचारशील थे। एक दुर्बल वृद्ध, एक रोगी तथा एक शव को देख इन्हें विश्व से और भी विराग हो गया। यह देख इनके पिता ने यशोधरा से इनका विवाह कर दिया और उससे राहुल नाम का इन्हें पुत्र भी हुआ पर ये अंततः रुक न सके और एक रात घर से निकल गए। इधर-उधर बहुत भटकने के बाद गया में इन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ और ये बुद्ध कहलाए। धीरे-धीरे बहुत से लोग इनके शिष्य बने और बौद्ध धर्म भारत और भारत के बाहर भी फैला। इनका देहांत कुशीनगर में हुआ।

बुध—बृहस्पति की स्त्री तारा के गर्भ से चन्द्रमा के औरस पुत्र। इन्हें नपुंसक तथा दूब की तरह कालिमा लिए हरे वर्ण वाला माना जाता है। रवि और शुक्र इनके मित्र तथा चंद्रमा शत्रु हैं। एक मत से बुध नपुंसक नहीं थे और मनु की कन्या इला से इन्होंने विवाह किया था जिससे पुरुरवा नाम का एक पुत्र पैदा हुआ था। 'दे० 'तारा' चंद्रमा'।

भगीरथ—एक सूर्यवंशी राजा जो दिलीप के पुत्र थे। सगर के ६० हज़ार पुत्र कपिल के शाप से भस्म हो गए थे, जिनके अवशेष का पता अंशुमान ने लगाया। सब से पहले सगर ने गङ्गा को लाने के लिए तपस्या आरम्भ की। उनकी मृत्यु के बाद अंशुमान और फिर दिलीप। अंत में भगीरथ अपनी तपस्या द्वारा गङ्गा को लाने में सफल हुए। इनके ही नाम पर गङ्गा को भागीरथी कहते हैं। दे० 'गंगा'।

भर्तृहरि—उज्जयनी के राजा विक्रमादित्य के छोटे भाई। ये अपनी स्त्री को बहुत प्यार करते थे। एक बार किसी ब्राह्मण ने इनको एक फल दिया जो अमर करने वाला था। इन्होंने स्वयं न खाकर प्रेमवश वह फल अपनी स्त्री को दिया। स्त्री किसी दरबारी से फँसी थी, उसने यह फल उसे दिया और दरबारी से यह फल एक वेश्या को मिला। अन्त में इसी प्रकार चक्कर काटते फल एक अहिरिन के पास पहुँचा और उसने इसका उचित उपभोगी भर्तृहरि को जान उन्हें दिया। (फल का यह घूमना विभिन्न पुस्तकों में विभिन्न प्रकार से मिलता है।) इससे भर्तृहरि को यथार्थता का पता चला और वे विरक्त हो गए। भर्तृहरि की बनाई नीति शतक, शृंगार शतक, तथा वैराग्य शतक आदि पुस्तकें प्रसिद्ध हैं।

भरत—१. कैकेयी के गर्भ से उत्पन्न दशरथ के पुत्र। इनका विवाह मांडवी से हुआ था। भरत उधर अपने मामा के यहाँ थे और इधर उनकी माँ कैकेयी ने राम को १४ वर्ष का वनवास और भरत को राज्याभिषेक ये दो वर माँग लिए थे। राम वन में गए और उनके जाते ही दशरथ का देहांत हो गया। इसके बाद भरत बुलाए गए। उन्होंने दशरथ की अंत्येष्ठि क्रिया की और अपनी माता कैकेयी तथा उसकी दासी मंथरा को बहुत बुरा-भला कहा। अंत में इन्होंने राज्य ठुकरा दिया और राम को लौटाने चित्रकूट गए पर

में तपस्वी बन कर रहता था। एक बार भानुप्रताप शिकार खेलता हुआ उस राजा के आश्रम में पहुँचा और उसने इसे पहचान लिया। भानुप्रताप जब खा पीकर सो गया तो उसके शत्रु राजा ने जो तपस्वी बना था अपने मित्र कालकेतु राक्षस को बुलाया। कालकेतु ने राजा को एक क्षण में उसकी राजधानी में पहुँचा दिया तथा उसके पुरोहित को एक गुफा में छिपा कर उसी का रूप धारण कर स्वयं पुरोहित बन बैठा। दूसरे दिन राजा सोकर उठा तो तपस्वी का बड़ा कृतज्ञ हुआ और अपने पुरोहित से ब्रह्मभोज के लिए कहा। पुरोहित ने ब्राह्मणों को निमंत्रित किया तथा भोजन में मनुष्यादि के मांस पकवाए। ब्राह्मण जब खाने बैठे तो आकाशवाणी हुई कि भोजन में मनुष्य का मांस है। तुम लोग न खाओ। इस पर ब्राह्मण बहुत रुष्ट हुए और उन्होंने भानुप्रताप को परिवार के साथ राक्षस हो जाने का शाप दिया। यही भानुप्रताप दूसरे जन्म में रावण हुआ।

भीम—पांडु और कुंती के पुत्र जिनका जन्म वायु से माना जाता है। दे० 'पांडु'। शैशवावस्था में ही एक बार ये अपनी माता के गोद से गिर पड़े फलतः इनके नीचे का पत्थर चूर-चूर हो गया। भीम और दुर्योधन एक ही दिन पैदा हुए थे इसी कारण दोनों में बड़ी प्रतिद्वन्द्विता थी। इन दोनों ने गदायुद्ध बलराम से सीखा था। एक बार दुर्योधन ने भीम को विष देकर जल में फेंक दिया। भीम उसी अवस्था में नागलोक गए और वहाँ से ठीक होकर लौटे। भीम ने एक बार सात हाथियों को उठाकर आकाश में फेंक दिया था, कहा जाता है कि आज तक वे हाथी ऊपर ही हैं। भीम अपनी बलिष्ठता के लिए प्रसिद्ध हैं। दुर्योधन ने जब लाक्षागृह में पांडवों को जलाना चाहा था तो विदुर से इस बात का पता भीम को चल गया था और इसी कारण उन्होंने उसमें आग लगायी

और सुरंग के रास्ते से भाइयों तथा माता के साथ निकल आए। एक बार एक हिंडिबा नाम की राक्षसी इन पर मोहित हो गई थी। इन्होंने उसके पिता को मार उससे विवाह किया जिससे इन्हें घटो-त्कच नाम का वीर पुत्र पैदा हुआ था। द्रौपदी को जब दुःशासन नंगा कर दुर्योधन के जंघे पर बैठाने जा रहा था तो भीम ने दुर्योधन का जंघा तोड़ने तथा दुःशासन के हृदय का रक्त पीने का प्रण किया था। अज्ञात वनवास के समय भीम वल्लव नाम से रसोई बनाने का काम विराट के यहाँ करते थे। वहाँ कीचक ने द्रौपदी के साथ कुछ छेड़-छाड़ की थी जिससे भीम ने उसका वध किया था। महाभारत युद्ध में भीम ने दुःशासन को मार उसके हृदय का रक्त पान किया तथा युद्धांत में दुर्योधन के साथ गदा युद्ध करते हुए उसकी जाँघ तोड़ी और इस प्रकार अपना प्रण पूरा किया। अन्त में अपने भाइयों के साथ ये भी हिमालय में गलने चले गए। दे० 'शकुनी' 'बकासुर' 'कीचक' 'जरासंध' 'जटासुर'।

भीष्म—कुरुदेश के राजा शांतनु के पुत्र। इनकी माता का नाम गङ्गा था। उन्होंने शांतनु से इस शर्त पर शादी की थी कि जो भी चाहूँगी करूँगी। शांतनु को उनसे सात पुत्र हुए और सातों को उन्होंने फेंक दिए। जब यह अंतिम पुत्र देवव्रत या भीष्म उत्पन्न हुआ तो शांतनु ने गंगा को उसे फेंकने से रोका जिस पर रुष्ट होकर गंगा चली गई। इसके बाद शांतनु ने सत्यवती नाम की एक धीवर कन्या से विवाह करने की इच्छा प्रकट की। विवाह इस शर्त पर हुआ कि सत्यवती का पुत्र ही राजा होगा। भीष्म ने राज्यगद्दी पर न बैठने की प्रतिज्ञा की साथ ही आजीवन ब्रह्मचारी रहने की भी प्रतिज्ञा की ताकि सत्यवतो के पत्र का कोई कभी भी विरोधी न हो। सत्यवती से शांतनु को चित्रांगद और विचित्रवीर्य दो पुत्र पैदा हुए। पहले तो चित्रांगद राजा हुआ पर उसके मरने पर

विचित्रवीर्य गद्दी पर बैठा। भीष्म काशिराज की अंबा, अंबिका और अंबालिका नाम की तीन कन्याओं को स्वयंवर से उठा लाए तथा अंबा और अंबालिका का विचित्रवीर्य से विवाह किया। संयोग से क्षय रोग से पीड़ित होकर विचित्रवीर्य बिना संतान पैदा किए मर गए। भीष्म ने राज्य की रक्षा के लिए व्यास के द्वारा दोनों रानियों से धृतराष्ट्र और पांडव नाम के पुत्र पैदा करवाये। महाभारत के युद्ध में भीष्म कौरवों की ओर के सेनापति थे। १० दिन युद्ध करने के बाद स्वयं इन्होंने अपने को मारे जाने की युक्ति बतलाई और तब शिखंडी की सहायता से अर्जुन ने इन्हें घायल किया। घायल होकर भी ये मरे नहीं और ५८ दिन तक बाणों की सेज पर पड़े रहे। अन्त में युधिष्ठिर को तरह-तरह के उपदेश देकर इन्होंने स्वेच्छया प्राण त्याग किया। दे० 'सत्यवती' 'अम्बा' 'शांतनु' 'शिखंडी'।

भृगु—एक प्रसिद्ध ऋषि। महाभारत के अनुसार रुद्र ने एक बार एक बड़ा यज्ञ किया। ब्रह्मा जब आहुति देने लगे तो आई हुई देवांगनाओं को देखकर उनका वीर्य स्खलित हो गया। सूर्य ने अपनी किरणों से वह वीर्य आग में डाल दिया और अग्नि शिखा से भृगु का जन्म हुआ। पद्मपुराण के अनुसार एक बार ऋषियों ने भृगु को इस बात की परीक्षा के लिए भेजा कि ब्रह्मा, विष्णु और शिव में कौन सबसे बड़ा और पूज्य है। भृगु पहले शिव के पास गए। शिव पार्वती के साथ सो रहे थे अतः भृगु उनसे नहीं मिल सके और उन्होंने शिव को शाप दिया कि तुम भग-लिंग के प्रेमी हो अतः भग-लिंग रूप में ही तुम्हारी पूजा हो। फिर वे ब्रह्मा के पास पहुँचे, पर ब्रह्मा अपने कामों में इतने व्यस्त थे कि इनका उचित स्वागत न किया। इस पर उन्हें भृगु ने शाप दिया कि तुम्हारी पूजा कोई भी न करे। अन्त में वे विष्णु

के पास पहुँचे। विष्णु उस समय सो रहे थे। भृगु को क्रोध आया और उनके वक्ष पर इन्होंने एक लात मारी। विष्णु उठे पर क्रोधित न होकर उलटे भृगु का पैर सहलाते हुए कहने लगे कि आपको चोट तो नहीं लगी। इस पर भृगु विष्णु से बहुत खुश हुए और उन्हें सर्वश्रेष्ठ देव घोषित किया। परशुराम भृगु के ही वंशज थे।

भृगु के मारने से विष्णु के वक्ष पर जो चिन्ह बन गया उसे भृगुरेखा कहते हैं।

मंगल—एक तारा। कुछ लोग मंगल और कार्तिकेय को एक मानते हैं। मंगल के जन्म के विषय में भिन्न-भिन्न ग्रंथों में भिन्न-भिन्न कथाएँ मिलती हैं। ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार एक बार पृथ्वी विष्णु पर मोहित हो गई और एक तरुणी का रूप धारण कर उनके पास गई। विष्णु उसका शृंगार करने लगे पर इतने में वह बेहोश हो गई। इसी मूर्च्छा की अवस्था में विष्णु ने उसके साथ संभोग किया, जिससे मंगल पैदा हुए। इसी कारण इन्हें महीसुत आदि कहते हैं।

मंसूर—इनका यथार्थ नाम हुसेन और पूरा नाम 'हुसेन इब्न मंसूर' था पर ये अपने बाप 'मंसूर' के नाम से प्रसिद्ध हुए। एक बार एक धुनिए (हल्लाज) की रूई इन्होंने धुन दी और तब से इनके नाम के साथ 'हल्लाज' शब्द भी लग गया। ये सूफ़ी भक्त थे और अपने को ईश्वर कहते थे। (अनलहक़) यह बात इस्लामी शरह के विरुद्ध थी अत. बादशाह वक्त ने इन्हें फाँसी पर चढ़वा दिया।

मजनू—मजनू का यथार्थ नाम क़ैस था। यह अरब के एक स्थान नज्द के रहने वाले एक रईस का पुत्र था। प्रेम की प्रतिमूर्ति होने से इसे 'मजनू' कहते हैं। इसकी प्रेमिका लैला का भी घर इसके घर के ही पास था। एक बार मजनू की माँ ने मट्ठा लाने

के लिए मजनू को लैला के घर भेजा। वहीं दोनों में प्रेम हो गया और बाद में दोनों के घर वालों ने इनकी आपस में बोल-चाल तक बंद कर दी। पर इनका प्रेम बढ़ता ही गया। अंत में मजनू 'लैला लैला' कहकर पागल होकर नंगा घूमने लगा। मजनू के पिता तथा अन्य सम्बंधियों को उसकी इस दशा पर बड़ी दया आई और उन्होंने लैला के पिता से मजनू के साथ विवाह करने का प्रस्ताव किया। उसने न केवल प्रस्ताव अस्वीकार किया बल्कि लैला की एक दूसरे से शादी भी कर दी। मजनू ने जब यह सुना तो उसकी दशा और भी खराब हो गई। एक दिन उसने लैला के पति से मुलाकात की और उससे पूछा कि क्या लैला तुम्हारे साथ विहारादि करती है, और खुश रहती है? लैला के पति ने हँकारात्मक उत्तर दिया। इसका मजनू के हृदय पर बड़ा सदमा लगा और वह जंगलों में चला गया। वहाँ वह हरिनियों के साथ खेला करता था और उन्हें 'तस्वीर लैला' कहा करता था। लैला के पति के कहने पर भी मजनू को यह विश्वास नहीं हुआ था कि लैला उससे अलग रहकर भी खुश होगी। सचमुच बात भी यही थी। लैला दिन रात कुढ़ा करती थी। अन्त में वह कुढ़न में मर भी गई। बहुत दिन बाद मजनू जंगलों से निकलकर लैला के ससुराल गया। वहाँ उसने सुना कि लैला मर गई। वह कब्रिस्तान में पहुँचा और लोगों से लैला की कब्र पूछने लगा। लोगों ने इस डर से कि कहीं यह भी कब्र में न पैठ जाय उसे कब्र नहीं बतलाई। इस पर मजनू ने एक ओर से कब्रों की मिट्टी सूँघनी शुरु की और अंत में लैला की कब्र पहचान ली। कहते हैं मजनू उस कब्र से लिपट कर मर गया।

एक अन्य मत से मजनू कि मृत्यु किसी रेगिस्तान में ८० हिज्री में हुई थी।

मणिग्रीव—कुवेर का पुत्र । दे० 'नलकूवर' ।

मतंग—एक ऋषि जो शवरी के गुरु थे । एक वार एक नाई का एक ब्राह्मण की स्त्री से संसर्ग हुआ जिससे मतंग ऋषि पैदा हुए । इस वात का पता न तो मतंग ऋषि को था और न इनके पिता को । जब एक गदही से इन्हें इस वात का पता चला तो इन्होंने अपने पिता से कहा और फिर ब्राह्मण वनने के लिए घोर तप करने लगे । इन्द्र ने आकर इन्हें समझाया कि ब्राह्मण वनना सरल नहीं है, प्रयास मत करो । इस पर इन्होंने इंद्र से प्रार्थना की कि मुझे ऐसा पक्षी वना दीजिए जिसकी पूजा सभी लोग करें । इंद्र ने इनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली ।

मत्स्य—विष्णु का पहला अवतार जो सतयुग में हुआ था । इसका आकार वड़ा विचित्र था । ऊपर का अंग मनुष्य का था और नीचे का अंग रोहू मछली का । इसके सिर पर सींग, चार हाथ, तथा छाती पर लक्ष्मी-चिन्ह आदि थे । इसका रंग कृष्ण था । इसके सारे शरीर पर कमल वने थे । मनु से एक वार एक छोटी मछली ने अपनी रक्षा की प्रार्थना की । मनु ने उसे उठा लिया और उसकी वढ़ाई के अनुसार घड़ा, कूआँ तथा गंगा में रखते गए । अन्त में जव वह वहुत वड़ी हो गई तो उसे समुद्र में डाल दिया । उस समय उस मत्स्य ने मनु से वतलाया कि एक नाव वनवा लो प्रलय-काल आ रहा है । मनु ने सचमुच नाव वनवा ली और जलप्लावन के समय उसी नाव में वैठ गए तथा नाव को मछली की सींग से वाँध दी । वह मछली नाव को हिमालय की उच्च चोटी पर ले गई और शिखर से वाँधने को कहा । मनु ने ऐसा ही किया और इस प्रकार जलप्लावन में मनु वच सके । इसके वाद मछली ने अपना प्रजापति तथा मत्स्य-अवतार रूप में परिचय दिया और अंतर्द्धान हो गई । मत्स्य अवतार ने समुद्र

प्रसाद जी ने 'कामायनी' पुस्तक में श्रद्धा को मनु की पत्नी मानी है, (दे० 'श्रद्धा') पर विष्णु पुराण के अनुसार शतरूपा इनकी पत्नी थीं (दे० 'शतरूपा') और मनु-शतरूपा से ही सृष्टि चली। यहूदियों, ईसाइयों और मुसलमानों में यही स्थान आदम और हौवा का है। दे० 'मत्स्य' 'आदम'।

पुराणों के अनुसार एक कल्प में १४ मनु होते हैं। आजकल ७ वें मनु 'मनु वैवस्वत' का अधिकार है। इक्ष्वाकु, नाभाग या नृग, प्रांशु तथा करुप आदि इनके कई पुत्र कहे जाते हैं।

मयूरध्वज—इनका मोरध्वज नाम भी मिलता है। ये एक पौराणिक राजा थे जिनकी भक्ति बड़ी प्रसिद्ध है। एक बार कृष्ण अर्जुन को इनकी लीला दिखलाने के लिए ले गए। कृष्ण एक वृद्ध बने थे और अर्जुन उनके पुत्र। कृष्ण ने मयूरध्वज से कहा कि रास्ते में एक सिंह ने मेरे इस लड़के को पकड़ लिया था और उसने इसे इस शर्त पर छोड़ा कि राजा मयूरध्वज का दायाँ अंग उसके भोजन के लिए हम लोग उसे देंगे। राजा ने प्रसन्नता से कहा कि मुझे इस परोपकार में अपने शरीर को लगाने में बड़ी प्रसन्नता होगी। उन्होंने तुरंत अपनी रानी तथा राजकुमार को अपने शरीर के दो भाग करने की आज्ञा दी। रानी और राजकुमार आरे से राजा के शरीर के दो भाग करने लगे। इसी बीच राजा की बाईं आँख से आँसू की एक बूँद टपक पड़ी। यह देख ब्राह्मण ने कहा कि तुमने तो रोकर अपने शरीर को अशुद्ध कर दिया, दुःखी होकर दिया गया दान हमें स्वीकार नहीं। इस पर राजा ने उत्तर दिया कि मैं दुखी नहीं हूँ। मेरी बाईं आँख अपने इस अभाग्य पर रो रही है कि बाईं ओर होने के कारण उसे परोपकार करने का अवसर नहीं मिला। इस पर प्रसन्न होकर कृष्ण ने अपना दर्शन दिया और उनकी प्रशंसा करते हुए दोनों व्यक्ति विदा हुए।

में घुसकर शंखासुर को मारकर वेद का उद्धार भी किया था। दे० 'शंखासुर'। और भी कई कथाएँ मत्स्यावतार से सम्बन्धित मिलती हैं। दे० 'मनु'।

मदालसा—एक विदुषी स्त्री जो विश्वावसु गंधर्व की कन्या थी। मदालसा का विवाह ऋतुध्वज से हुआ था जिससे इसे विक्रांत, सुबाहु, शत्रुमर्दन तथा अलर्क नाम के चार पुत्र हुए। मदालसा स्वयं अपने पुत्रों को शिक्षा देती थी। प्रथम तीन तो विरक्त हो गए पर चौथा पुत्र अलर्क ऋतुध्वज के बाद गद्दी पर बैठा। मदालसा को कुमार्यावस्था में पातालकेतु दानव पाताल में उठा ले गया था। जब उसका अत्याचार बहुत बढ़ गया तो ऋतुध्वज ने उसे मार कर मदालसा का उद्धार किया था और इसको अपनी पत्नी बनाया था। मदालसा ने अपने पुत्रों को शिक्षा देते समय जो धर्मनीति तथा राजनीति की बातें कहीं थीं बड़ी सुन्दर तथा उपयोगी हैं।

मधु—कैटभ का बड़ा भाई। इसे विष्णु ने मारा था। मधु के जन्म के लिए देखिए 'कैटभ'। कृष्ण विष्णु के अवतार होने के कारण 'मधुसूदन' कहे जाते हैं।

मनु—मनु का नाम वेदों, ब्राह्मणों और पुराणों में कई रूप में आता है पर उनका प्रधान रूप जल-प्लावन के बाद सृष्टि की वृद्धि करने वाला है। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार मनु एक बार एक पोखरे में हाथ धो रहे थे। उनके हाथ में एक छोटी सी मछली आई और उसने अपनी रक्षा के लिए प्रार्थना की। मनु ने उसकी प्रार्थना स्वीकार की। बाद में जब जल-प्लावन हुआ तो इसी मछली ने जो उस समय बड़ी हो गई थी मनु के नाव की रक्षा की। उसी मछली ने उनकी नाव हिमालय पर्वत की चोटी पर पहुँचा दी। जल-प्लावन की समाप्ति के बाद इन्हीं मनु से मनुष्य सृष्टि चली।

प्रसाद जी ने 'कामायनी' पुस्तक में श्रद्धा को मनु की पत्नी मानी है, (दे० 'श्रद्धा') पर विष्णु पुराण के अनुसार शतरूपा इनकी पत्नी थीं (दे० 'शतरूपा') और मनु-शतरूपा से ही सृष्टि चली। यहूदियों, ईसाइयों और मुसलमानों में यही स्थान आदम और हौवा का है। दे० 'मत्स्य' 'आदम'।

पुराणों के अनुसार एक कल्प में १४ मनु होते हैं। आजकल ७ वें मनु 'मनु वैवस्वत' का अधिकार है। इक्ष्वाकु, नाभाग या नृग, प्रांशु तथा करूष आदि इनके कई पुत्र कहे जाते हैं।

मयूरध्वज—इनका मोरध्वज नाम भी मिलता है। ये एक पौराणिक राजा थे जिनकी भक्ति बड़ी प्रसिद्ध है। एक बार कृष्ण अर्जुन को इनकी लीला दिखलाने के लिए ले गए। कृष्ण एक वृद्ध बने थे और अर्जुन उनके पुत्र। कृष्ण ने मयूरध्वज से कहा कि रास्ते में एक सिंह ने मेरे इस लड़के को पकड़ लिया था और उसने इसे इस शर्त पर छोड़ा कि राजा मयूरध्वज का दायाँ अंग उसके भोजन के लिए हम लोग उसे देंगे। राजा ने प्रसन्नता से कहा कि मुझे इस परोपकार में अपने शरीर को लगाने में बड़ी प्रसन्नता होगी। उन्होंने तुरंत अपनी रानी तथा राजकुमार को अपने शरीर के दो भाग करने की आज्ञा दी। रानी और राजकुमार आरे से राजा के शरीर के दो भाग करने लगे। इसी बीच राजा की बाईं आँख से आँसू की एक बूँद टपक पड़ी। यह देख ब्राह्मण ने कहा कि तुमने तो रोकर अपने शरीर को अशुद्ध कर दिया, दुःखी होकर दिया गया दान हमें स्वीकार नहीं। इस पर राजा ने उत्तर दिया कि मैं दुखी नहीं हूँ। मेरी बाईं आँख अपने इस अभाग्य पर रो रही है कि बाईं ओर होने के कारण उसे परोपकार करने का अवसर नहीं मिला। इस पर प्रसन्न होकर कृष्ण ने अपना दर्शन दिया और उनकी प्रशंसा करते हुए दोनों व्यक्ति विदा हुए।

मरियम—ईसा की माँ। इनका विवाह नहीं हुआ था। ईश्वर के हुक्म से इन्हें गर्भ रह गया जिससे ईसा का जन्म हुआ।

महादेव—इन्हें शङ्कर या शिव आदि भी कहते हैं। भृगु के शाप से ये लिंगाकार हो गए और तबसे इनके उसी रूप की पूजा होती है। (दे० 'भृगु') महादेव भगवान के एक रूप हैं और प्रलयंकर शङ्कर बन ये सृष्टि का संहार करते हैं। इनका तांडव नृत्य प्रसिद्ध है। समुद्र मंथन से निकले चंद्रमा को इन्होंने अपने मस्तक पर रक्खा तथा विष को पी गए। विष गले के नीचे नहीं उतारा इसी से इनका गला नीला है। हाथ में डमरू तथा त्रिशूल, शरीर में राख और व्याघ्र-चर्म, मुंडों और सर्पों की माला, जटाजूट, दोनों आँखों के बीच में एक तीसरा नेत्र, पाँच मुख तथा सिर पर गंगा—ये इनकी विशेषताएँ हैं। इनके धनुष का नाम पिनाक या अजगव, वाहन का नाम नंदी (जो बैल है) तथा पाश का नाम पाशुपत है। इनकी स्त्री का नाम पार्वती तथा पुत्रों के नाम गणेश तथा कार्तिकेय है। महादेव का स्थान कैलाश है। एक मत से कुबेर इनके ही भंडारी हैं। दक्ष प्रजापति के यज्ञ का नाश इन्होंने वीरभद्र नाम का गण अपने मुख से पैदा करके किया था। कामदेव को भी इन्हीं ने जलाया था। इन्होंने बहुत से राक्षसों को मारा था। (दे० 'शङ्खचूड़' 'त्रिपुर' 'कामदेव' 'गणेश' 'कार्तिकेय' 'नारायण' 'ज्वर' 'तारकासुर' 'भस्मासुर') महादेव को 'त्रिपुरारि' भी कहते हैं। तारकासुर के तीन पुत्र तारकाक्ष, कमलाक्ष तथा विद्युन्माली ने ब्रह्मा के आशीर्वाद से तीन नगरी अपने-अपने लिए मय से बनवायीं और वर का दान कर लिया कि एक हजार वर्ष बाद ये तीनों नगर मिलेंगे और उस समय यदि कोई बाण से उनका विनाश कर सकेगा तो वही उन तीनों असुरों के मारने में सफल होगा। तीनों ने निश्चिन्त होकर देवताओं पर अत्याचार करना प्रारम्भ किया।

देवता बेचारे ब्रह्मा के पास गए परन्तु उन्होंने महादेव के पास भेज दिया। शिव रथ पर आए और मिलने पर तीनों पुरियों को एक वाण से नष्ट कर दिया। तीनों के स्वामी तारकाक्ष, कमलाक्ष तथा विद्युन्माली भी शिव से ही मारे गए और शिव का इस प्रकार एक नाम त्रिपुरारि पड़ा। एक अन्य मत से प्रलय के समय तांडव नृत्य कर शंकर ही तीनों लोकों को नाश करते हैं अतः उनका नाम त्रिपुरारि है।

महिरावण—रावण का लड़का एक राक्षस जो पाताल में रहता था। एक रात यह युद्ध-शिविर से राम और लक्ष्मण को पातालपुरी में उठा ले गया। हनुमान को जब पता चला तो वे खोजते-खोजते पातालपुरी पहुँचे और महिरावण को मार कर राम लक्ष्मण को ले आए।

महिपासुर—एक असुर जिसका आकार भैंसे का था। यह रंभ राक्षस का पुत्र था। महिपासुर दुर्गा के हाथ से मारा गया। इसी नाम का एक अन्य असुर भी था जिसे स्कंद ने महाभारत काल में मारा था।

मांडवी—राजा जनक के भाई कुशध्वज जनक की कन्या। इसका विवाह भरत से हुआ था। मांडवी को तक्ष और पुष्कर नाम के दो पुत्र पैदा हुए थे।

मांडव्य—एक प्रसिद्ध ऋषि। इनसे कुछ अपराध हो गया था जिसके कारण धर्मराज (यमराज) ने इन्हें सूली पर चढ़ा दिया। इस पर कुपित हो मांडव्य ने धर्मराज को शूद्र हो जाने का शाप दिया जिसके फलस्वरूप वे अंबालिका की दासी के गर्भ से व्यास के नियोग के कारण 'विदुर' रूप में पैदा हुए। दे० 'विदुर'।

मांधाता—अयोध्या का एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा। महाराज

युवनाश्व को कोई पुत्र न था अतः मुनियों के आदेश से उन्होंने एक यज्ञ किया। यज्ञ वेदी पर मुनियों ने महारानी के लिए अभिमंत्रित जल रख छोड़ा था। भूल से रात में राजा को प्यास लगी और उन्होंने वह जल पी लिया। फल यह हुआ कि उन्हें गर्भ रह गया। यथावसर राजा की दाहिनी कोख फटी और मांधाता नाम का पुत्र पैदा हुआ। लड़के के पैदा होने पर उसको दूध पिलाने का प्रश्न आया। इस समस्या के समाधान के लिए इंद्र ने एक अमृतस्रावी अँगुली दी जिसका पान कर एक दिन में वालक वड़ा हो गया। मांधाता वड़ा भारी चक्रवर्ती राजा हुआ। इसका विवाह विंदुमती से हुआ था जिससे पुरुकुत्स, अंवरीष और मुचुकुंद तीन पुत्र और ५० कन्याएँ हुईं।

माद्री—मद्रदेश की राजकुमारी। इसका विवाह पांडु से हुआ था। पांडु को एक हिरनी ने शाप दिया था कि यदि किसी से मैथुन करोगे तो तुरन्त तुम्हारी मृत्यु हो जायगी अतः कुंती के वताए मंत्र द्वारा माद्री को पुत्र की इच्छा से अश्विनीकुमारों को वुलाना पड़ा जिससे नकुल और सहदेव की उत्पत्ति हुई। एक वार वसंत ऋतु में पांडु अपने को न रोक सके और माद्री के साथ संभोग करने लगे जिसके फलस्वरूप उनकी मृत्यु होगई। माद्री अपने पुत्रों को कुंती को सौंप पांडु के साथ सती होगई। दे० 'पांडु'।

माधवदास—जगन्नाथ जी के एक प्रेमी पुजारी। एक वार जव ये वीमार पड़े तो और पुजारियों ने इन्हें मन्दिर से वाहर किया और समुद्र के किनारे रख आए। रात में जव इन्हें जाड़ा लगा तो जगन्नाथ जी ने अपना पीतांवर इन्हें ओढ़ा दिया। प्रातः पुजारियों ने देखा कि जगन्नाथ जी का पीतांवर ग़ायव है तो उन्हें वड़ा आश्चर्य हुआ और वे इधर-उधर खोजने लगे। इतने में

किसी ने आकर कहा कि पीतांबर तो समुद्र के किनारे बैठे माधव-दास के शरीर पर है। पुजारियों ने जाकर देखा तो सचमुच बात ठीक निकली। वे रहस्य समझ गए और भगवान का यथार्थ भक्त जानकर माधवदास को फिर मंदिर में उठा ले आए।

मारीच—ताड़का और सुन्द राक्षस का पुत्र। ताड़का मारीच के साथ अगस्त्य के शाप से राक्षस हो विश्वामित्र के आश्रम के पास रहती थी और यज्ञ में विघ्न डाला करती थी। राम ने जब विश्वा-मित्र की आज्ञा से ताड़का को मार डाला तो मारीच रावण का नौकर हो गया। यह बड़ा मायावी था। रावण के कहने से यह स्वर्ण-मृग बना जिसे मारने के लिए राम को अपनी कुटिया छोड़नी पड़ी। राम जब दूर निकल गए तो मारीच ने राम के स्वर में 'हा ! लक्ष्मण' कहा। इधर कुटी में सीता और लक्ष्मण ने सुना। लक्ष्मण तो इसका रहस्य ताड़ गए पर सीता ने समझा कि राम ही कराह रहे हैं। उन्होंने लक्ष्मण को राम के पास जाने की आज्ञा दी। लक्ष्मण के जाते ही रावण ब्राह्मण के वेश में आया और सीता को उठा ले गया। इस प्रकार मारीच के कारण ही सीता-हरण हुआ। राम ने इसे बाण से मारा तो इसने माया छोड़ दी और अपने असली रूप में आ शरीर छोड़ा।

मीराँबाई—एक प्रसिद्ध भक्त कवियत्री थी। विद्वानों के अनु-सार इनके जन्म और मरण संवत् क्रमशः १५५५–१६०३ के लगभग हैं। इनके जीवन के संबन्ध में कई आश्चर्यजनक बातें प्रसिद्ध हैं। ये थोड़ी अवस्था में ही विधवा हो गई थीं और तब से इनका अधिक समय साधुओं के सत्संग में बीतता था। राजा ने इन्हें बहुत सम-झाया पर अंत में परेशान होकर इनको मार डालने की तरकीब करने लगे। उन्होंने इन्हें आग में रखा पर वह शीतल हो गई, इनके पास संदूक में बन्द कर साँप भेजा पर वह भी इन्हें न काट सका

और फिर अंत में चरणामृत के बहाने इनके पास ज़हर भेजा जिसे मीराँ खुशी-खुशी पी गई पर उनका बाल भी बाँका न हुआ।

एक बार मीराँ वृन्दावन गईं और वहाँ जीव गोस्वामी से मिलने की इच्छा प्रकट की। जीव गोस्वामी स्त्रियों के सामने नहीं जाते थे अतः इस नियम के साथ उन्होंने मिलने से इनकार किया। मीराँ ने कहला भेजा कि अब तक तो वह केवल कृष्ण को पुरुष और शेष सभी आत्माओं को स्त्री समझती थीं पर अब उसे पता चला कि कृष्ण के अतिरिक्त जीव गोस्वामी भी एक पुरुष हैं। यह सुन कर गोस्वामी जी अत्यंत लज्जित हुए और तुरन्त मीराँ से मिलने के लिए बाहर आए। जीवन के अंत में मीराँ द्वारका गईं और वहाँ 'रणछोड़' जी की मूर्ति में समा गईं। 'मीराँ के प्रभु गिरिधर नागर मिलि बिछुड़न नहिं कीजै'।

भक्तों का कहना है कि साक्षात भगवान कृष्ण मीराँबाई के साथ बैठ कर चौसर खेलते थे।

मुचुकुंद—एक सूर्यवंशी राजा जो मांधाता के पुत्र थे। इन्होंने देवासुर संग्राम में देवताओं की सहायता की और विजयी होने पर एक विचित्र वरदान माँगा। वरदान था—मैं बिना जगे बहुत दिन तक सोता रहूँ और इस बीच यदि मुझे कोई किसी प्रकार से उठा दे तो वह भस्म हो जाय। वरदान स्वीकृत हो गया और मुचुकुंद एक कंदरा में सो रहे। बहुत दिन बाद एक बार कालयवन ने मथुरा पर चढ़ाई की। कृष्ण उसे मुचुकुंद की कंदरा में ले जाने के लिए उसके सामने से भगे और भगते भगते उसी कंदरा में जा छिपे। कालयवन इनका पीछा करता पहुँचा तो सामने मुचुकुंद सोया दिखाई पड़ा। कालयवन ने मुचुकुंद को कृष्ण समझ ज़ोर से लात मारी और उनके उठते ही भस्म हो गया। मुचुकुंद वहाँ से उठ कर गंधमादन पर्वत पर तपस्या करने चले गए।

मुहम्मद—इसलाम धर्म के पैग़म्बर जो अब्दुल्ला के लड़के थे। इनकी माता का नाम आमेना या अमीना था। इनका जन्म सन् ५७० ई० में मक्का में हुआ तथा मृत्यु ६३२ ई० में मदीने में हुई थी। इन्होंने इसलाम नाम का एक नया धर्म चलाया जिसके लिए इनका बड़ा विरोध हुआ। यहाँ तक कि अबूजेहल तथा अबूलहब ने भी जो इनके चचा लगते थे इनके साथ लड़ाई की। तंग आकर खुदा के हुक्म से ये मक्का छोड़कर मदीना चले गए। इनकी कुल लगभग १० बीवियाँ थीं जिनमें आयशा (अबूबक्र की पुत्री) तथा हफ़सा (उमर फ़ारुक़ की पुत्री) अधिक प्रसिद्ध थीं। अबूबक्र, उमर फारुक, उसमानग़नी तथा हज़रत अली इनके मित्र थे जो चार खलीफ़े या चार सहाबे कहे जाते हैं। इनमें प्रथम दो तो हज़रत मुहम्मद के ससुर और शेष दो दामाद थे। कुरान हज़रत मुहम्मद पर ही नाज़िल हुई थी।

मूसा—यहूदी, ईसाई और इसलाम धर्म के एक प्रसिद्ध पैग़म्बर जो इम्रान के लड़के थे। इन्हें खुदा का नूर तूर पर्वत पर दिखाई पड़ा था जिससे ये बेहोश हो गए था और पहाड़ जल गया था। ये खुदा से बातचीत करने के लिए भी मशहूर थे। मुसलमानों के लिए जो स्थान मुहम्मद का है यहूदियों के लिए वही मूसा का। तौरेत इन्हीं पर नाज़िल हुई थी। प्रसिद्ध कंजूस कारून (कारूँ) इन्हीं के समय में था जो इनके शाप से अपने ख़ज़ाने के साथ ज़मीन में धँस गया।

मेघनाद—रावण का पुत्र। यह अत्यंत वीर था। इसने युद्ध में इन्द्र को जीता था इसीलिए इसको इन्द्रजित की उपाधि मिली थी। इसी के द्वारा लक्ष्मण को शक्ति लगी थी। अन्त में यह लक्ष्मण के हाथ से ही मारा गया।

मेनका—स्वर्ग की एक अप्सरा। इंद्र की आज्ञा से यह विश्वामित्र को तपच्युत करने गई जहाँ इसे सफलता मिली और

विश्वामित्र को इसके गर्भ से शकुंतला नाम की पुत्री हुई। यह नदी के किनारे शकुंतला को छोड़ कर चली गई और उनका पालन कण्व ऋषि ने किया। दे० 'कण्व' 'शकुंतला'।

मैत्रेयी—एक बड़ी पंडिता और ब्रह्मवादिनी स्त्री जिसका विवाह याज्ञवल्क्य से हुआ था। बृहदारण्यक उपनिषद में इसका पांडित्य देखने योग्य है।

मैना—हिमालय या हिमवान पर्वत की स्त्री जो पितरों की मानसी कन्या थी। इसके गर्भ से गङ्गा और उमा (पार्वती) नाम की कन्याएँ तथा मैनाक नाम का पुत्र तीन संतानें पैदा हुई थीं। इसे मेनका भी कहते हैं।

मैनाक—हिमालय और मैना का पुत्र एक पर्वत। जब इन्द्र पर्वतों की पाँख काटने लगे तो यह डर कर समुद्र में जा छिपा और इसकी पाँख बच गई। समुद्र की आज्ञा से लंका जाते समय इसने हनुमान को आश्रय देना चाहा था।

यक्ष—एक देवयोनि जिसके आदि पुरुष कुबेर कहे जाते हैं। यक्ष लोग कुबेर के सेवक हैं। ये कैलास पर्वत पर कुबेर पुरी में रहते हैं। यक्ष देवों से कुछ नीचे और राक्षसों से ऊपर समझे जाते हैं।

यदु—यदुवंशियों के आदि पुरुष। ये ययाति और देवयानी के सबसे बड़े लड़के थे। ययाति ने पहले इन्हीं से जवानी माँगी (दे० 'ययाति') किन्तु इन्होंने स्वीकार नहीं किया जिससे रुष्ट हो ययाति ने इन को शाप दिया और इनका राज्य नष्ट हो गया। इंद्र की कृपा से पुनः इनका राज्य मिल गया था। दे० 'देवयानी'।

यम—मृत्यु के देवता। कुछ मतों से नरक के देवता। इनका स्थान यमलोक कहलाता है। मरने के बाद सबसे पहले मनुष्य

इनके समक्ष जाता है जहाँ इनके लिपिक चित्रगुप्त उसके पाप-पुण्य का लेखा-जोखा सुनाता है और उसके अनुसार न्यायकर्ता यम उसे नरक या स्वर्ग में भेजते हैं। इसी कारण इन्हें धर्मराज भी कहते हैं। दे० 'धर्म'। यम संज्ञा के गर्भ से सूर्य के औरस पुत्र हैं। यमी (जो बाद में यमुना हुई) इन्हीं की बहिन थीं। इसी कारण जमुना में नहाने वाले (विशेषतः यमद्वितीया को) नरक में नहीं जाते। हेमलता, सुशीला तथा विजया आदि यम की कई स्त्रियाँ हैं। युधिष्ठिर इन्हीं के पुत्र थे तथा विदुर इनके अवतार थे। दे० 'मांडव्य' तथा 'विदुर'। यम का वाहन भैंसा है और इनका स्वरूप बड़ा भयावना है। इन्हें यमराज भी कहते हैं। आदमी जब मरता है तो उसके अंगुष्ठ शरीर को इन्हीं के दूत ले जाते हैं।

यमलार्जुन—गोकुल के दो वृक्ष जो पूर्व जन्म के कुबेर के पुत्र नलकूबर और मणिग्रीव थे। ये एक बार मद्य पीकर मग्न हो स्त्रियों के साथ जल-क्रीड़ा कर रहे थे। इस पर रुष्ट हो नारद ने इन्हें पेड़ हो जाने का शाप दिया। यशोदा ने कुपित हो एक बार कृष्ण को ओखली से बाँध दिया। कृष्ण ओखली को खींचते इन्हीं दोनों वृक्षों के बीच पहुँचे और ज़ोर से खींचा जिससे ये टूट गए और इस प्रकार दोनों मुक्त हो गए। दे० 'नलकूबर'।

यमुना—एक नदी जो पहले यमी थीं। ये यमराज की बहन तथा सूर्य और संज्ञा की पुत्री हैं। इनके उत्पन्न होने के पूर्व संज्ञा ने एक बार सूर्य की ओर चंचल दृष्टि से देखा था जिससे रुष्ट हो सूर्य ने शाप दिया कि तुम्हारी पुत्री चंचल होकर बहेगी। इसी कारण संज्ञा की पुत्री यमी यमुना होकर बही। यमुना को एक बार बलराम से क्षमा-याचना करनी पड़ी थी (दे० 'बलराम')। कलिंद पर्वत से निकलने के कारण जमुना को कलिंदजा भी कहते हैं पर साथ ही सूर्कलिंद का अर्थ यें भी है। यमुना में यम द्वितीया को नहा

लेने से लोगों का विश्वास है कि यमराज नर्क में नहीं भेजते। दे० 'यम'।

ययाति—एक चंद्रवंशी राजा जो नहुष के पुत्र थे। इनकी दो स्त्रियाँ थीं। एक तो शुक्राचार्य की कन्या देवयानी और दूसरी वृषपर्वा की कन्या शर्मिष्ठा। शर्मिष्ठा यथार्थतः आरंभ में उनकी स्त्री न थी। वह देवयानी की दासी बन कर आई थी। शुक्राचार्य ने ययाति को उसके साथ संभोग न करने के लिए भी कहा था। पर शर्मिष्ठा ऋतुमती हुई तो उसने ययाति से भोगार्थ प्रार्थना की। प्रार्थना स्वीकार कर ययाति ने उसके साथ भोग किया तबसे वह उनकी पत्नी गई हो। शुक्राचार्य ने जब यह सुना तो उन्हें वृद्ध हो जाने का शाप दिया पर जब ययाति ने भोग का कारण समझाया तो शुक्राचार्य ने इतना शोधन कर दिया कि यदि कोई ययाति का बुढ़ापा ले लेगा तो वे पुनः जवान हो जायँगे। ययाति को देवयानी से यदु और तुर्वसु तथा शर्मिष्ठा से द्रुह्यु, अणु और पुरु—इस प्रकार कुल पाँच पुत्र थे। इन्होंने अपने पुत्रों से अपनी जवानी देने का प्रस्ताव किया। और सभी ने तो इनकार कर दिया पर पुरु तैयार हुआ। फलस्वरूप पुरु वृद्ध हो गया और ययाति पुनः जवान हो गए। युवा होकर इन्होंने अपनी स्त्रियों को लेकर सहस्र वर्षों तक सुख भोगा और अन्त में पुरु को राज्य देकर तप करने चले गए। तप के बाद स्वर्ग में जाने पर तप में अपने को इंद्र से श्रेष्ठ बताने पर इंद्र के शाप से इन्हें च्युत होना पड़ा, पर अष्टक ऋषियों ने इन्हें बीच में रोक लिया और फिर स्वर्ग भेज दिया। कहा जाता है कि एक सहस्र वर्ष सुख भोगने के बाद इन्होंने देखा कि विषयों के भोगने से किसी को संतोष नहीं मिलता। यह विचार कर इन्होंने पुरु को उसकी जवानी लौटा दी थी तथा अपना बुढ़ापा लेकर तप के लिए निकल गए थे। दे० 'देवयानी' 'शर्मिष्ठा'।

यशोदा—कृष्ण को पालने वाली माता तथा नन्द की स्त्री। जिस देवी को कंस ने कृष्ण समझ कर पटकना चाहा था यशोदा के ही गर्भ से उत्पन्न हुई थीं। एक मत से ये देवी पूर्व जन्म में सती थीं और यशोदा उनकी माता प्रसूति थीं। दक्ष-यज्ञ में जब सती जल मरीं तो उन्हें पाने के लिए उनकी माता प्रसूति तप करने लगीं। तप से प्रसन्न हो थोड़ी देर के लिए सती ने उनकी पुत्री होना स्वीकार किया था और उसी को पूर्ण करने के लिए प्रसूति को यशोदा बनना पड़ा और सती क्षण भर के लिए उनकी पुत्री बन-कर आई थीं। दे० 'कृष्ण' 'नंद'।

याज्ञवल्क्य—बाशकलि और वैशंपायन के प्रसिद्ध शिष्य एक ऋषि। मैत्रेयी और कात्यायनी इनकी दो स्त्रियाँ थीं जो बड़ी विदुषी थीं। विशेपतः मैत्रेयी तो बड़ी तार्किक और दर्शन शास्त्र की पंडित थी। कुछ स्थानों पर याज्ञवल्क्य की एक स्त्री का नाम कात्यायनी के स्थान पर गार्गी मिलता है। एक बार याज्ञवल्क्य से उनके गुरु वैशंपायन रुष्ट हो गए और उन्होंने सारी विद्या लौटाने को कहा। याज्ञवल्क्य ने गुरु से मिला सारा ज्ञान उगल दिया जिसे वैशंपायन के अन्य शिष्यों ने तीतर बन कर चुग लिया। इसी लिए उनकी शाखाओं का नाम तैत्तिरीय हुआ। इनका जनक के दरबार में भी रहने का उल्लेख मिलता है। कुछ मतों से जनक के दरबार के याज्ञवल्क्य दूसरे थे। याज्ञवल्क्य की बनाई एक स्मृति भी मिलती है।

युधिष्ठिर—पांडु और कुंती के सबसे बड़े पुत्र जो धर्मराज के औरस पुत्र कहे जाते हैं। इनके विषय में प्रसिद्ध है कि ये कभी झूठ नहीं बोलते थे तथा बड़े न्यायप्रिय एवं शांत प्रकृति के थे। इन्हें शिक्षा द्रोणाचार्य से मिली थी। धृतराष्ट्र युधिष्ठिर को ही राजा बनाना चाहते थे पर दुर्योधन ने नहीं बनने दिया। बाद में उसी के कारण

पांडवों को वनवास मिला और पाँचों भाई कुंती के साथ वन में चले गए। दुर्योधन ने एक बार लाक्षागृह में पांडवों को जलाने का प्रबन्ध किया पर विदुर के संकेत द्वारा ये लोग बच गए थे। अर्जुन ने द्रौपदी को जीता पर माता की आज्ञा से (दे० 'अर्जुन' तथा 'द्रौपदी') पाँचों पांडवों के साथ द्रौपदी का विवाह हुआ। युधिष्ठिर को जुए का शौक था जिसके कारण उन्हें अपना राज्य तथा द्रौपदी को ही नहीं हारना पड़ा अपितु १२ वर्ष के वनवास एवं एक वर्ष के गुप्त वनवास की नौबत आ गई। गुप्त वनवास में पांडव विराट के यहाँ नौकर रूप में थे। वहाँ युधिष्ठिर राजा के साथ जुआ खेलते थे। वहाँ से लौटने पर महाभारत का युद्ध हुआ जिसमें युधिष्ठिर के द्वारा 'अश्वत्थामा मारा गया न जाने हाथी या मनुष्य' कहलाकर द्रोणाचार्य को समाप्त कराया गया। बुढ़ौती में अन्य पांडवों को लेकर युधिष्ठिर हिमालय पर्वत पर गलने चले गए और सब के मर जाने पर इनका देहांत हुआ। द्रौपदी के अतिरिक्त युधिष्ठिर की एक स्त्री देविका भी थी जिससे इन्हें यौधेय नाम का पुत्र हुआ था।

यूनुस—एक पैग़म्बर। ये लोगों को खुदा की शिक्षा देते थे। इन्हें एक मछली खा गई थी पर बाद में ये निकले और एक पेड़ की छाया में इन्होंने अपनी खाल ठीक की।

यूसुफ़—एक प्रेमी जो अपनी शुद्धता के लिए प्रसिद्ध हैं। इनके पिता का नाम याकूब और माता का राक़ील था। यूसुफ़ बहुत सुंदर थे। इनके भाई इनसे जलते थे। एक बार उन्होंने इन्हें एक सौदागर के हाथ बेच दिया। सौदागर के साथ ये मिस्र पहुँचे। वहाँ के राजा (या मंत्री) ने इन्हें खरीद लिया और ये दारोगा बने। इनका रूप देख वहाँ की शाहजादी जुलेखा (एक मत से यह राजा या मंत्री की स्त्री थी) इन पर मोहित हो गई और सहवास की प्रार्थना की पर इन्होंने प्रार्थना अस्वीकार कर दी। इस पर उसने इन पर

छेड़छाड़ करने का अपराध लगाया और ये जेल भेज दिए गए। बाद में वहाँ के राजा के एक स्वप्न का फल ठीक बतलाने पर इन्हें जेल से छोड़ा गया। एक मत से ये बाद में वहाँ के राजा हुए तथा जुलेखा का इनसे विवाह भी हो गया। ११० वर्ष राज्य करने के बाद ये मरे।

योगकन्या—यशोदा के गर्भ से उत्पन्न होने वाली देवी जो सती थीं और जो कृष्ण के स्थान पर कारागृह में रक्खी गई थीं। कंस ने इन्हें दोनों हाथ से उठाकर पटकना चाहा पर ऊपर से ही ये उड़ गईं। दे० 'यशोदा' 'देवकी' 'कृष्ण' तथा 'कंस'।

रंतिदेव—महाराज संकृति के पुत्र एक दानी राजा। इन्होंने अपना सारा राज्य तथा धन-वैभव आदि दान कर दिया और अंत में इनके पास खाने को भी कुछ नहीं रह गया। एक बार ४८ दिन भूखे रहने के बाद इन्हें थोड़ी सी खाद्य-सामग्री मिली और उसे ये खाने ही जा रहे थे कि एक ब्राह्मण आ पहुँचा। उसे थोड़ा खिला कर ज्योंही विदा किया एक शूद्र आ गया। राजा ने उसे भी कुछ देकर तृप्त किया। शेष बचा खाने बैठे तब तक एक चांडाल आ गया और उसने शेष भोजन माँग लिया। अब राजा के पास केवल पानी शेष था। उसे वे पीना ही चाहते थे तब तक एक कसाई ने आकर पानी माँगा। राजा ने प्रसन्नता-पूर्वक पानी भी दे दिया। उसी समय भगवान विष्णु ने प्रसन्न हो उन्हें दर्शन दिया और ये स्वर्ग चले गए।

रंभा—एक अप्सरा जो स्त्री-सौंदर्य की चरम सीमा समझी जाती है। यह समुद्र-मंथन के समय निकली थी। इसे एक बार इन्द्र ने विश्वामित्र को तपच्युत करने को भेजा। विश्वामित्र ने रुष्ट हो सहस्र वर्ष तक इसे पत्थर हो जाने का शाप दे दिया और शाप स्वीकार कर यह सहस्र वर्ष तक पत्थर रही। एक बार रंभा

शृंगार कर कुबेर के पुत्र नलकूबर के यहाँ जा रही थी। रा
रावण ने उसे देख लिया और उसके सौंदर्य पर इतना मं
हुआ कि बलात्कार करने से अपने को न रोक सका। रंभा ने
होकर उसे शाप दिया कि आज से यदि किसी के साथ बला
करोगे तो तुम्हारे सिर कट जायँगे। इसी शाप के भय से र
सीता के साथ लंका में बलात् कुछ न कर सका था।

रघु—प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा। इनकी माता का नाम सुद
तथा पिता का नाम दिलीप था। इनके पुत्र का नाम अज
अज के पुत्र का नाम दशरथ था। इस प्रकार रघु राम के पर
थे। इन्हीं के नाम के आधार पर राम को राघव या रघुपति
कहा जाता है। दिलीप ने वसिष्ठ की आज्ञा से कामधेनु की
नंदिनी को प्रसन्न कर 'रघु' की प्राप्ति की थी। दिलीप ने एक
अश्वमेध यज्ञ किया। उस समय रघु छोटी अवस्था के थे
भी उन्होंने घोड़े का भार इन्हें सौंपा। संयोगवश इन्द्र ने
को पकड़ लिया और इस प्रकार छोटी अवस्था में ही रघु को
से युद्ध करना पड़ा। युद्ध में इन्होंने इन्द्र को हरा दिया। सिं
पर बैठने के उपरांत रघु ने चारों दिशाओं को जीतकर विश्
यज्ञ किया। इस यज्ञ में इन्होंने अपना सब कुछ ब्राह्मणों
दिया था।

रणछोड़—श्री कृष्ण का एक नाम। द्वारिका की कृष्ण मूर्
नाम से पुकारी जाती है। *मीराबाई* इसी मूर्ति में विली
गई थीं। कहते हैं कि जरासंध की चढ़ाई के समय कृष्ण सम
छोड़ द्वारिका भाग गए थे, इसी आधार पर उनका नाम 'रण
पड़ा था।

रति—दक्ष प्रजापति की कन्या और कामदेव की पत्नी। इ
उत्पत्ति विना माता के हुई थी। कहते हैं कि दक्ष ने अपने

से इसे उत्पन्न किया था। इसका रूप इतना अप्रतिम और आकर्षक था कि जो भी देखता इससे प्रेम करने लगता, इसी कारण इसका नाम 'रति' पड़ा। शिव ने जब इसके पति कामदेव को भस्म कर डाला तो इसी ने रोकर शिव से यह वर प्राप्त किया कि बिना अंग के भी कामदेव सर्वदा जीवित रहेंगे। बाद में रति ने प्रद्युम्न की स्त्री मायावती के रूप में जन्म ग्रहण किया था। दे० 'कामदेव'।

राधा—१. कृष्ण की प्रेमिका। श्रीमद्भागवत में इनका नाम नहीं मिलता। इनके सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न कथाएँ मिलती हैं। एक मत से कृष्ण ने एक बार वन में रमण करने की इच्छा की और तुरत उनके बाएँ अँग से राधा पैदा हो गईं। एक मत से राधा सुदामा के शाप से गोकुल में पैदा हुई थीं। इनके पिता का नाम वृषभानु था। इनका विवाह अयन घोष नामक गोप से हुआ था। पर, बाद में कृष्ण से इनका प्रेम हो गया। एक मत से ये कृष्ण की विवाहिता स्त्री थीं। राधा को लक्ष्मी का अवतार भी मानते हैं। कहा जाता है कि पैदा होते ही ये १६ वर्ष की युवती हो गई थीं। दे० 'कृष्ण'।

२. धृतराष्ट्र के सारथी अधिरथ की पत्नी। इसने कर्ण को पाला था इसी कारण उनका एक नाम राधेय भी है। दे० 'कर्ण'।

राम—यों तो राम तीन हैं—बलराम, परशुराम तथा रामचंद्र, पर राम से साधारणतः रामचंद्र का ही अर्थ लिया जाता है। सूर्यवंशी कुल में दशरथ तथा कौशल्या के पुत्र के रूप में इनका जन्म हुआ था। ये विष्णु के सातवें अवतार थे। (जन्म के लिए दे० दशरथ) इनका समय त्रेता का अन्तिम चरण था। राम के लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न तीन भाई थे जिनमें लक्ष्मण से ही इनका विशेष प्रेम

था। बाल्यावस्था में ही विश्वामित्र राम और लक्ष्मण को यज्ञ-रक्षार्थ अपने आश्रम में ले गए। वहाँ राम ने बहुत से राक्षसों और राक्षसियों का वध किया जिनमें ताड़का का नाम अधिक प्रसिद्ध है। वहाँ से विश्वामित्र के साथ ये लोग जनकपुर चले। रास्ते में राम ने अहल्या (दे० 'अहल्या') का उद्धार किया। जनकपुर में राम ने शिव के धनुष को तोड़कर सीता का वरण किया। वहाँ से अयोध्या आने पर दशरथ इन्हें राजा बनाना चाहते थे पर मंथरा और कैकेयी (दे० 'कैकेयी,' 'मंथरा') के षड्यंत्र से ये १४ वर्ष के लिए वन भेज दिए गए। वन में सीता और लक्ष्मण भी इनके साथ गए। बाद में भरत (दे० 'भरत') इन्हें लौटाने गए पर ये नहीं लौटे। उसके बाद राम, लक्ष्मण और सीता के साथ ये दक्षिण की ओर बढ़े। अगस्त्य ने इन लोगों को पंचवटी जाने की सलाह दी। यह स्थान राक्षसों से भरा था। यहाँ रावण की बहन शूर्पणखा राम से प्रेम करने लगी। यह एक दिन विवाह का प्रस्ताव लेकर आई पर राम ने उसे लक्ष्मण के पास भेजा और लक्ष्मण ने उसके नाक कान काटकर उसे विरूप कर दिया। उसके कहने पर खर और दूषण अपनी सेना के साथ राम से युद्ध करने आए पर वे सभी मारे गए। इसके बाद शूर्पणखा अपने भाई रावण के पास गई और उसने उसे बहकाया। (दे० रावण) रावण ने मारीच (दे० मारीच) की सहायता से सीता-हरण किया और उन्हें लंका ले गया। राम और लक्ष्मण सीता के लिए इधर-उधर भटकने लगे। उन्होंने 'कबंध' का वध किया जिसने मरते समय सुग्रीव से सहायता लेने की सलाह दी। आगे बढ़कर ये लोग सुग्रीव तथा हनुमान आदि के संपर्क में आए। राम ने सुग्रीव के भाई बालि को मारकर सुग्रीव को राज्य दिलाया। हनुमान ने सीता का पता लगाया (दे० हनुमान) और फिर राम ने बंदरों और नलनील की

सहायता से पुल बाँध कर समुद्र पार किया और लंका में रावण को उसकी सेना सहित मार कर सीता का उद्धार किया। दे० 'रावण' 'शबरी' 'अहल्या' 'खर' 'सीता' 'मारीच' 'ताड़का'।

रावण—विश्रवा मुनि का पुत्र, एक महान पंडित पर अत्याचारी राक्षस जिसका राज्य लंका में था। एक बार लंका में राक्षसों और विष्णु में युद्ध हुआ और राक्षस हारकर पाताल में चले गए। राक्षसों के प्रधान सुमाली ने प्रण किया कि इस हार का बदला वह कभी न कभी विष्णु से लेगा। इसके लिए उसने अपनी पुत्री कैकसी (कुछ लोगों ने इसका नाम 'निकशा' दिया है) को पुलस्त्य मुनि के पुत्र विश्रवा ऋषि को दी। विश्रवा और कैकसी से रावण, कुंभकर्ण, विभीषण और शूर्पणखा, ये चार संतानें हुईं। इनमें रावण सबसे बड़ा, विकराल और दस सिरों वाला था। विश्रवा की एक और पत्नी 'इडा-विडा' थी जिससे कुबेर का जन्म हुआ था। उस समय कुबेर लंका में राज्य कर रहा था। उसके वैभव को देखकर रावण को भी वैभवशाली बनने का शौक हुआ और अपने भाइयों के साथ तप करने लगा। अंत में अपने दसों सिरों को काटकर उसने चढ़ा दिया। इस पर ब्रह्मा ने प्रसन्न होकर उसे वर माँगने की आज्ञा दी। रावण ने दो वर प्राप्त किए। पहिला दानवों, यक्षों तथा देवों से अवध्य होने का था। और दूसरा अपनी इच्छानुसार कोई भी रूप धारण करने का।

इसके बाद रावण लंका आया। विश्रवा के कहने से कुबेर ने लंका छोड़ दी और कुबेरपुरी चले गए। रावण लंका में राज्य करने लगा। इसने तीनों लोक जीत लिए और इंद्रादि देवों को भी परास्त किया। वरुण उसका बाग सींचने लगे, सूर्यचन्द्र उसके घर में प्रकाश करने लगे और इसी प्रकार अन्य देवताओं को भी उसका दास बनना पड़ा। रावण ने मय की पुत्री देवकन्या

मंदोदरी से विवाह किया जिससे उसे वीर पुत्र मेघनाद की प्राप्ति हुई। अक्षयकुमार भी इसका एक प्रसिद्ध पुत्र था। यों इसकी बहुत सी स्त्रियाँ थीं जिनसे इसे एक मत से एक लाख पुत्र थे। रावण बड़ा दंभी और अत्याचारी था। एक बार यह कैलाश को उठाकर ले जाने लगा पर शिव के दबाने पर यह रोने लगा और शिव से इसने बहुत अनुनय-विनय किया। शिव ने प्रसन्न होकर इसे चंद्र-हास नाम की तलवार दी। एक बार रावण नदी में पूजा कर रहा था पास ही उसी नदी में सहस्रार्जुन अपनी स्त्रियों के साथ क्रीड़ा कर रहा था। उसने अपने सहस्र हाथों से नदी का पानी रोक दिया इस पर रावण की पूजा में बाधा पड़ी वह उससे लड़ने गया। सहस्रार्जुन ने इसे पकड़ लिया और अपने रनिवास में बाँध दिया। उसकी स्त्रियाँ इसके दस सिरों पर दीपक रखती थीं और लड़के इसका तमाशा बनाते थे। पुलस्त्य मुनि के कहने पर वहाँ से इसकी मुक्ति हुई। एक बार यह बालि से लड़ने गया। बलि पूजा कर रहा था। उसने संकेत से इसे बैठने को कहा पर इसने एक न सुनी और उससे लड़ गया। बालि ने इसे अपनी काँख में दबा लिया और पूजा (एक मत से ६ महीने तक) करता रहा। पूजा के उपरांत जब उसने सूर्य को अर्घ देने के लिए अपना हाथ ऊपर उठाया तो रावण वहाँ से भाग निकला। बालि को उस समय शायद यह भूल गया था कि उसके बगल में रावण है।

रावण के पापों का घड़ा भर गया तो वह सीता को चुरा लाया। सीता से वह विवाह करना चाहता था पर सीता ने स्वीकार नहीं किया। रावण इस पर सीता को मारने दौड़ा पर मंदोदरी के समझाने पर मान गया। दे० 'रंभा'। अंत में राम का उससे युद्ध हुआ। युद्ध में राम ज्योंही उसका सर काटते थे दूसरा सर वहाँ लग आता था। यहाँ तक कि यही करते-करते राम थक गए। विभीषण,

से, जो राम के पक्ष में था, पूछने पर पता चला कि रावण के हृदय में अमृत है इसी से वह नहीं मरता। अतः राम ने पहले अमृत को जलाया और तब इसे मारने में सफल हुए। इसीलिए कहते हैं कि विभीषण यदि न फूटता तो रावण न मरता। 'घर के फूटे लंका दाह'। रावण के मरते समय राम ने लक्ष्मण को उससे नीति की बातें सीखने के लिए भेजा था। इसका अर्थ यह है कि राम भी उसे बहुत बड़ा विद्वान मानते थे।

राहु—सिंहिका का पुत्र एक राक्षस। समुद्र-मंथन के बाद जब धन्वंतरि अपने हाथ में अमृत का कलश लिए निकले तो दैत्यों ने वह कलश छीन लिया और आपस में उसे पीने के लिए लड़ने लगे। विष्णु ने मोहिनी रूप धारण कर दैत्यों को मोहित किया और उनसे अपने को पंच स्वीकार कराया। जब दैत्यों ने उन्हें पंच मान लिया तो वे देवों को अमृत पिलाने लगे। सभी दैत्य उनकी छवि के आकर्षण में मंत्रमुग्ध पड़े थे। राहु ने यह धोखा ताड़ लिया और देवों का वेष धारण कर सूर्य और चन्द्रमा के बीच जा बैठा। मोहिनी ने ज्योंही उसे थोड़ा सा अमृत पिलाया सूर्य और चंद्रमा को इस बात का पता चल गया और उन्होंने बात खोल दी। तुरन्त ही विष्णु का सुदर्शन चक्र चला और राहु का सर धड़ से अलग हो गया। अमृत पी लेने से वह मरा नहीं और उसके दोनों भाग जीवित रहे। सर का नाम तो राहु रहा और धड़ का नाम केतु पड़ा। तभी से राहु चंद्रमा और सूर्य से द्वेष रखने लगा। उसी कारण कभी-कभी उन दोनों को ग्रसता या ग्रहण करता है जिसे हम लोग सूर्यग्रहण या चंद्रग्रहण की संज्ञा देते हैं।

रुक्मिणी—विदर्भराज भीष्मक की कन्या, रुक्मा की बहिन और श्रीकृष्ण की स्त्री। कृष्ण और रुक्मिणी दोनों एक दूसरे की प्रशंसा

सुन एक दूसरे पर मोहित थे पर भीष्मक और रुक्मी रुक्मिणी का विवाह कृष्ण से न कर जरासंध के कहने से शिशुपाल से करना चाहते थे। अंत में शिशुपाल से विवाह करने की तैयारी होने लगी। विवाह के पूर्व पूजा करके आते समय कृष्ण ने रुक्मिणी का हरण कर लिया। रुक्मी, भीष्मक, जरासंध तथा शिशुपाल आदि ने उनका पीछा किया पर सभी हार गए। रुक्मी ने प्रतिज्ञा की थी कि बिना कृष्ण को मारे और रुक्मिणी को मुक्त किए वह घर न लौटेगा। कृष्ण के बाण से मूर्च्छित होकर वह गिर गया और कृष्ण उसका वध करने जा रहे थे पर रुक्मिणी के कहने से केवल बाल काट कर छोड़ दिया। रुक्मी प्रण पूरा न कर सकने के कारण घर न जा सका और अपने राज्य में एक नगरी बना कर रहने लगा। श्री कृष्ण ने द्वारका पहुँच कर रुक्मिणी से विधिवत शादी की। कृष्ण को रुक्मिणी से प्रद्युम्न आदि दस पुत्र तथा एक पुत्री—कुल ११ संतानें पैदा हुईं। रुक्मिणी कृष्ण की पटरानी थीं। इन्हें लक्ष्मी का अवतार कहा गया है।

रुद्र—एक वैदिक देवता। महादेव शङ्कर का यह विध्वंसात्मक रूप या पक्ष है। वेद में उन का यही रूप मिलता है। पैदा होते ही रोने के कारण इनका नाम रुद्र पड़ा। रुद्रों की संख्या ११ कही गई है और ये कश्यप और सुरभि के पुत्र कहे गए हैं। एक मत से रुद्र या रुद्रों की उत्पत्ति ब्रह्मा के भ्रूमध्य से हुई है। दे० 'महादेव'।

रेणुका—प्रसेनजित की पुत्री और जमदग्नि की पत्नी। परशुराम इन्हीं के पुत्र थे। विशेष के लिए देखिए 'जमदग्नि' और 'परशुराम'।

रेवती—कुशस्थली के राजा रैवत की कन्या और बलराम की स्त्री। रेवती इतनी सुंदर थी कि उसके पिता ने ब्रह्मा से उसके लिए एक सुन्दर पति बनाने या बतलाने की प्रार्थना की। ब्रह्मा ने प्रार्थना

स्वीकार कर उसके योग्य वलराम को वतलाया। रेवती को निशठ और उल्मूक नाम के दो पुत्र हुए थे। वलराम की मृत्यु के वाद उनके साथ रेवती सती होगई। दे० 'वलराम'।

रोमपाद—अंग देश के एक राजा। एक वार इन्होंने ब्राह्मणों का अपमान किया जिससे राज्य भर के ब्राह्मण चले गए और पूरे राज्य में सूखा पड़ा। राजा ने पंडितों को वुला कर सूखा दूर करने की युक्ति पूछी। सव लोगों ने ऋष्यश्रृंग मुनि को वुला कर यज्ञ करने की राय दी। (दे० 'ऋष्यश्रृंग') राजा ने वेश्याओं को भेजकर पहले ऋष्यश्रृंग मुनि को आकर्पित किया, जव वे आकर्पित हो गए तो वेश्याएँ उन्हें अपने साथ अंग देश में ले आईं। उनके आते ही वर्पा होने लगी। ऋष्यश्रृंग मुनि के पिता ने योग से यह सव जान लिया और दौड़े उस राज्य में आए। रोमपाद ने सुना तो वहुत डरे और उन्होंने दशरथ की कन्या शांता का जिसे उन्होंने पोष्य पुत्री के रूप में अपने यहाँ रक्खा था, ऋष्यश्रृङ्ग से व्याह कर दिया। यह देख कर ऋष्यश्रृङ्ग के पिता प्रसन्न हो लौट गए। रोमपाद महाराज दशरथ के मित्र थे। इन्हें लोमपाद भी कहते हैं।

रोहिणी—वसुदेव की स्त्री और वलराम की जननी। कंस के डर से रोहिणी अपने पुत्र वलराम के साथ गोकुल में नन्द के घर रहती थी। यदुवंश की समाप्ति के वाद वसुदेव के साथ रोहिणी सती होगई।

रोहित, रोहिताश्व—हरिश्चंद्र और शैव्या का पुत्र। दे० 'हरिश्चंद्र'।

लक्ष्मण—दशरथ के पुत्र जो सुमित्रा के गर्भ से पैदा हुए थे। ये शत्रुघ्न के साथ ही पैदा हुए थे। इनका राम से विशेप स्नेह था। ये शेप के अवतार कहे जाते हैं। राम के साथ ये भी विश्वामित्र

के आश्रम में गए थे। जनकपुर में इनका विवाह ऊर्मिला से हुआ। ये राम के साथ वन में गए। पंचवटी में शूर्पणखा राम के यहाँ से लौट कर इनके पास गई और इन्होंने उसके कान तथा नाक काट उसे विरूप कर दिया। वाल्मीकि रामायण के अनुसार लक्ष्मण ने शूर्पणखा को सीता पर आक्रमण करते देख ऐसा किया था। लंका में इन्हें शक्ति लगी थी जिसे ठीक करने के लिए हनुमान संजीवनी लाए। इंद्रजीत का वध लक्ष्मण ने किया था। लक्ष्मण को ऊर्मिला से अंगद और चंद्रकेतु नाम के दो पुत्र हुए। राम की मृत्यु के बाद इन्होंने सरयू में शरीर त्यागा। लक्ष्मण अपनी उग्रता के लिए प्रसिद्ध थे। दे० 'ऊर्मिला'।

लक्ष्मी—विष्णु की स्त्री तथा एक मत से काम की माता। इनकी उत्पत्ति समुद्र-मंथन से हुई थी। कुछ अन्यमतों से ये आदित्य की स्त्री थीं तथा भृगु और ख्याति से इनका जन्म हुआ था। सीता, रुक्मिणी आदि लक्ष्मी के ही अवतार हैं। लक्ष्मी धन की अधिष्ठात्री देवी मानी जाती हैं तथा सर्वदा युवती रहने वाली कही जाती हैं। लक्ष्मी और सरस्वती में वैर है। दे० 'विष्णु'।

लव—राम और सीता के पुत्र। इनका जन्म वाल्मीकि के आश्रम में हुआ था। राम ने उत्तर कोशल के अंतर्गत श्रावस्ती नगरी में इनकी राजधानी बनाई थी। एक मत से ये कुश के जुड़वा भाई थे पर दूसरे मत से सीता के गर्भ से केवल इन्हीं का जन्म हुआ था। एक दिन सीता इन्हें लेकर नहाने चली गईं। रोज़ वे इन्हें नहीं ले जाती थीं अतः वाल्मीकि उस दिन लव को आश्रम में न देख चिंतित हुए। इन्होंने तुरन्त कुश से एक दूसरे लव की उत्पत्ति की। जब सीता लौटीं तो उनके साथ असली लव था अतः कुश से उत्पन्न लव का नाम कुश रख कर ऋषि ने उसे सीता को दे दिया। इस प्रकार सीता के लव और कुश दो पुत्र हो गए।

लवणासुर, लाक्षागृह

लवणासुर—कुंभीनसी के गर्भ से मधु का एक पुत्र जो मथुरा में रहता था। लवणासुर को अपने पिता से शंकर का दिया एक शूल मिला था जिसके कारण वह अवध्य हो गया था। शंकर का ऐसा वरदान था कि वह शूल जब तक उसके हाथ में रहेगा उसे कोई नहीं मार सकेगा। जब लवणासुर का अत्याचार बहुत बढ़ गया तो राम ने शत्रुघ्न को इसे मारने को भेजा। शत्रुघ्न ने लवणासुर का वध उस समय किया जब उसके हाथ में शूल नहीं था।

लाक्षागृह—एक बार वारणावत नगर में महादेव का कोई मेला लगने वाला था। उस नगर तथा मेले की प्रशंसा सुन पांडव अपनी माता कुंती के साथ जाने को तैयार हुए। यह सुन दुर्योधन ने अपने एक दुष्ट मंत्री पुरोचन को वहाँ भेज एक लाक्षागृह तैयार कराया और उसमें पांडवों को जलाने के लिए पुरोचन इनकी प्रतीक्षा करने लगा। उचित समय पर पांडव वहाँ पहुँचे और कुछ दिन इधर उधर बिताने के बाद उस लाक्षागृह में रहने लगे। घर को देखने से तथा विदुर के कुछ संदेशों से पांडवों को घर का पूरा रहस्य ज्ञात हो गया। विदुर के भेजे एक व्यक्ति ने उस घर में एक ऐसी सुरङ्ग बनाई जिसके द्वारा ये लोग आग लग जाने पर भी बाहर निकल सकें। जिस दिन पुरोचन आग लगाने वाला था पांडवों ने नगर के ब्राह्मणों का भोज किया। बहुत से गरीब भी खाने आए। सब लोग तो खा-पीकर चले गए पर एक भीलनी अपने पाँच पुत्रों के साथ खाकर वहीं सो रही। रात में जब पुरोचन सो गया भीम ने पहले उसके कमरे में आग लगाई और फिर चारों ओर आग लगी वह माता तथा भाइयों के साथ सुरङ्ग से बाहर निकल गया। सबेरे भीलनी को अपने पाँच पुत्रों के साथ जला देख लोगों ने समझा कि पांडव अपनी माता कुंती के साथ जल मरे। पुरोचन भी अपने पाप का फल, जल कर, पा गया। दुर्योधन के पास जब भीलनी

के आश्रम में गए थे। जनकपुर में इनका विवाह ऊर्मिला से हुआ। ये राम के साथ वन में गए। पंचवटी में शूर्पणखा राम के यहाँ से लौट कर इनके पास गई और इन्होंने उसके कान तथा नाक काट उसे विरूप कर दिया। वाल्मीकि रामायण के अनुसार लक्ष्मण ने शूर्पणखा को सीता पर आक्रमण करते देख ऐसा किया था। लंका में इन्हें शक्ति लगी थी जिसे ठीक करने के लिए हनुमान संजीवनी लाए। इंद्रजीत का वध लक्ष्मण ने किया था। लक्ष्मण को ऊर्मिला से अंगद और चंद्रकेतु नाम के दो पुत्र हुए। राम की मृत्यु के बाद इन्होंने सरयू में शरीर त्यागा। लक्ष्मण अपनी उग्रता के लिए प्रसिद्ध थे। दे० 'ऊर्मिला'।

लक्ष्मी—विष्णु की स्त्री तथा एक मत से काम की माता। इनकी उत्पत्ति समुद्र-मंथन से हुई थी। कुछ अन्यमतों से ये आदित्य की स्त्री थीं तथा भृगु और ख्याति से इनका जन्म हुआ था। सीता, रुक्मिणी आदि लक्ष्मी के ही अवतार हैं। लक्ष्मी धन की अधिष्ठात्री देवी मानी जाती हैं तथा सर्वदा युवती रहने वाली कही जाती हैं। लक्ष्मी और सरस्वती में वैर है। दे० 'विष्णु'।

लव—राम और सीता के पुत्र। इनका जन्म वाल्मीकि के आश्रम में हुआ था। राम ने उत्तर कोशल के अंतर्गत श्रावस्ती नगरी में इनकी राजधानी बनाई थी। एक मत से ये कुश के जुड़वा भाई थे पर दूसरे मत से सीता के गर्भ से केवल इन्हीं का जन्म हुआ था। एक दिन सीता इन्हें लेकर नहाने चली गईं। रोज वे इन्हें नहीं ले जाती थीं अतः वाल्मीकि उस दिन लव को आश्रम में न देख चिंतित हुए। इन्होंने तुरन्त कुश से एक दूसरे लव की उत्पत्ति की। जब सीता लौटीं तो उनके साथ असली लव था अतः कुश से उत्पन्न लव का नाम कुश रख कर ऋषि ने उसे सीता को दे दिया। इस प्रकार सीता के लव और कुश दो पुत्र हो गए।

लवणासुर—कुंभीनसी के गर्भ से मधु का एक पुत्र जो मथुरा में रहता था। लवणासुर को अपने पिता से शंकर का दिया एक शूल मिला था जिसके कारण वह अवध्य हो गया था। शंकर का ऐसा वरदान था कि वह शूल जब तक उसके हाथ में रहेगा उसे कोई नहीं मार सकेगा। जब लवणासुर का अत्याचार बहुत बढ़ गया तो राम ने शत्रुघ्न को इसे मारने को भेजा। शत्रुघ्न ने लवणासुर का वध उस समय किया जब उसके हाथ में शूल नहीं था।

लाक्षागृह—एक बार वारणावत नगर में महादेव का कोई मेला लगने वाला था। उस नगर तथा मेले की प्रशंसा सुन पांडव अपनी माता कुंती के साथ जाने को तैयार हुए। यह सुन दुर्योधन ने अपने एक दुष्ट मंत्री पुरोचन को वहाँ भेज एक लाक्षागृह तैयार कराया और उसमें पांडवों को जलाने के लिए पुरोचन इनकी प्रतीक्षा करने लगा। उचित समय पर पांडव वहाँ पहुँचे और कुछ दिन इधर उधर बिताने के बाद उस लाक्षागृह में रहने लगे। घर को देखने से तथा विदुर के कुछ संदेशों से पांडवों को घर का पूरा रहस्य ज्ञात हो गया। विदुर के भेजे एक व्यक्ति ने उस घर में एक ऐसी सुरङ्ग बनाई जिसके द्वारा ये लोग आग लग जाने पर भी बाहर निकल सकें। जिस दिन पुरोचन आग लगाने वाला था पांडवों ने नगर के ब्राह्मणों का भोज किया। बहुत से गरीब भी खाने आए। सब लोग तो खा-पीकर चले गए पर एक भीलनी अपने पाँच पुत्रों के साथ खाकर वहीं सो रही। रात में जब पुरोचन सो गया भीम ने पहले उसके कमरे में आग लगाई और फिर चारों ओर आग लगी वह माता तथा भाइयों के साथ सुरङ्ग से बाहर निकल गया। सवेरे भीलनी को अपने पाँच पुत्रों के साथ जला देख लोगों ने समझा कि पांडव अपनी माता कुंती के साथ जल मरे। पुरोचन भी अपने पाप का फल, जल कर, पा गया। दुर्योधन के पास जब भीलनी

शाप दिया। दे० 'निमि'। वसिष्ठ के पास नंदिनी थी जिसके लिए इनमें और विश्वामित्र में युद्ध हुआ था। नंदिनी ने एक सेना देकर वसिष्ठ की सहायता की और विश्वामित्र हार गए। उनके सौ पुत्रों को वसिष्ठ ने जला दिया। वसिष्ठ की प्रधान पत्नी कर्दम की कन्या अंरुधती थी। इनके अतिरिक्त उर्जा तथा अक्षमाला आदि भी उनकी कई स्त्रियाँ थीं जिनसे इनको बहुत सी संतानें हुईं। दे० 'विश्वामित्र' 'नंदिनी'।

वसु—देवताओं का एक समूह जिसमें ८ देवता हैं। विभिन्न ग्रंथों में इन आठ देवताओं के नाम के विषय में मतभेद है। महाभारत के अनुसार इसमें धर, ध्रुव, सोम, विष्णु, अनिल, अनल, प्रत्यूक तथा प्रभास हैं। भागवत के अनुसार दक्ष प्रजापति की कन्या वसु का विवाह धर्म से हुआ था। उसी से आठो वसु उत्पन्न हुए। एक बार आठो वसुओं ने वसिष्ठ की गाय नंदिनी की चोरी कर ली। इस पर रुष्ट हो वसिष्ठ ने आठों को मनुष्य हो जाने का शाप दिया और आठो वसु शांतनु और गंगा के ८ पुत्रों के रूप में उत्पन्न हुए। इनमें ७ को तो गंगा ने जनमते ही फेंक दिया पर ८वें भीष्म बच गए। दे० 'गंगा' तथा 'शांतनु'। एक मत से ८ वसु इन्द्र के सेवक थे।

वसुदेव—प्रसिद्ध यदुवंशी जो कृष्ण के पिता थे। इनको कहीं देवमीढ़ का और कहीं शूर का पुत्र होना लिखा है। इनकी माता का नाम मारिषा था। पांडवों की माता कुंती इनकी बहिन थी। एक मत से आहुक की सात पुत्रियों का विवाह इनसे हुआ था पर दूसरे मत से इनकी १२ स्त्रियाँ थीं जिनमें प्रधान देवकी और रोहिणी थीं। देवकी से कृष्ण थे और रोहिणी से बलराम। कृष्ण और बलराम की मृत्यु के बाद वसुदेव मरे।

वाराह—विष्णु का तीसरा अवतार। एक वार हिरण्यकशिपु का भाई हिरण्याक्ष पृथ्वी को घसीट कर पाताल में ले गया। उसे मार कर पृथ्वी का उद्धार करने के लिए विष्णु ने वाराह अवतार धारण किया और अपने कार्य में सफल हुए।

वाल्मीकि—प्रसिद्ध ऋषि और भारत के आदि कवि। ये जन्म के ब्राह्मण थे पर कुसंगति में पड़कर दुष्ट हो गए थे और लूटपाट करते थे। एक वार इन्हें कुछ साधु या सप्तर्षि मिले। साधुओं का सामान ये छीनना ही चाहते थे कि उनमें से एक ने कहा—'पहले अपने घर जाकर पूछ आओ कि चोरी करके तुम सवका पेट भरते हो, क्या वे सव तुम्हारे पाप का भी हिस्सा लेंगे!' वाल्मीकि ने घर जाकर पूछा तो सभी ने इनकार किया। यह सुनकर उसकी आँखें खुलीं और वे साधुओं की शरण में आए। उन्होंने राम-राम जपने को कहा पर जव उसके मुँह से यह न निकला तो साधुओं ने 'मरा-मरा' कहने को कहा और यही उलटा नाम मरा-मरा कहते-कहते वाल्मीकि 'राम-राम' कहने लगे और अंत में इतने लीन हुए कि वर्षों तक एक स्थान पर पड़े रहे। दीमकों (वल्मीकि) ने मिट्टी से इनको ढक दिया। फिर कुछ दिन वाद जव वे ही साधु आए तो वल्मीकि से ढका देख इनको वाल्मीकि नाम से पुकारा और तव ये उठे। वनवास में गर्भवती सीता इन्हीं के आश्रम में थीं। वाल्मीकि ने ही लव-कुश को पढ़ाया और वाल्मीकि रामायण की रचना की। 'दे० 'लव' 'कुश' 'सीता'।

वासुकि—कश्यप और कद्रू के पुत्र जो सर्पों में प्रधान हैं। इनकी वहिन का नाम मनसा था जिसका विवाह वासुकि ने अपने कुल के रक्षार्थ जरत्कारु मुनि से किया था जिनसे उसे आस्तीक नाम का पुत्र पैदा हुआ। आस्तीक ने ही जनमेजय से प्रार्थना कर नागयज्ञ वंद करवाया नहीं तो सारे सर्प कुण्ड में गिर कर जल गए

होते। समुद्र-मंथन के समय वासुकि नाग को रस्सी बनना पड़ा था। दे० 'समुद्र-मंथन'।

विंध्याचल—एक पर्वत। एक बार हिमालय को नीचा दिखाने के लिए विंध्याचल ने सूर्य से कहा कि सुमेरु पर्वत की भाँति मेरी भी प्रदक्षिणा किया करो पर सूर्य ने नहीं माना। इस पर विंध्याचल बढ़ने लगा और बढ़कर उसने सूर्य का मार्ग रोकना चाहा। यह देख देवताओं ने अगस्त्य ऋषि से प्रार्थना की और अगस्त्य विंध्याचल के पास गए। विंध्य ने उन्हें देखते ही लेटकर साष्टांग प्रणाम किया। ऋषि ने कहा कि जब तक मैं न लौटूँ इसी प्रकार पड़े रहना। यह कह ऋषि चले गए और फिर कभी न लौटे। फल यह हुआ कि पर्वत उसी प्रकार पड़ा रह गया। आज भी विज्ञान वेत्ताओं का कहना है कि हिमालय आदि की भाँति यह पर्वत बढ़ नहीं रहा है और शांत पड़ा है।

विचित्रवीर्य—शांतनु और सत्यवती के छोटे पुत्र और चित्रांगद के अनुज। इसका विवाह अंबिका और अंबालिका से हुआ था जो काशिराज की कन्या थीं और भीष्म द्वारा हर कर लाई गई थीं। विचित्रवीर्य क्षय रोग से पीड़ित हो मर गए और उन्हें कोई संतान न थी। सत्यवती के कहने से भीष्म ने व्यास द्वारा नियोग कराकर अंबिका और अंबालिका से धृतराष्ट्र और पांडु की उत्पत्ति कराई।

विजय—विष्णु के जय और विजय दो पार्षद थे। दोनों ने सनकादि ऋषियों को एक बार विष्णु से मिलने से रोका और उनके शाप से इन्हें राक्षस बनना पड़ा। इनकी प्रार्थना पर ऋषि ने फिर यह भी वर दे दिया कि विष्णु से शत्रुता या मित्रता करने पर तुम लोगों की मुक्ति हो जायगी। दे० 'जय'। विजय क्रमशः हिरण्यकशिपु कुंभकर्ण और कंस हुआ और विष्णु के अवतारों के हाथों मारा जाकर मुक्त हुआ।

विडालाच—महिषासुर का एक भयानक सेनापति जिसकी आँखें विडाल की भाँति थीं। यह पाँच सौ अयुत सेना लेकर महिषासुर की ओर से दुर्गा से लड़ने आया और उन्होंने तलवार से इसका सर काट डाला।

विदुर—अंविका और अंवालिका को नियोग कराते देख उनकी एक दासी की भी इच्छा हुई और उसने भी व्यास से नियोग कराया जिससे विदुर की उत्पत्ति हुई थी। ये वड़े सज्जन थे। धृतराष्ट्र के मंत्री होने पर भी ये पांडवों की भलाई चाहते थे। इन्हीं के संकेत के कारण पांडव लाक्षागृह में जलने से वच सके। इन्हें पूर्वजन्म का धर्मराज कहा जाता है। महाभारत युद्ध रोकने की इन्होंने वड़ी कोशिश की पर कोई फल न निकला। प्रसिद्ध 'विदुर-नीति' इन्हीं की लिखी है। युद्धोपरांत ये पांडवों के भी मंत्री हुए थे। वाद में ये वन में चले गए और वहाँ इनका देहांत हुआ।

विदुला—सौवीर की महारानी और संजय की माता। महाराज की मृत्यु के वाद सिंधुराज ने इनके राज्य पर आक्रमण किया। पहले तो संजय वड़ा भयभीत हुआ पर विदुला के उत्साहित करने से इसे जोश आया और युद्ध में सफल रहा। विदुला द्वारा दिया गया 'विदुलोपाख्यान' लड़कों के लिए सुन्दर नीति-ग्रंथ है।

विनता—प्रजापति दक्ष की कन्या और कश्यप की स्त्री। अरुण और गरुड़ इसके ही पुत्र थे। एक वार हार जाने के कारण विनता को अपनी सौत कद्रू की, ५० वर्ष तक गुलामी करनी पड़ी थी; पर गरुड़ ने स्वर्ग से अमृत लाकर अपनी माता को मुक्त किया। दे० 'गरुड़'। भागवत के अनुसार विनता गरुड़ की स्त्री थी।

विभीषण—विश्रवा मुनि का पुत्र और रावण का भाई। दे० 'रावण'। इसका स्वरूप वहुत डरावना था। इसी कारण इसका नाम विभीषण था। अपने भाइयों के साथ इसने भी घोर तप

किया तथा ब्रह्मा से धार्मिक होने का वर माँगा। राक्षसों में होते हुए भी यह राम का भक्त था। इसी ने राम से बतलाया कि रावण के हृदय में अमृत-कुण्ड है और बिना उसे जलाए वह नहीं मारा जा सकता। रावण की मृत्यु के बाद विभीषण ही लंका का राजा हुआ।

विरजा—एक गोपी। गोलोक में एक बार राधा को न पा कृष्ण विरजा के पास चले गए। राधा ने ज्योंही सुना वे उस स्थान पर जा पहुँचीं। कृष्ण तो अंतर्द्धान हो गए पर विरजा ने राधा के भय से नदी का रूप धारण कर लिया। बाद में फिर यह पूर्ववत हो गई।

विराट—मत्स्यदेश के राजा जहाँ पांडव द्रौपदी के साथ अज्ञात वनवास के समय विभिन्न प्रकार के नौकर बनकर रहे थे।

विराट्—भगवान का एक रूप। वामन भगवान जब बलि से तीन पग भूमि माँग चुके और भूमि लेने की बात आई तो उन्होंने अपना ऐसा विराट् रूप धारण किया कि पूरी पृथ्वी केवल दो पग हुई। ऋग्वेद में तथा भगवद्गीता में भी विराट् रूप का बड़ा विराट वर्णन है। पुराणों में विराट् को ब्रह्मा का पुत्र कहा गया है। दे० 'अघासुर' 'कृष्ण'।

विराध—एक राक्षस जिसे दंडकवन में लक्ष्मण ने मारा था। इसके जन्म के विषय में कई प्रकार की बातें मिलती हैं। अधिक प्रसिद्ध कथा निम्न प्रकार से है। एक बार तुंबुरु नाम का गंधर्व रम्भा अप्सरा पर मोहित हो गया और इसी कारण कुबेर के यहाँ देर से पहुँचा। कुबेर ने उसे राक्षस हो जाने का शाप दिया और वह [illegible] नाम के राक्षस के पुत्र के रूप में शतह्रदा के गर्भ से पैदा हुआ। कुबेर ने इसकी प्रार्थना पर शाप के साथ यह भी कहा

कि रामावतार में तुम मुक्त होगे। राक्षस होने के बाद तुंबुरु का नाम विराध पड़ा। दंडकवन में वह सीता को लेकर भागने लगा। राम ने बाण चलाया तो यह और रुष्ट हुआ और राम तथा लक्ष्मण को लेकर भागा। यह देख राम और लक्ष्मण ने उसके दोनों हाथ काट डाले तथा लक्ष्मण ने एक गड्ढा खोद कर उसे उसमें डाल दिया।

विश्वकर्मा—शिल्प-शास्त्र तथा कला के प्रसिद्ध आचार्य और एक देवता। ये आठवें वसु प्रभास के औरस पुत्र थे और लावण्य-मयी या योगसिद्धा के गर्भ से पैदा हुए थे। इनका कार्य देवताओं के लिए भवन या विमान आदि बनाना था। लंका इन्हीं द्वारा बनाई गई थी। विश्वकर्मा अमर कहे जाते हैं। सृष्टि की रचना में इनका भी हाथ था इसी कारण इन्हें प्रजापति भी कहा गया है। एक मत से सूर्य की पत्नी संज्ञा इन्हीं की कन्या थी।

विश्वामित्र—एक प्रसिद्ध ब्रह्मर्षि जो जन्म से आधे क्षत्रिय तथा आधे ब्राह्मण थे पर तप से ब्रह्मा को प्रसन्न कर ब्राह्मणत्व प्राप्त किया। इनके पिता का नाम राजा गाधि था। इनका यथार्थ नाम विश्वरथ था। ब्राह्मणत्व प्राप्त करने पर ये विश्वामित्र कहे गए। राजा गाधि को पहले कोई पुत्र न था। उन्हें सत्यवती नाम की एक कन्या थी जिसका विवाह ऋचीक ऋषि से हुआ था। ऋचीक ने सत्यवती तथा सत्यवती की माता के लिए दो चरु दिए। एक से क्षत्रिय गुण वाला पुत्र होता और दूसरे से ब्राह्मण। सत्यवती की माता अर्थात् गाधि की पत्नी ने ब्राह्मण वाला चरु खा लिया और इसी कारण उनसे विश्वामित्र पैदा हुए।

वसिष्ठ से इन्होंने उनकी नंदिनी गाय माँगी पर उन्होंने नहीं दी। इसपर दोनों में युद्ध हुआ जिसमें विश्वामित्र हार गए। इनके बहुत से लड़के भी उस लड़ाई में काम आए। एक बार वसिष्ठ तथा विश्वा-

मित्र में सत्संग और तपस्या को लेकर विवाद छिड़ा। दोनों निर्णय के लिए शेष भगवान के पास पहुँचे। शेष की आज्ञा से दोनों ने शेष के सिर से पृथ्वी उठाकर एक क्षण अपने ऊपर लेने की कोशिश की। विश्वामित्र हज़ार वर्ष की तपस्या के फल का संकल्प करके भी न उठा सके पर वसिष्ठ ने एक क्षण के सत्संग के फल पर पृथ्वी को धारण कर लिया और इस प्रकार विश्वामित्र हार गए। बाद में एक बार विश्वामित्र ने वसिष्ठ का अपनी स्त्री अरुंधती से विश्वामित्र की प्रशंसा करते सुनी तब से उनकी दुर्भावना दूर हो गई और दोनों मित्र हो गए। त्रिशंकु को विश्वामित्र ने ही सशरीर स्वर्ग भेजना चाहा था। दे० 'त्रिशंकु'। हरिश्चंद्र के सत्य की परीक्षा भी विश्वामित्र ने ही ली थी। दे० 'हरिश्चन्द्र'। विश्वामित्र के वीर्य से मेनका को गर्भ रह गया था जिससे शकुन्तला का जन्म हुआ था। दे० 'शकुंतला'।

विश्वामित्र राम तथा लक्ष्मण को अपने आश्रम में ले गए थे जहां से ये लोग जनकपुर गए।

विष्णु—हिंदुओं के एक प्रधान देवता। ऋग्वेद में विष्णु सूर्य का अर्थ रखते हैं। उसका ही विकसित विचार वामन अवतार में २ या ३ पगों में संसार को नापने का है। ऋग्वेद के बहुत बाद विष्णु प्रधान देवता हुए और इनके १० या २४ अवतार माने जाने लगे। त्रिदेवों में ब्रह्मा और शिव के साथ विष्णु का भी नाम आता है। ये विश्व के पालक हैं। विष्णु की स्त्री का नाम लक्ष्मी है जिनके साथ ये क्षीरसागर में शयन करते हैं। इनकी नाभि से कमल निकला है जिससे ब्रह्मा का जन्म हुआ है। विष्णु के चार हाथों में शंख, चक्र, गदा और पद्म हैं। विष्णु का वाहन गरुड़ है।

भृगु ने ब्रह्मा, विष्णु और महेश की परीक्षा लेकर विष्णु को सबसे बड़ा सिद्ध किया था। (दे० 'भृगु')। भृगु ने इनके वक्ष पर

लात मारी जिसका निशान भृगुरेखा के नाम से प्रसिद्ध है। इन्होंने नारद का गर्व दूर किया था। दे० 'नारद'। गंगा विष्णु के चरण से निकली कही जाती हैं।

विष्णु के चक्र का नाम सुदर्शन (दे० अंबरीष) शङ्ख का नाम पांचजन्य, गदा का नाम कौमोदकी, तलवार का नाम नंदक तथा धनुष का नाम शार्ङ्ग है। उनके एक हाथ में स्यमंतक मणि बँधी है।

विष्णु ही भगवान हैं और ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीन रूप धारण कर वे जगत का निर्माण, परिपालन और संहार करते हैं। दे० 'तुलसी'।

वीरभद्र—शिव का एक गण। दक्ष प्रजापति के यज्ञ में जब यज्ञ कुंड में कूद कर सती ने प्राण त्याग दिया तो शिव ने वीरभद्र को यज्ञ नष्ट करने के लिए अपने मुँह से पैदा किया था।

वीरमणि—एक प्राचीन राजा, जिनकी राजधानी देवपुर थी। राम के अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा इनके पुत्र रुक्मांगद ने पकड़ लिया और दोनों ओर से युद्ध हुआ। वीरमणि की ओर से शिव भी लड़ने आए और उन्होंने शत्रुघ्न को अपने पाश में बाँध लिया। अंत में राम ने आकर शत्रुघ्न तथा घोड़े को छुड़ाया।

वृत्रासुर—एक दानव जो त्वष्टा का पुत्र था। इसी को मारने के लिए इन्द्र को दधीचि ऋषि की हड्डी का वज्र बनाना पड़ा। जब इंद्र ने वृत्रासुर के दोनों हाथ काट डाले तो यह इन्द्र को उनके ऐरावत के साथ निगल गया। इन्द्र इसका पेट फाड़ कर बाहर आए और इसका सर काट कर उसे मार डाला। यह सूखे या अकाल का दानव था। इन्द्र ने इसे मार कर पानी बरसाया था।

वृषभानु—राधा के पिता जो सुरभानु और पद्मावती के पुत्र थे।

इनकी स्त्री का नाम कीर्ति था। पहले ये रावल गाँव में रहते थे पर बाद में कंस के उपद्रव से बरसाने में चले आए।

वेन—उत्तानपाद के कुल में ध्रुव के बहुत बाद एक अंग नाम का राजा हुआ। इन्हें कोई संतान न थी। पुत्रोत्पत्ति यज्ञ करने पर वेन नाम के पुत्र की उत्पत्ति हुई जो माता के प्रभाव से बड़ा अत्याचारी राजा हुआ। इसने अपने राज्य में सारे धर्म-कर्म बन्द करा दिए तथा ईश्वर के स्थान पर अपनी पूजा प्रतिष्ठित की। इस पर क्रुद्ध होकर ब्राह्मणों ने उसे शाप दिया और वह मर गया। वेन को कोई संतान न थी अतः मृत्यु के बाद हाहाकार मचा। ब्राह्मणों ने इसके शव के हाथ को हिलाया तो उससे 'पृथु' नाम के प्रतापी और धार्मिक राजा की उत्पत्ति हुई। दे० 'पृथु'।

व्यास—इन्हें कृष्ण द्वैपायन या वेदव्यास भी कहते हैं। शांतनु की पत्नी सत्यवती ने कुमारावस्था में पराशर मुनि से संभोग किया था जिसके फलस्वरूप व्यास का जन्म हुआ। इनका जन्म अँधेरे में एक द्वीप पर हुआ और ये काले थे अतः ये कृष्ण द्वैपायन कहे गए। वेदों का संग्रह एवं विभाग करने के कारण इन्हें व्यास या वेदव्यास भी कहते हैं। ये बड़े विद्वान तथा ज्ञानी थे। वेदों के

शंखासुर—एक दैत्य जिसने ब्रह्मा के पास से वेद चुरा लिया था और फिर समुद्र में छिप गया था। इसी के लिए भगवान विष्णु को मत्स्य अवतार धारण करना पड़ा था। उन्हीं ने इसे मारकर वेद का उद्धार किया।

शंवर—एक दैत्य जो दिवोदास का शत्रु था। इसे किसी पर्वत से नीचे गिराकर इंद्र ने मार डाला।

शकुंतला—यह विश्वामित्र की औरस पुत्री थी जो मेनका नाम की अप्सरा के गर्भ से उत्पन्न हुई थी। इसके पैदा होते ही मेनका स्वर्ग चली गई और इसे मालिनी नदी के किनारे छोड़ दिया। कण्व ऋषि ने इसे पाला-पोसा और उन्हीं के आश्रम में यह वड़ी हुई। शकुन्तला का गंधर्व विवाह दुष्यंत से हुआ था जिससे इसे भरत नाम का वीर पुत्र पैदा हुआ। दे० 'दुष्यंत'।

शकुनि—सुवलराज का पुत्र, गांधारी का भाई और कौरवों का मामा। यह वड़ा दुष्ट था। इसे दुर्योधन ने अपना मंत्री वना रखा था। पांडवों को इसने वड़ा कष्टित किया और अंततः अपने पुत्र सहित सहदेव के हाथ से मारा गया। कहा जाता है कि किसी का कुछ ऐसा शाप था कि भीम जो भी खायँगे उसका पाखाना शकुनि को होना पड़ेगा। इसके कारण भीम को इसे परेशान करने के वहुत से मौके मिलते थे और वे करते थे। इसी आधार पर हिन्दी में एक लोकोक्ति है—खायँ भीम पाखाना हों शकुनी।

शची—दानवराज पुलोम की पुत्री और इंद्र की स्त्री। इन्हें इन्द्राणी, पुलोमजा तथा माहेंद्री आदि भी कहते हैं। इन्द्र से इन्हें जयंत और जयंती दो संतानें थीं। एक कथा के अनुसार इनकी संतानें एक गौ से उत्पन्न हुई थीं। नहुष ने इन्द्रासन के स्वामी

होने पर इन्हें अपनी पत्नी बनाना चाहा था पर किसी प्रक
बच गईं। दे० 'नहुष', 'इन्द्र'।

शतरूपा—यह संसार की प्रथम स्त्री हैं। इन्हें ब्रह्मा की म
कन्या तथा स्त्री कहा गया है। प्रथम मनु 'स्वायंभुवमनु' की उ
इन्हीं से हुई थी। पर विष्णु पुराण के अनुसार शतरूपा स्वा
मनु की माता न होकर स्त्री थीं। एक अन्य मत के अनुसार
ने अपने शरीर को दो भागों में बाँटा। बँटे भागों में दायाँ तो
और बायाँ शतरूपा हुआ फिर इन्हीं दोनों से सृष्टि चली।
'मनु'।

शतानन्द—राजा जनक के एक पुरोहित। रामादि के
में जनक की ओर से ये ही पुरोहित थे।

शत्रुघ्न—सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न लक्ष्मण के छोटे भ
राम के साथ जैसा प्रेम लक्ष्मण का था भरत के साथ वैस
प्रेम शत्रुघ्न का था। इनकी स्त्री का नाम श्रुतकीर्ति था जो
की बहन थीं। मथुरा के लवणासुर को शत्रुघ्न ही ने मारा
शत्रुघ्न को एक बार शंकर ने अपने पाश में बांध लिया था।
'बाल्मीकि' 'लवणासुर'।

शनि—छाया के गर्भ से सूर्य के औरस पुत्र। अपनी स्त्री
शाप से इनकी दृष्टि क्रूर हो गई थी। गणेश की आँखें इन

शाप दिया। दे० 'परीक्षित'। शमीक ने शाप सुनकर बहुत पश्चात्ताप किया क्योंकि वे ऐसा नहीं चाहते थे।

शर्मिष्ठा—दैत्यराज वृषपर्वा की पुत्री जो दैत्यगुरु शुक्र की कन्या देवयानी की सखी थी। इसे देवयानी की दासी बनकर नहुष के पुत्र राजा ययाति के यहाँ जाना पड़ा था। इसकी प्रार्थना पर ययाति ने इसके साथ संभोग किया जिसके लिए उन्हें शुक्र का शाप सहना पड़ा। दे० 'ययाति' 'देवयानी'।

शल्य—एक महाभारतकालीन कौरव-पक्षीय राजा जो मद्र देश के स्वामी थे। महाभारत के युद्ध में सोलहवें और सत्रहवें दिन ये कर्ण के सारथी बने थे। १८वें दिन कर्ण के मरने पर शल्य सेनापति बनाए गए और उसी दिन युधिष्ठिर के हाथ से इनकी मृत्यु हुई।

शबरी—पंपासर पर मतंग मुनि के आश्रम के पास रहनेवाली एक भीलनी जिसका नाम श्रमणी या श्रमण था। यह भगवद्भक्त थी। मतंग मुनि के मरते समय इसने भी उनके साथ चलने की इच्छा प्रकट की। इस पर मुनि ने उससे कहा कि 'यहाँ भगवान राम आएँगे। उनके दर्शन के बाद आना'। तब से नित्य शबरी उठकर राम के आने का रास्ता साफ करती, उनके लिए फूल चुनती, आसन लगाती और बेर आदि खाते समय जो बहुत मीठा लगता उन्हें खिलाने के लिए रख लेती। अन्त में भगवान राम उसकी कुटी पर पधारे और उसके द्वारा प्रेम से रक्खे गए जूठे बेरों को खाया। इसके बाद शबरी ने राम की अनुमति से उनके सामने ही चिता में प्रवेश किया और स्वर्ग चली गई।

शांतनु—द्वापर के प्रसिद्ध चंद्रवंशी राजा। इनके पिता का नाम प्रतीप था। इनकी पहली स्त्री गंगा थीं जिनसे इन्हें भीष्म पैदा हुए थे। (दे० गंगा) इनका दूसरा विवाह सत्यवती नाम की

दे० 'नारायण', 'महादेव', 'पार्वती', 'दुर्गा'। आग में सती हो जाने के कारण इनका नाम सती है। अगले जन्म में ये पार्वती हुईं।

सत्यवती—एक धीवरकन्या जिसे मत्स्यगंधा भी कहते हैं। यह जब कुमारी थी तो एक द्वीप पर (एक मत से नाव पर) पराशर ने इसके साथ संभोग किया जिससे व्यास की उत्पत्ति हुई थी (दे० व्यास)। बाद में इस पर शांतनु मोहित हुए। सत्यवती के पालक पिता धीवर ने विवाह करना स्वीकार किया पर साथ ही एक शर्त रक्खी कि सिंहासन का स्वामी सत्यवती का ही पुत्र हो। शांतनु की प्रथम स्त्री गंगा से भीष्म नाम का एक पुत्र था। पिता की इच्छा पूर्ण करने के लिए भीष्म ने प्रण कर लिया कि मैं गद्दी पर न बैठूँगा। सत्यवती के पिता ने इस पर कहा कि आप न भी लें तो आपका पुत्र राज्य ले सकता है। इस पर भीष्म ने प्रतिज्ञा की कि मैं विवाह न करूँगा और आजन्म ब्रह्मचारी रहूँगा। अब सत्यवती के पुत्र को किसी भी प्रकार के विरोध की आशंका नहीं थी अतः सत्यवती का विवाह शांतनु से हो गया। कालांतर सत्यवती को शांतनु से दो पुत्र हुए जिनका नाम चित्रांगद और विचित्रवीर्य रक्खा गया। दे० 'मत्स्यगंधा'।

सत्यवान—शाल्व देश के अंधे राजा द्युमत्सेन के पुत्र। इन्हें अपनी पत्नी सावित्री के कारण पुनर्जीवन मिला था। दे० 'सावित्री'।

सदना—एक भक्त जो जाति के कसाई थे। ये पशुओं को स्वयं न मार कर दूसरों के द्वारा मारे गए पशुओं का मांस बेचा करते थे। इनके मांस तौलने के बाटों में संयोग से एक शालिग्राम की बटिया भी थी। एक बार एक साधु ने इसे देखा तो वह बड़ा दुःखी हुआ और इनसे माँग कर अपने पास पूजा करने के लिए ले गया। कहा जाता है कि शालिग्राम ने उस साधु से स्वप्न में कहा कि मैं

सदना के चौंटों में रहना अधिक पसंद करता हूँ मुझे वहीं पहुँचा दो।' साधु ने शालिग्राम की आज्ञा का पालन किया और सदना से पूरी बात सुना उसे वह बटिया लौटा दी। यह घटना सदना को भी प्रभावित किए बिना न रह सकी। वह अपना काम छोड़ कर जगन्नाथजी चला गया और वहीं साधु हो गया।

सनत्कुमार—ब्रह्मा के चार मानस पुत्र सनक, सनंदन, सनातन और सनत्कुमार थे। इनमें सनत्कुमार अधिक प्रसिद्ध हैं। कुछ मतों से इन कुमारों की संख्या ५ थी और ५वें का नाम ऋभु था। कुछ अन्य मतों से संख्या ७ थी। इन सभी कुमारों ने संतानोत्पत्ति करने से इनकार किया और सर्वदा बालक, शुद्ध और निरीह रहे।

समुद्र-मंथन—देवता लोग जब असुरों से परेशान हो गए तो उन्होंने विष्णु से अमरत्व प्रदान करने की प्रार्थना की। विष्णु ने समुद्र-मंथन करने की राय दी और कहा कि समुद्र-मंथन से अमृत निकलेगा जिसके पीने से देव अमर हो सकेंगे। विष्णु के बहकाने से असुर भी अमृत की लालच में आ गए। मंदर पर्वत की मथानी बनी जिसे विष्णु ने कच्छप अवतार धारण कर अपनी पीठ पर रक्खा। वासुकि नाग की रस्सी बनी और देवता तथा दानव समुद्र को मथने लगे। मथने के पूर्व देवों-दानवों ने मिल कर बहुत सी जड़ी-बूटियाँ समुद्र में डाली थीं। मंथन से हलाहल विष, (जिसे शंकर ने पान किया), धन्वंतरि, साठ सहस्र अप्सराएँ (यह मत वाल्मीकि रामायण का है। अन्य मत से रंभा उत्पन्न हुई) अपनी असंख्य दासियों के साथ, वारुणी, (सुरा, इसे देवों ने पान किया, जिससे वे सुर कहलाए), उच्चैःश्रवा घोड़ा (इंद्र को यह दिया गया), कौस्तुभ मणि (यह विष्णु को मिली), अमृत (इसे देवों ने पीया। दैत्यों में केवल राहु (दे० 'राहु'

'केतु' धोखे से थोड़ा अमृत पी सके), ऐरावत हाथी (यह इंद्र को मिला), कल्पवृक्ष (यह भी इंद्र को मिला) कामधेनु (डाउसन ने इसे वसिष्ठ को मिला माना है पर अन्य मतों से वसिष्ठ के पास नंदिनी थी जो कामधेनु की पुत्री थी। भागवत के अनुसार यह गाय ऋषियों को दी गई), चंद्रमा (शंकर को मिला), लक्ष्मी (विष्णु को मिलीं) धनुष तथा शंख (विष्णु को मिले)—ये १४ रत्न निकले।

सम्मन—एक भक्त कवि। इनकी स्त्री का नाम नेकी और पुत्र का नाम सेऊ था। वे दोनों भी भक्त थे। एक बार कबीर फ़रीद (कबीर का एक शिष्य) और कमाल के साथ उनके घर आए। सम्मन के पास उनके सत्कार के लिए कुछ न था। कोई और रास्ता न देख नेकी के कहने से सम्मन और सेऊ चोरी करने गये। सम्मन बाहर खड़ा था और सेऊ सेंध मार कर एक बनिए के घर में घुसा। एक बार तो वह सफलतापूर्वक कुछ अन्न लेकर चला आया पर बाहर आने पर जब सम्मन ने बतलाया कि इतना थोड़ा अन्न पर्याप्त न होगा तो वह पुनः घुसा। दुर्भाग्य से इस बार सेऊ पकड़ लिया गया। सेऊ ने बनियों से प्रार्थना कर अपने पिता से बात करने के लिए अपना सर सेंध से निकाला और अपने पिता से बोला—आप मेरा सर काट लीजिए नहीं तो सबेरे लोग मुझे पहचानेंगे तो घर भर पकड़ा जायगा और इस प्रकार साधुओं की सेवा में बाधा उपस्थित होगी। सम्मन को बात ठीक ज्ञात हुई और उसने अपने पुत्र का सर काट लिया और घर ले आया। पहली बार का मिला अन्न पका कर जब सम्मन और नेकी ने कबीर के आगे रक्खा तो उन्होंने सेऊ के बारे में पूछा। सम्मन और नेकी घटना बताने में हिचकिचाए पर कबीर स्वयं पूरी घटना जान गए और उन्होंने सेऊ का सिर ले उसे फिर जीवित कर दिया।

सरमा—विभीषण की पत्नी। यह भी अपने पति की भाँति

भक्तिपरायण और धार्मिक थी। यह शैलपू नामक गंधर्व की पुत्री थी। सीता जब तक लंका में रहीं, यह उनका बहुत ध्यान रखती थी।

सरमा—देवताओं विशेषतः इंद्र की कुतिया। इसके सार मेयस् नाम के दो पुत्र थे जिनमें प्रत्येक को चार आँखें थीं। ये यम के रखवाले थे।

सरस्वती—१. विद्या या कला की देवी। ये ब्रह्मा की पुत्री थीं पर उन्होंने इनके सौंदर्य पर मुग्ध हो इन्हें अपनी पत्नी बनाया। सरस्वती का वाहन हंस है। इनके हाथ में वीणा रहती है। इनका लक्ष्मी से वैर प्रसिद्ध है। कहते हैं इसी कारण विद्वान प्रायः निर्धन और धनिक विद्या या कला हीन होते हैं।

२. एक नदी जो पहले पंजाब में थी। कुरुक्षेत्र के पास इसकी एक क्षीणधारा अब भी वर्तमान है। वेदों में इस नदी का प्रायः उल्लेख हुआ है। पौराणिक काल के बाद इसके सम्बन्ध में कहा जाने लगा कि भीतर ही भीतर आकर यह नदी गंगा जमुना के संगम पर मिली है। आज भी लोगों का यही विश्वास है और इसी कारण गंगा, जमुना और सरस्वती का साथ नाम लिया जाता है।

सहदेव—महाराज पांडु के सब से छोटे पुत्र। इनकी माता माद्री तथा पिता अश्विनीकुमार थे। द्रौपदी के गर्भ से इन्हें 'श्रुत-सेन' नाम का पुत्र था। ये अपने सौंदर्य तथा पांडित्य के लिए प्रसिद्ध थे। दे० 'माद्री'।

सांब—कृष्ण के एक पुत्र। इनकी माता का नाम जांबवती था। अत्यंत बलिष्ट होने के कारण ये दूसरे बलदेव भी कहे जाते हैं। बलदेव ने ही उन्हें अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा दी थी। इन्हें अपने सौंदर्य का इतना गर्व था कि इन्होंने दुर्वासा का असुन्दर होने के कारण उपहास किया जिससे रुष्ट हो उन्होंने इन्हें कोढ़ी हो जाने का

शाप दिया। इसी बीच इनके सौन्दर्य के कारण कृष्ण की रानियाँ इन पर मोहित हो गईं और इनका वीर्य स्खलित हो गया, जिसके कारण कृष्ण ने भी रुष्ट हो इन्हें कोढ़ी हो जाने का शाप दिया। दोनों शापों के कारण इन्हें कोढ़ी होना पड़ा पर फिर सूर्य की पूजा से ये स्वस्थ हो गए। महाभारत युद्ध में इन्होंने भी भाग लिया था। जादूगरी के आविष्कर्ता ये ही माने जाते हैं और इनके ही नाम पर इसे सांवरी विद्या कहते हैं। एक बार साम्ब ने दुर्योधन की लड़की का हरण किया और कर्णादि द्वारा पकड़े गए। बलदेव ने युद्ध करके इन्हें छुड़ाया था।

सात्यकि—सत्यक का पुत्र एक यदुवंशी वीर। इसने कृष्ण तथा अर्जुन से अस्त्रविद्या सीखी थी। कुरुक्षेत्र युद्ध में यह पांडवों की ओर था। भूरिश्रवा इसी के हाथ से मारा गया।

सावित्री—मद्र देश के राजा अश्वपति की पुत्री और सत्यवान की स्त्री। अश्वपति पहले निःसंतान थे। सावित्री मंत्र का जाप करने से इन्हें एक पुत्री हुई अतः उसका नाम इन्होंने सावित्री रक्खा। जब यह लड़की बड़ी हुई तो राजा को इसके विवाह की चिंता हुई पर उन्हें कोई उचित वर न मिला। अंत में सावित्री ने स्वयं अपना पति खोजने का निश्चय किया और राज्य के मंत्रियों के साथ इस कार्य के लिए जंगल में चली। वहाँ शाल्व देश के अंधे राजा अपनी स्त्री तथा पुत्र सत्यवान के साथ रह रहे थे। शत्रुओं ने उनका राज्य छीन लिया था। सावित्री ने सत्यवान को अपना वर चुना। घर लौट कर उसने अपने पिता से यह बतलाया। दैवयोग से वहाँ नारद भी थे। उन्होंने कहा कि वर यों तो योग्य है पर उसकी आयु अधिक नहीं है। वह आज से ठीक एक वर्ष बाद मर जायगा। इतना सुन कर भी सावित्री अपने निश्चय पर अटल रही और विवाह संपन्न हो गया। धीरे-धीरे वर्ष पूरा हुआ। सत्यवान

और सावित्री दोनों उस दिन जंगल में थे। वहीं सत्यवान का शरीरांत हुआ और यमराज उसका प्राण लेकर चला। सावित्री अप्रतिम पतिव्रता और सती थी। वह भी यमराज के पीछे-पीछे चली और उनके लाख समझाने पर भी न लौटी। अंत में यमराज को हार कर प्राण लौटाना पड़ा और सत्यवान जीवित हो उठा। सावित्री ने अपने स्वसुर द्युमत्सेन को सचक्षु होने का भी वर प्राप्त किया। उसे तथा उसके स्वसुर को सौ सौ पुत्र हुए। यह सब उसके सत्याचरण के कारण हुआ। कहते हैं, जीवन भोग कर सावित्री पति के साथ ही वैकुण्ठ गई। आज इसका नाम पतिव्रता तथा सधवा स्त्री के लिए सामान्य शब्द की भाँति भी प्रयुक्त होता है। इसके नाम पर एक 'सावित्री व्रत' भी है जो सधवा स्त्रियाँ अपने पति को दीर्घ आयुवाला बनाने के लिए जेष्ठ वदी १५ को करती हैं।

सीता—मिथिला के राजा जनक की कन्या। राजा जनक को कोई संतान न थी। उन्होंने संतत्यर्थ यज्ञ के नियमानुसार अपने हाथ से भूमि जोती और जोतते समय हर की कूँड़ में से एक घड़े से सीता का जन्म हुआ। इनके विवाह के लिए जनक ने प्रण किया कि जो एक धनुष विशेष को चढ़ावेगा उसी से सीता का विवाह होगा। इस शर्त को दाशरथि राम पूरा कर सके अतः उनसे सीता का विवाह हुआ। राम के वनवास में सीता भी साथ गईं। वहाँ मारीच को स्वर्णमृग (दे० 'मारीच') बना रावण उन्हें हर ले गया, पर अंत में रावण को मार कर राम ने सीता को प्राप्त किया। सीता ने अग्नि में प्रवेश कर परीक्षा दी जिसमें वे सफल रहीं। अयोध्या आने पर वे गर्भवती हुईं पर इसी बीच एक धोबी द्वारा उनका घर में रख लेना, राम के लिये अनुचित कहा गया और प्रजारंजन राम ने उन्हें घर से निकाल दिया। वन में जाने पर वाल्मीकि ने उन्हें अपने आश्रम में रक्खा जहाँ लव और कुश का

जन्म हुआ। अश्वमेध के अवसर पर वाल्मीकि के कहने से सीता राम के सामने आईं पर वहाँ फिर उन्होंने घोषणा की कि हे माता पृथ्वी यदि मैं आजीवन पतिव्रता रही हूँ तो आप अपने क्रोड़ में मुझे स्थान दें। इतना कहते ही पृथ्वी फट गई और सीता उसमें प्रवेश कर गईं। इस प्रकार सीता पृथ्वी से निकली थीं और फिर वहीं चली गईं।

सुंद—सुंद और उपसुंद दो राक्षस थे। ये निसुंद या निकुंभ के पुत्र थे। बल में ये दोनों विश्व में अद्वितीय थे। इनके संहार के लिए स्वर्ग से तिलोत्तमा अप्सरा भेजी गई जिसके लिए दोनों में युद्ध हुआ और दोनों ने एक दूसरे को मार डाला। दे० 'उपसुंद'

सुग्रीव—ये सूर्य के पुत्र थे। इनके भाई वालि ने इनका राज्य छीन लिया था तथा इनकी स्त्री भी ले ली थी। राम सीता को खोजते मतंग आश्रम में पहुँचे तो वहाँ इनसे तथा इनके प्रधान हनुमान से राम की भेंट हुई। राम ने बालि को मार इनका राज्य वापस किया पर इन्होंने राज्य अपने भतीजे अंगद को दे दिया। सुग्रीव तथा उनकी सेना की सहायता से राम ने रावण को जीता। ये राम के साथ अयोध्या आए और वहीं सरयू के किनारे शरीर छोड़ा। दे० 'वालि'।

सुदामा—कृष्ण के एक ब्राह्मण सखा। दोनों ने सांदीपन गुरु के यहाँ शिक्षा पाई थी। एक बार गुरु की स्त्री द्वारा दिए गए चने को सुदामा ने कृष्ण से छिपा कर खाया था। जब कृष्ण द्वारिका में राज्य कर रहे थे तो सुदामा की दशा बहुत खराब थी। अपनी स्त्री के कहने से वे तीन मुट्ठी साँवा का चावल ले कृष्ण से मिलने गए। वहाँ कृष्ण ने इनका बहुत सत्कार किया तथा वहाँ से लौटने पर इनको धन्यधान्य से संपन्न कर दिया। कृष्ण-सुदामा की मित्रता अब तक प्रसिद्ध है। दे० 'सांदीपन'।

सुनयना—राजा जनक की पत्नी।

सुनीति—उत्तानपाद की बड़ी रानी। ध्रुव का जन्म इन्हीं से

हुआ था। दूसरी रानी सुरुचि के आने पर राजा ने सुनीति की ओर से अपना प्रेम-भाव कम कर लिया जिससे सुनीति को जंगल की शरण लेनी पड़ी। ध्रुव ने इन्हें भी भगवान का दर्शन कराया। कुछ मतों से ध्रुवलोक के भी ऊपर एक लोक है, जहाँ सुनीति का स्थान है।

सुभद्रा—इनके पिता का नाम वसुदेव तथा माता का रोहिणी था। इस प्रकार कृष्ण की ये वैमात्रेय वहिन थीं। कृष्ण की इच्छा से अर्जुन इन्हें हर ले गए और विवाह किया। अभिमन्यु इन्हीं के गर्भ से हुआ था। दे० 'अभिमन्यु'।

सुमंत्र—राजा दशरथ का एक मंत्री।

सुमति—राजा सगर की पत्नी जो पुराणों के अनुसार ६०,००० पुत्रों की माता थीं।

सुमाली—एक राक्षस जो सुकेश का पुत्र था। इसकी कन्या का नाम कैकसी था जिसका विवाह विश्रवा से हुआ था और जिससे रावण, कुंभकर्ण, शूर्पणखा तथा विभीषण पैदा हुए थे।

सुमित्रा—दशरथ की दूसरी रानी जिनसे लक्ष्मण और शत्रुघ्न का जन्म हुआ था।

सुमेरु—एक पौराणिक पर्वत जो सोने का कहा जाता है। इसकी तीन चोटियाँ हैं जिन पर २१ स्वर्ग हैं। देवता लोग यहीं रहते हैं।

सुरभि—कश्यप की स्त्री और दक्ष प्रजापति की कन्या। गाय-भैंस आदि पशुओं की उत्पत्ति इसी से है।

सुरसा—एक राक्षसी जो नागों की माता थी। यह रावण की भी कुछ संबन्धिनी लगती थी और समुद्र में रहती थी। हनुमान जब सीता की खोज में लंका जा रहे थे तो समुद्र के बीच में इसने उन्हें

पुत्र पैदा हुआ। तुरन्त वरुणदेव उसको बलिदान कराने के लिए पहुँचे पर राजा ने कहा कि जन्म के समय बालक अशुद्ध रहता है अतः दस दिन बीत जाने पर आइए। वरुण ने ऐसा ही किया, पर इस बार फिर राजा ने यह कह कर टाल दिया कि बिना दाँतों का पशु पवित्र नहीं होता अतः दाँत निकलने पर आप आवें। दाँत निकलने के बाद राजा ने गर्भ के बाल काटने का बहाना किया, फिर उपनयन का और फिर समावर्तन का। इस बार जब वरुण आए तो उन्होंने कहा कि महाराज! यह रोज़ का टालना अच्छा नहीं है। अब तो आपको बलिदान करना ही होगा। राजा अन्त में तैयार हुए पर राजकुमार इस बात की गंध पाते ही जंगल में भाग गया। वरुण ने जब यह सुना तो राजा को शाप दिया कि 'तुम्हें जलोदर रोग हो जाय'। रोग से पीड़ित होने पर राजा ने वसिष्ठ से इसे दूर करने का उपाय पूछा। वसिष्ठ ने कोई बालक खरीद कर बलिदान करने की राय दी। खोजने पर एक अजीगर्त नाम का लोभी ब्राह्मण अपने मझले पुत्र 'शुनःशेप' को १०० गायों में बेचने को तैयार हो गया। लड़का लाया गया पर बलिदान करने वाला ही भग गया। वह मनुष्य का बलिदान करने को तैयार न था। यह देख उसका बाप अजीगर्त ही धन के लोभ में बलिदान करने को तैयार हो गया। इसी बीच विश्वामित्र ने शुनः-शेप से एक मंत्र का जप करने को कहा। जप करते ही वरुण वहाँ आ गए और उन्होंने प्रसन्न हो शुनःशेप को मुक्त करा दिया। राजा का जलोदर रोग भी ठीक हो गया। 'शुनःशेप' को विश्वामित्र अपना पुत्र बनाकर अपने साथ ले गए। बाद में यह सब सुनकर राजकुमार भी जंगल से लौट आया।

हरिश्चन्द्र के पुत्र का नाम रोहित या रोहिताश्व और रानी का नाम शैव्या था। महाराज अपनी सत्यवादिता एवं प्रणपालिता

के लिए अत्यन्त प्रसिद्ध थे। जब ये इतना धर्मादि कर चुके तो इन्द्र को शङ्का होने लगी कि कहीं इंद्रासन के अधिकारी न बन जायँ अतः इंद्र ने विश्वामित्र को इनकी परीक्षा के लिए भेजा। विश्वामित्र ने इनसे सारी पृथ्वी दान में ली और ऊपर से दक्षिणा माँगने लगे। राजा ने कोई रास्ता न देख अपने को काशी के एक डोम के यहाँ तथा पत्नी और पुत्र को किसी ब्राह्मण के यहाँ बेचकर दक्षिणा चुका दी। डोम के यहाँ राजा को श्मशान घाट पर पहरा देना पड़ता था तथा शव लेकर आने वालों से कर, कफ़न आदि लेना पड़ता था। एक दिन राजकुमार रोहित का साँप काटने के कारण देहान्त हो गया और उसका अंतिम संस्कार करने के लिए उसे लेकर शैव्या उसी घाट पर आई। उसके पास कर देने के लिए पैसे न थे तथा कफ़न के स्थान पर अपनी साड़ी का आँचल फाड़ कर उसने शव को आच्छादित किया था। राजा ने अपनी रानी तथा पुत्र को पहचाना पर कर्तव्य से च्युत न हुए और उसमें से आधा कफ़न फड़वाकर ले लिया। हरिश्चन्द्र की इस कर्तव्य-परायणता पर प्रसन्न हो उसी समय भगवान ने प्रकट होकर बच्चे को जिला दिया तथा उन्हें उनका सारा राज्य-वैभवादि लौटा दिया।

हलाहल—वह प्रचंड विष जो समुद्र-मंथन के समय निकलने वाले १४ रत्नों में से एक था। यह जब निकला तो इसकी गर्मी से सुरासुर सभी व्याकुल हो गए और अन्त में शङ्कर ने इसका पान किया। इसकी गर्मी बर्दाश्त करने की शक्ति देने के लिए शङ्कर को चंद्रमा दिए गए थे। हलाहल के पीने के कारण शङ्कर का कंठ नीला हो गया और वे नीलकंठ कहलाए। शङ्कर जब हलाहल पी रहे थे तो कुछ बूँदें पृथ्वी पर गिरीं और उन्हीं से साँप-बिच्छू आदि ज़हरीले जानवरों ने ज़हर पाया।

हसन—इन्हें इमाम हसन भी कहते हैं। ये अली के बड़े बेटे

की भाँति ज़बान पकड़ (ग्रहण कर) रहे हो अतः 'ग्राह' हो जाओ। इस पर वह बहुत पछताने लगा और उसने ऋषि से क्षमा माँगी। ऋषि ने कहा कि शाप तो व्यर्थ जायगा नहीं, हाँ भगवान तुम्हारा उद्धार कर देंगे। प्रसिद्ध गजग्राह की कथा में यही हूहू 'ग्राह' था। दे० 'गज' तथा 'ग्राह'।

होलिका—हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष की बहिन और प्रह्लाद की बूआ। हिरण्यकशिपु के कहने से यह प्रह्लाद को लेकर चिता में बैठी। यह अग्नि में न जलनेवाली समझी जाती थी। पर भगवान की दया से यह जल गई और भक्त प्रह्लाद का बाल भी बाँका न हुआ।

हौवा—हज़रत आदम की स्त्री। इनका जन्म आदम की बाईं पसली से हुआ था। दे० 'आदम'। इन्हें हिंदुओं की 'शत-रूपा' या 'श्रद्धा' कह सकते हैं।

नमुचि—एक दानव। एक बार नमुचि इंद्र से भयभीत होकर सूर्य की किरणों में छिप गया। इंद्र ने जब प्रण किया कि वे किसी सूखी या भीगी वस्तु से उसे न मारेंगे तब वह उनके सामने आया। इन्द्र ने उसे सामने देख जलफेन (जो न पूर्णतः सूखा है और न पूर्णतः भीगा) से उसका सर काट डाला। यह विश्वासघात देख नमुचि बड़ा रुष्ट हुआ और उसके कटे हुए सर ने इंद्र का पीछा किया। ब्रह्मा के कहने से जब इन्द्र ने विधिवत यज्ञ कर अरुणा नदी में स्नान किया तो उनके प्राण बचे। एक अन्य मत से नमुचि ने इन्द्र को बंदी बना लिया था पर इन्द्र ने जब उपर्युक्त प्रण किया तो उसने इन्हें छोड़ा। शेष कथा उपर्युक्त ही है।

निकुंभ—१ कुंभकर्ण का एक पुत्र जो रावण के मंत्रियों में था। लंका के युद्ध में यह मारा गया।

२. एक राक्षस जिसे ब्रह्मा ने वरदान दिया था कि तुम्हारी

मृत्यु केवल विष्णु के हाथ से होगी। यह वड़ा मायावी था और मनमाना रूप धारण कर सकता था। एक वार कृष्ण के एक मित्र ब्रह्मदत्त की पुत्रियों का इसने हरण कर लिया जिससे रुष्ट हो कृष्ण ने इसे मार डाला। हरिवंश पुराण में इसकी कथा दी गई है।

पुलोम—इन्द्र की स्त्री शची का पिता एक दानव। जव पुलोम ने सुना की उसकी पुत्री शची के साथ इन्द्र ने भोग किया है तो वह वड़ा रुष्ट हुआ और इन्द्र को शाप देने चला। इसी वीच इन्द्र ने उसे मार डाला।

प्रद्युम्न—कृष्ण का एक पुत्र। इसकी माता का नाम रुक्मिणी था। यह पूर्व जन्म का कामदेव था। शिव के शाप से काम भस्म हो गया तो रति की प्रार्थना पर शिव के वर से वह प्रद्युम्न रूप में पैदा हुआ। जन्म के छठे दिन प्रसिद्ध असुर शंवर ने प्रद्युम्न को समुद्र में फेंक दिया। वहाँ उसे एक मछली खा गई। जव वह मछली शंवर के घर लाई गई तो उसका पेट चीर कर प्रद्युम्न निकाला गया। इसके अभूतपूर्व सौंदर्य को देखकर शंवर की पुत्री मायावती इस पर मोहित हो गई और उसका पालन-पोषण करने लगी। मायावती पूर्व जन्म की रति थी। प्रद्युम्न जव वड़ा हुआ तो मायावती ने उससे रति-कामदेव आदि का परिचय देते हुए सारी कथा कह सुनाई। प्रद्युम्न ने कथा सुनकर उसे अपने पत्नी रूप में स्वीकार किया और वैष्णवास्त्र से शंवर को मार डाला। इसके वाद प्रद्युम्न अपनी स्त्री के साथ अपने यथार्थ घर कृष्ण के पास पहुँचा। प्रद्युम्न की माँ अपने पुत्र और पुत्रवधू को देख वहुत प्रसन्न हुई। प्रद्युम्न की दूसरी स्त्री रुक्मिन् की पुत्री ककुद्मती थी जिससे उसे अनिरुद्ध नाम का पुत्र पैदा हुआ था।

प्रद्युम्न की मृत्यु द्वारका में हुई।

वकासुर—एक प्रसिद्ध असुर जो वकुले के आकार का था।

लिए पेड़ पर चढ़ गए। तूफान के कारण कुछ अँधेरा हो गया था। न दिखाई देते देख सुदामा अकेले चना खाने लगे। कृष्ण को उनके खाने की आवाज़ सुनाई पड़ी तो उन्होंने सुदामा से पूछा कि क्या तुम कुछ खा रहे हो। सुदामा ने उत्तर दिया कि मैं कुछ खा नहीं रहा हूँ बल्कि सरदी से दाँत बज रहे हैं। बाद में जब सुदामा को पता चला कि कृष्ण बात जान गए तो वे बहुत शर्मिन्दा हुए।

शिक्षा समाप्त कर आते समय कृष्ण ने सांदीपन को गुरु-दक्षिणा दी थी।

महाकवि देव

भोलानाथ तिवारी, एम० ए०

रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवि के रूप में महाकवि देव का नाम किसी से छिपा नहीं है। इन्हीं देव के सम्बन्ध में हिंदी के एक वयोवृद्ध विद्वान ने यहाँ तक कहा था कि "यदि सूर सूर्य हैं, तुलसी शशि हैं, उडुगण केशव हैं तथा आज के कवि खद्योत हैं, तो देव वह आकाश हैं जिसमें ये सभी चक्कर लगा कर भी पार नहीं पाते।" खैर, इस कथन पर कुछ न कहते हुए भी इतना तो कहा ही जा सकता है कि रसांकन, स्वाभाविकता, चित्रात्मकता तथा अक्षरमैत्री आदि की दृष्टि से देव सचमुच ही हिंदी में अपना अन्यतम स्थान रखते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में देव के सर्वांगीण विवेचन का सफल प्रयास किया गया है। आरम्भ में उनके युग की राजनीति, धर्म, समाज तथा कला का भूमिका रूप में परिचय दिया गया है। फिर अंतर और वहिर्साक्ष्य के आधार पर उनके जीवन पर प्रकाश डाला गया है। तीसरे अध्याय में देव के ग्रंथों की संख्या एवं उनकी प्रामाणिकता आदि पर विचार करते हुए उनका परिचय दिया गया है। अगला अध्याय आचार्य देव से सम्बद्ध है। इसमें संस्कृत तथा हिंदी की रीति-परम्परा का दिग्दर्शन कराते हुए देव के रीति-विवेचन का आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इसी प्रकार 'कवि देव' अध्ययन में देव की कविता का, भाव तथा कला की दृष्टि से सोदाहरण विस्तृत समीक्षा की गई है। अंतिम अध्याय में देव का हिंदी साहित्य में स्थान निर्धारित किया गया है।

इस प्रकार पुस्तक को लेखक ने प्रत्येक दृष्टि से अधिकाधिक पूर्ण बनाने की कोशिश की है।

मूल्य २॥)

किताब महल ● प्रकाशक ● इलाहाबाद

लेखक की अन्य प्रकाशित रचनाएँ

काव्य

धधकती ज्वाला

हे बापू ! हे राष्ट्रपिता !

उपन्यास

नरक के पड़ोस में

ना दूध

आलोचना

।कवि देव

भाषा-शास्त्र

ा-विज्ञान

कोष

दी मुहावरा कोष

बालोपयोगी

ानार और नज़ल